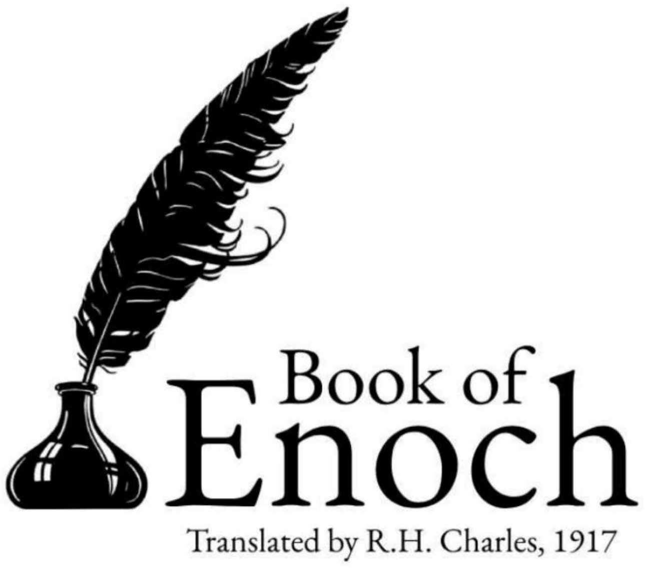

हनोक के किताब

अध्याय 1 के बा

1. हनोक के आशीष के वचन, जवना से उ चुनल आ धर्मी लोग के आशीष दिहले, जे संकट के दिन में जिए वाला होईहे, जब सब दुष्ट आ अभक्त लोग के दूर होखे के होई।
2. ऊ आपन दृष्टांत उठा के कहले--हनोक एगो धर्मी आदमी, जेकर आँख भगवान खोलले रहले, आकाश में पवित्र के दर्शन देखले, जवन स्वर्गदूत हमरा के देखवले रहले, आ ओह लोग से हम सब कुछ सुननी, आ ओह लोग से हम जइसन देखले रहनी, ओइसन समझनी, बाकिर एह पीढ़ी खातिर ना, बलुक एगो दूर के पीढ़ी खातिर जवन आवे वाला बा।
3. चुनल लोग के बारे में हम कहनी आ ओह लोग के बारे में आपन दृष्टांत उठवनी कि पवित्र महान अपना निवास से निकल जइहें।
4. आ अनन्त भगवान धरती पर, सिनाई पहाड़ पर भी, रौंद के अपना डेरा से प्रकट हो जइहें, आ स्वर्ग के आकाश से अपना ताकत के ताकत से प्रकट हो जइहें।
5. आ सब लोग डर से मारल जाई, आ चौकीदार लोग काँप जाई आ बहुते डर आ काँप ओह लोग के धरती के छोर तक पकड़ ली.
6. ऊँच पहाड़ हिल जाई, ऊँच पहाड़ी नीचा हो जाई आ आग के लौ के सामने मोम नियर पिघल जाई।
7. आ धरती पूरा तरह से फाट जाई आ धरती पर जवन कुछ बा ऊ सब नाश हो जाई आ सभ आदमी पर न्याय हो जाई.
8. लेकिन धर्मी लोग के साथे उ शांति बनाई। आ चुनल लोग के रक्षा करी, आ ओह लोग पर दया होई। आ उ सब भगवान के होई, आ उ लोग के समृद्धि होई, आ उ सब के आशीर्वाद मिली। आ ऊ ओह सब के मदद करीहें आ ओह लोग के रोशनी लउकी आ ओह लोग से मेल मिलाप करीहें.
9. आ देखऽ! ऊ अपना दस हजार पवित्र लोग के साथे आवेला, सभका पर न्याय करे खातिर, आ सब अभक्तन के नाश करे खातिर, आ सब शरीर के ओह सब अभक्ति के कामन के दोषी ठहरावे खातिर जवन ऊ लोग अभक्त रूप से कइले बा, आ ओह सब कठिन बातन के बारे में जवन अभक्त पापी लोग उनकरा खिलाफ कहले बा।

अध्याय 2 के बा

1. स्वर्ग में होखे वाला हर बात के पालन करीं, कइसे ऊ आपन कक्षा ना बदले, आ आकाश में जवन प्रकाशमान होखे, कइसे ऊ सब उठ के हर एक के अपना समय में क्रमबद्ध हो जाला, आ अपना निर्धारित क्रम के उल्लंघन मत करीं।
2. धरती के देखऽ, आ ओकरा पर पहिले से आखिर ले होखे वाला चीजन पर ध्यान दीं, कि ऊ केतना अडिग बा, धरती पर कवनो चीज बदलत नइखे, बाकिर परमेश्वर के सब काम तोहनी के सामने लउकत बा।
3. देखऽ गर्मी आ जाड़ा, कइसे पूरा धरती पानी से भरल बा आ ओकरा पर बादल आ ओस आ बरखा पड़ल बा।

अध्याय 3 के बा

देखल जाव आ देखीं कि कइसे जाड़ा में सगरी पेड़ अइसन लागेला जइसे ऊ मुरझा गइल होखसु आ आपन सगरी पतई बहा दिहले होखसु, सिवाय चौदह गो पेड़न के, जवना के पतई ना गँवावेला बाकिर नया आवे तक दू से तीन साल ले पुरान पतई के बरकरार राखेला.

अध्याय 4 के बा

आ फेर गरमी के दिन के पालन करीं कि कइसे सूरज धरती के ऊपर बा। आ रउरा सूरज के गर्मी का चलते छाँव आ आश्रय खोजत बानी आ बढ़त गर्मी से धरती भी जरत बिया आ एही से रउरा धरती पर, भा ओकरा गर्मी का चलते कवनो चट्टान पर ना चल पाईं.

अध्याय 5 के बा

1. देखऽ कि कइसे पेड़ हरियर पतई से ढंक के फल देला, एह से तू लोग उनकर सब काम के बारे में ध्यान दीं आ जानत बाड़ऽ, आ पहचानीं कि ऊ हमेशा खातिर जिए वाला ओकरा के कइसे अइसन बनवले बा।
2. आ उनकर सब काम साल दर साल हमेशा खातिर अइसने चलत रहेला आ ऊ सब काम जवन उनकरा खातिर पूरा करेला आ ओह लोग के काम में कवनो बदलाव ना होला, बाकिर जइसन भगवान तय कइले बाड़न ओइसने कइल जाला.
3. आ देखऽ कि कइसे समुन्दर आ नदी ओही तरह से आपन काम पूरा करेला आ उनकर आज्ञा से ना बदलेला।
4. लेकिन तू लोग अडिग ना रहलू, ना ही प्रभु के आज्ञा के पालन कईले बाड़ू, लेकिन तू लोग पीछे हट गईल बाड़ू अवुरी उनुका महानता के खिलाफ अपना अशुद्ध मुंह से घमंडी अवुरी कठोर बात कहले बानी। अरे कठोर दिल वाला लोग, तोहरा कवनो शांति ना मिली।
5. एह से तू लोग अपना दिन के निंदा करब, आ तोहार जीवन के साल नाश हो जाई, आ तोहार विनाश के साल अनन्त निंदा में गुणा हो जाई, आ तोहरा कवनो दया ना मिली।
. आ सभे के . . . आनन्दित होई, आ पाप के माफी होई, आ हर दया आ शांति आ सहनशीलता होई: उहाँ ओह लोग खातिर

उद्धार होई, एगो अच्छा रोशनी होई। आ तोहनी सब पापी लोग खातिर कवनो उद्धार ना होई, लेकिन तोहनी सब पर अभिशाप बनल रही।
7. बाकिर चुनल लोग खातिर रोशनी आ आनन्द आ शांति होई आ ऊ लोग धरती के उत्तराधिकारी होखी.
8 तब चुनल लोग के बुद्धि दिहल जाई, आ उ सब जिंदा रहीहें आ फेर कबो पाप ना करीहें, चाहे ऊ अभक्ति के कारण होखे भा घमंड के कारण, लेकिन जे बुद्धिमान लोग विनम्र होई।
9 आ ऊ लोग फेर से ना उल्लंघन करी, ना ऊ लोग अपना जिनिगी के दिन पाप करी, ना ऊ लोग दिव्य क्रोध भा क्रोध से मर जाई, बाकिर ऊ लोग अपना जिनिगी के दिन के गिनती पूरा करी. आ ओह लोग के जिनगी शांति से बढ़ी, आ ओह लोग के खुशी के साल बढ़ जाई, अनन्त आनन्द आ शांति में, ओह लोग के जिनिगी के पूरा दिन.

अध्याय 6 के बा

1. जब आदमी के संतान बढ़ल त ओह दिन में ओह लोग खातिर सुन्दर आ सुन्दर बेटी पैदा भइल।
2. आ स्वर्ग के लइका स्वर्गदूत लोग ओह लोग के देख के लालसा कइल आ एक दोसरा से कहल कि आ जा, हमनी के आदमी के संतान में से मेहरारू चुन के हमनी के संतान पैदा कर दीं.
3. आ सेमजाजा जे ओह लोग के नेता रहले, ओह लोग से कहली कि हमरा डर बा कि रउरा सभे एह काम के करे खातिर वाकई सहमत ना होखब आ हमरा अकेले बड़हन पाप के जुर्माना देबे के पड़ी.
4. आ ऊ सब लोग ओकरा के जवाब दिहल आ कहल कि हमनी का सभे किरिया खाईं जा, आ सभे आपसी गारी से अपना के बान्ह लीं कि एह योजना के छोड़े के ना बलुक ई काम करे के.
5. फेर सब केहू एक साथे कसम खइले आ ओकरा पर आपसी निंदा से अपना के बान्ह लिहले.
6. आ उ सब दू सौ में रहले। जे यारेद के जमाना में हरमोन पहाड़ के चोटी पर उतरल रहले आ एकरा के हरमोन पहाड़ कहत रहले, काहे कि ऊ लोग किरिया खइले रहले आ ओकरा पर आपसी गारी से अपना के बान्ह लिहले रहले.
7. आ ई ओह लोग के नेता लोग के नाम ह: सेमिआजाज, ओह लोग के नेता, अरकीबा, रामेल, कोकाबीएल, तामील, रामील, दानेल, एज़ेकेल, बराकीजाल, असाएल, आर्मरोस, बटारेल, अननेल, जकील, समसापेले, सतार, टेलर, जोमजाएल, सरीएल के नाम से जानल जाला।
8. ई लोग दस गो के उनकर मुखिया हवें।

अध्याय 7 के बा

1. बाकी सब लोग ओह लोग के साथे मिल के अपना मेहरारू के ले लिहलस आ हर केहू अपना खातिर एगो मेहरारू चुनलस आ ओह लोग के भीतर जाके ओह लोग के साथे अपना के अशुद्ध करे लागल आ ऊ लोग ओह लोग के आकर्षण आ मंत्रमुग्ध करे के काम आ जड़ काट के सिखवलस आ पौधा से परिचित करा दिहलस।
2. उ लोग गर्भवती हो गईले अवुरी उ लोग बहुत बड़ दिग्गज पैदा कईले, जवना के लंबाई तीन हजार एल्स रहे।
3. जे आदमी के सब अधिग्रहण के भस्म कर दिहलस। आ जब आदमी अब ओह लोग के भरण पोषण ना कर पवलसि त
4. दिग्गज लोग ओह लोग के खिलाफ होके मानव जाति के खा गइल।
5. उ लोग चिरई, जानवर, सरीसृप, मछरी के खिलाफ पाप करे लगले अवुरी एक दूसरा के मांस खाए अवुरी खून पीये लगले।
6. तब धरती बेकायदा लोग पर आरोप लगवलस।

अध्याय 8 के बा

1. आ अज़ाज़ेल आदमी के तलवार, चाकू, ढाल, आ छाती के प्लेट बनावे के सिखवले आ ओह लोग के धरती के धातु आ ओकरा के काम करे के कला, आ कंगन, आ गहना, आ सुरमा के इस्तेमाल, आ पलक के सुंदर बनावे, आ हर तरह के महँग पत्थर आ हर तरह के रंगाई-पोताई के टिंचर के बारे में बतावत रहले.
2. आउर बहुत अभक्ति पैदा हो गइल आ ऊ लोग व्यभिचार कइल आ ऊ लोग भटक गइल आ अपना सब राह में भ्रष्ट हो गइल। सेमजाजा मंत्रमुग्ध, आ जड़-कटना सिखावत रहले, आर्मरोस मंत्रमुग्ध के संकल्प सिखावत रहले, बराकिजाल ज्योतिष सिखावत रहले, कोकाबेल नक्षत्र, एजेकेल बादल के ज्ञान, अरकीएल धरती के चिन्ह, शमसीएल सूरज के चिन्ह आ सरीएल चंद्रमा के मार्ग सिखावत रहले। आ जइसे-जइसे आदमी के नाश भइल, ऊ लोग चिल्लात रहे आ उनकर पुकार स्वर्ग में चढ़ गइल। . .

अध्याय 9 के बा

1. आ फेर माइकल, उरीएल, राफेल आ जिब्राईल स्वर्ग से नीचे देखलन त देखलन कि धरती पर बहुते खून बहल बा आ धरती पर सगरी अराजकता होखत बा.
2. उ लोग एक दूसरा से कहलस कि, 'बिना निवासी के बनल धरती स्वर्ग के दुआर तक उ लोग के चिल्लाहट के आवाज़ चिल्लात बा।'
3. आ अब तोहनी, स्वर्ग के पवित्र लोग खातिर, आदमी के आत्मा आपन सूट बना के कहत बा कि "हमनी के मुद्दा परमात्मा के सोझा ले आवऽ.".'
4. आ ऊ लोग युग-युग के प्रभु से कहलस- 'प्रभु लोग के मालिक, देवता लोग के भगवान, राजा लोग के राजा आ युगों के भगवान, तोहार महिमा के सिंहासन युग-युग तक खड़ा बा, आ तोहार नाम हर युग तक पवित्र आ गौरवशाली आ धन्य बा!
5. तूँ सब कुछ बनवले बाड़ू आ सब कुछ पर अधिकार तोहरा लगे बा, आ तोहरा नजर में सब कुछ नंगा आ खुलल बा, आ तू सब कुछ देखत बाड़ू, आ तोहरा से कुछुओ छिप ना सकेला।
6. तू देखत बाड़ऽ कि अजाज़ेल का कइले बाड़न, जे धरती पर सब अधर्म के सिखवले बाड़न आ स्वर्ग में सुरक्षित अनन्त रहस्यन के उजागर कइले बाड़न, जवना के सीखे खातिर आदमी प्रयासरत रहले।
7. आ सेमजाजा, जेकरा के तू अपना साथियन पर शासन करे के अधिकार देले बाड़ू।
8. ऊ लोग धरती पर आदमी के बेटी लोग के लगे जाके मेहरारू लोग के साथे सुत गइल बा आ अपना के अशुद्ध कर के हर तरह के पाप के प्रगट कइले बा।

9. आ मेहरारू लोग दिग्गज पैदा कइले बाड़ी आ एह से पूरा धरती खून आ अधर्म से भरल बा।
10. अब देखऽ, मरल लोग के आत्मा चिल्लात बा आ स्वर्ग के दुआर पर आपन सूट बनावत बा आ उनकर विलाप चढ़ गइल बा, आ धरती पर कइल गइल बेकायदा काम के चलते ऊ बंद नइखे हो सकत।
11. आ तू सब कुछ के होखे से पहिले जानत बाड़, आ तू ई सब देखत बाड़ऽ आ तू ओकरा के भोगत बाड़ऽ, आ तू हमनी से नइखऽ कहत कि हमनी के एह सब के का करे के बा।'

अध्याय 10 के बा

1. तब परमपवित्र आ महान कहलन आ उरिएल के लमेक के बेटा के लगे भेज के कहलन।
2. नूह के लगे जाके हमरा नाम से कह दीं "अपना के लुका जा!" आ ओकरा के निकट आवे वाला अंत के खुलासा कर दीं कि पूरा धरती के नाश हो जाई आ पूरा धरती पर बाढ़ आवे वाला बा आ ओकरा पर मौजूद सब कुछ के नाश कर दी।
3. आ अब ओकरा के निर्देश दीं कि ऊ बच जाव आ ओकर संतान दुनिया के सगरी पीढ़ियन खातिर सुरक्षित रहो.'
4. आ फेर प्रभु राफेल से कहले, 'अजाज़ेल के हाथ-गोड़ बान्ह के अन्हार में फेंक द, आ रेगिस्तान में एगो खुलल बना के, जवन दुदाएल में बा, आ ओकरा के ओहिजा फेंक दीं।'
5. ओकरा पर खुरदुरा आ दांतेदार चट्टान डाल के ओकरा के अन्हार से ढँक दीं आ ओकरा के हमेशा खातिर ओहिजा रहे दीं आ ओकर चेहरा ढंक दीं जेहसे कि ओकरा रोशनी ना लउके.
6. आ महान न्याय के दिन ओकरा के आग में फेंक दिहल जाई। आ जवना धरती के स्वर्गदूत बिगाड़ दिहले बाड़न ओकरा के ठीक करऽ आ धरती के चंगाई के घोषणा करीं कि ऊ लोग महामारी के ठीक कर सके आ ओह सब गुप्त बातन से मनुष्य के सभ संतान नाश ना हो सके जवन चौकीदार लोग अपना बेटा लोग के खुलासा कइले बा आ सिखवले बा.
8. अजाज़ेल के सिखावल काम के चलते पूरा धरती नाश हो गईल बा।'
9. आ जिब्राईल से प्रभु कहले, 'हरामी आ निंदा करे वाला लोग आ व्यभिचार के लइकन के खिलाफ आगे बढ़ीं, आ व्यभिचार के लइकन आ चौकीदारन के लइकन के आदमी के बीच से नाश कर दीं आ ओह लोग के बाहर निकाल दीं, एक दोसरा के खिलाफ भेजीं कि ऊ लोग एक दोसरा के लड़ाई में नाश कर सके, काहे कि ओह लोग के दिन भर ना होखी.
10. आ कवनो निहोरा जवन ऊ लोग माने कि उनकर बाप रउरा से करीहें, ओह लोग के ओर से ओह लोग के बाप से ना दिहल जाई. काहे कि उ लोग अनन्त जीवन जीए के उम्मीद करेले अवुरी उ लोग में से हरेक के पांच सौ साल जिए के उम्मीद बा।'
11. आ प्रभु माइकल से कहले, 'जा, सेमजाजा आ ओकर साथी लोग के बान्ह द जे मेहरारू लोग के साथे मिल गइल बा ताकि उ लोग के साथे अपना सब अशुद्धता में अशुद्ध हो गइल बा।'
12. जब ओह लोग के बेटा एक दोसरा के हत्या कर दीहें आ अपना प्रियजनन के नाश देखले होखसु त ओह लोग के धरती के घाटी में सत्तर पीढ़ी ले जरा से बान्ह के राखीं जबले कि ओह लोग के न्याय आ ओकर समापन के दिन ना होखे आ जबले ऊ लोग हमेशा खातिर होखे वाला न्याय के समापन ना हो जाव.
13. ओह दिनन में ओह लोग के आग के खाई में ले जाइल जाई आ ओह यातना आ जेल में जवना में ऊ लोग हमेशा खातिर बंद रही.
14. जेकरा के दोषी ठहरावल जाई आ नाश कइल जाई ऊ तब से ओह लोग का साथे हर पीढ़ी के अंत ले बान्हल रही.
15. आ निंदा करे वाला आ चौकीदारन के सब आत्मा के नाश कर दीं, काहे कि ऊ लोग मानव जाति पर अन्याय कइले बा.
. धर्म आ सच्चाई के काम हमेशा खातिर सच्चाई आ आनन्द में रोपल जाई।
17 आ तब सब धर्मी लोग बच जाई आ जबले ऊ लोग हजारन संतान ना पैदा करी तबले जिंदा रही आ जवानी आ बुढ़ापा के पूरा दिन शांति से पूरा हो जाई.
18 तब पूरा धरती धर्म के खेती होई आ सब केहू के पेड़ लगावल जाई आ आशीर्वाद से भरल होई।

.

.

21. आ सब आदमी के संतान धर्मी हो जइहें आ सभे राष्ट्र हमार आराधना करीहें आ हमार स्तुति करीहें आ सभे हमार पूजा करीहें. आ धरती हर अशुद्धि से, पाप से, हर सजा से, आ हर यातना से शुद्ध हो जाई आ हम फेर कबो ओह लोग के ओकरा पर पीढ़ी दर पीढ़ी आ हमेशा खातिर ना भेजब।

अध्याय 11 के बा

1. आ ओह दिनन में हम आशीष के भंडार खोलब जवन स्वर्ग में बा, ताकि ओह लोग के आदमी के संतान के काम आ मेहनत के ऊपर धरती पर उतारल जा सके।
2. आ दुनिया के सब दिन आ आदमी के सब पीढ़ी में सच्चाई आ शांति एक साथ जुड़ल रही।

अध्याय 12 के बा

1. एह सब से पहिले हनोक लुकाइल रहले, आ आदमी के संतान में से केहू के पता ना रहे कि उ कहाँ लुकाइल बाड़े, कहाँ रहत बाड़े अवुरी उनुका का भईल बा।
2. आ उनकर गतिविधि के संबंध चौकीदारन से रहे आ उनकर दिन पवित्र लोग से रहे।
3. आ हम हनोक महिमा के प्रभु आ युगों के राजा के आशीर्वाद देत रहनी आ देखऽ! चौकीदार लोग हमरा के हनोक शास्त्री कह के हमरा से कहलस।
4. 'हनोक, हे धर्म के शास्त्री, जा, स्वर्ग के पहरा देवे वाला लोग के घोषणा कर, जे ऊँच आकाश, पवित्र अनन्त स्थान के छोड़ के मेहरारू लोग से अपना के अशुद्ध कर लेले बा, आ धरती के लइकन के जइसन काम कइले बा आ अपना मेहरारू बना लेले बा: "तू लोग धरती पर बहुत विनाश कइले बाड़ऽ।
5. आ तोहनी के ना त शांति मिली ना पाप के माफी।
6. उ लोग अपना प्रियजन के हत्या के देख के अपना संतान के विनाश के विलाप करीहे अवुरी अनंत काल तक निहोरा करीहे, लेकिन दया अवुरी शांति ना मिली।"'

अध्याय 13 के बा

1. हनोक जाके कहले, 'अजाज़ेल, तोहरा कवनो शांति ना होई, तोहरा के बंद करे खातिर कड़ा सजा सुनावल गईल बा।

.

3. तब हम जाके सभे से बात कईनी, त उ सब डेरा गईले अवुरी डर अवुरी काँप-काँप के शिकार हो गईले।
4. ऊ लोग हमरा से निहोरा कइल कि हम ओह लोग खातिर एगो निहोरा बनाईं जेहसे कि ऊ लोग माफी पा सके आ स्वर्ग के प्रभु के सामने आपन निहोरा पढ़ीं.
5. काहे कि तब से उ लोग उनुका से बात ना कर पवले अवुरी ना ही अपना पाप के शर्म के चलते स्वर्ग के ओर आँख उठा सकत रहले, जवना के चलते उ लोग के दोषी ठहरावल गईल रहे।
6. तब हम ओह लोग के याचिका, आ ओह लोग के आत्मा आ ओह लोग के काम के संबंध में व्यक्तिगत रूप से आ ओह लोग के निहोरा के संबंध में प्रार्थना लिखनी कि ओह लोग के माफी आ दिन के लंबाई होखे.
7. हम जाके हरमोन के पश्चिम के दक्खिन में दान के देश में दान के पानी के किनारे बईठ गईनी।

.

.

.

अध्याय 14 के बा

1. धर्म के वचन के किताब, आ ओह दर्शन में पवित्र महान के आज्ञा के अनुसार अनन्त चौकीदारन के डांट के।
2. हम नींद में देखनी कि हम अब मांस के जीभ आ मुँह के साँस से का कहब, जवना के महान आदमी आदमी के देले बाड़न कि ऊ लोग ओकरा से बातचीत कर सके आ दिल से समझ सके।
3. जइसे उ आदमी के बुद्धि के वचन के समझे के शक्ति बनवले बाड़े अवुरी देले बाड़े, ओसही उ हमरा के भी बनवले बाड़े अवुरी हमरा के स्वर्ग के संतान पहरा देवे वाला के डांट के शक्ति देले बाड़े।

.

5. आ अब से तू अनंत काल तक स्वर्ग में ना चढ़बऽ आ धरती के बंधन में तोहरा के दुनिया के पूरा दिन खातिर बान्हे के फरमान निकलल बा।
6. आ कि पहिले रउरा अपना प्रिय बेटान के विनाश देखले होखब आ ओह लोग में रउरा कवनो खुशी ना होखी बाकिर ऊ लोग रउरा सोझा तलवार से गिर जाई.

.

.

9. जबले हम एगो देवाल के नजदीक ना पहुँचनी जवन स्फटिक से बनल बा आ ओकरा चारो ओर आग के जीभ से घेरल रहे।
10. हम आग के जीभ में जाके एगो बड़हन घर के नजदीक आ गइनी जवन स्फटिक से बनल रहे आ घर के देवाल स्फटिक से बनल टेसल वाला फर्श नियर रहे आ ओकर जमीन स्फटिक के रहे।
11. एकर छत तारा आ बिजली के रास्ता निहन रहे अवुरी ओकरा बीच में आग के करुब रहे अवुरी उनुकर आकाश पानी निहन साफ रहे।
12. देवालन के चारो ओर एगो ज्वालामुखी आग लागल रहे आ ओकर द्वार आग से धधकत रहे।

.

14. आ जइसे हम काँपत आ काँपत रहनी, हम मुँह पर गिर गइनी।
15. आ हम एगो दर्शन देखनी, आ देखऽ! दूसरा घर रहे, जवन पहिले से बड़ रहे, आ पूरा पोर्टल हमरा सामने खुलल खड़ा रहे, आ उ आग के लपट से बनल रहे।
16. आ हर मामिला में ई वैभव आ भव्यता आ विस्तार में अतना बेहतरीन रहे कि एकर वैभव आ विस्तार के हम रउरा सभे के ना बता सकीलें.
17. ओकर फर्श आग के रहे आ ओकरा ऊपर बिजली आ तारा के रास्ता रहे आ ओकर छत भी ज्वालामुखी आग रहे।
18. हम देखनी त ओकरा में एगो ऊँच सिंहासन देखनी जवना के रूप स्फटिक निहन रहे अवुरी ओकर पहिया चमकत सूरज निहन रहे अवुरी उहाँ करुब के दर्शन भईल।
19. आ सिंहासन के नीचे से ज्वालामुखी आग के धारा निकलल जवना से हम ओकरा के ना देख पवनी।
20. बड़का महिमा ओकरा पर बइठल रहे आ ओकर कपड़ा सूरज से भी तेज चमकत रहे आ कवनो बर्फ से भी उज्जर रहे।
21. भव्यता आ महिमा के कारण कवनो स्वर्गदूत प्रवेश ना कर सकल आ उनकर चेहरा ना देख पवलस आ कवनो मांस उनका के ना देख पावल।
22. ज्वालामुखी आग उनका चारो ओर रहे आ उनका सामने एगो बड़हन आग खड़ा रहे आ आसपास के केहू उनका लगे ना आ पावल, दस हजार गुना दस हजार लोग उनका सामने खड़ा रहे, तबो उनका कवनो सलाहकार के जरूरत ना रहे।
23. आ उनकर नजदीक के परम पवित्र लोग रात में ना निकलल आ ना ही उनकरा से हट गइल।
24. तब तक हम काँपत मुँह पर सजदा कइले रहनी आ प्रभु हमरा के अपना मुँह से बोलवले आ हमरा से कहले कि, हनोक, इहाँ आ जा, आ हमार वचन सुनऽ।
25. पवित्र लोग में से एगो हमरा लगे आके हमरा के जगवलस, आ उ हमरा के उठ के दुआर के नजदीक ले अइले, आ हम आपन मुँह नीचे झुका दिहनी।

अध्याय 15 के बा

1. उ जवाब देके हमरा से कहले, त हम उनुकर आवाज़ सुननी कि, 'हनोक, हे धर्मी आदमी अवुरी धर्म के शास्त्री, मत डेरा, इहाँ जाके हमार आवाज़ सुन।'
2. आ जाके स्वर्ग के चौकीदारन से कहऽ, जे तोहरा के ओह लोग खातिर बिनती करे खातिर भेजले बा कि, "तू लोग के बिनती करे के चाहीं" आ आदमी खातिर ना।
3. काहे ऊँच, पवित्र आ अनन्त स्वर्ग के छोड़ के मेहरारूवन के साथे लेट गइल बाड़ऽ, आ आदमी के बेटी के साथे अपना के अशुद्ध क के अपना मेहरारू बना लिहले बानी, आ धरती के लइकन जइसन काम कइले बानी, आ अपना बेटा के रूप में दिग्गजन के जनम देले बानी?
4. भले ही तू पवित्र, आध्यात्मिक, अनन्त जीवन जीयत रहलू, लेकिन मेहरारू के खून से अपना के अशुद्ध क लेले बानी, आ मांस के खून से संतान पैदा कईले बानी, आ आदमी के संतान

निहन मांस-मजाई के लालसा कईले बानी, जईसे मर जाए वाला अवुरी नाश होखे वाला लोग के काम करेले।
5. एह से हम ओह लोग के मेहरारू भी देले बानी कि ऊ लोग ओह लोग के गर्भवती कर सके आ ओह लोग से संतान पैदा कर सके, ताकि धरती पर ओह लोग के कवनो कमी ना होखे।
6. बाकिर तू पहिले आध्यात्मिक रहलू, अनन्त जीवन जीयत रहलू आ दुनिया के हर पीढ़ी खातिर अमर रहलू।
7. आ एही से हम तोहनी खातिर मेहरारू नइखीं बनवले। काहे कि स्वर्ग के आध्यात्मिक लोग के त स्वर्ग में उनकर निवास बा।
8. आ अब, आत्मा आ मांस से पैदा भइल दिग्गजन के धरती पर बुरा आत्मा कहल जाई आ धरती पर ओह लोग के निवास होखी.
9. ओह लोग के देह से बुरा आत्मा निकलल बा; काहे कि ई लोग आदमी से पैदा भइल बा आ पवित्र चौकीदारन से एकर शुरुआत आ आदिम उत्पत्ति ह; ऊ लोग धरती पर दुष्टात्मा होखी आ दुष्टात्मा कहल जाई.
10. रहल बात स्वर्ग के आत्मा के त स्वर्ग में ओकर निवास होई, लेकिन धरती के आत्मा जवन धरती प पैदा भईल रहे, त धरती प उनुकर निवास होई।
. आ ई आत्मा आदमी आ मेहरारू के संतान के खिलाफ उठ जाई, काहे कि उ लोग ओह लोग से निकलल बा।

अध्याय 16 के बा

1. दिग्गजन के वध आ विनाश आ मौत के दिन से, जिनकर मांस के आत्मा से आत्मा निकल के बिना न्याय के नाश कर दीहें--एह तरह से ऊ लोग समापन के दिन तक नाश करी, जवना महान न्याय में युग के समापन होई, चौकीदारन पर आ अभक्तन पर, हँ, पूरा तरह से समाप्त हो जाई।
2. आ अब ओह चौकीदारन के बारे में जे तोहरा के ओह लोग खातिर बिनती करे खातिर भेजले बा, जे पहिले से स्वर्ग में रहलन, त ओह लोग से कहऽ।
.
4. एह से ओह लोग से कह दीं कि "तोहरा लगे कवनो शांति नइखे।"

अध्याय 17 के बा

1. आ ऊ लोग हमरा के एगो अइसन जगह पर ले गइल जहाँ जे लोग रहे ऊ लोग ज्वालामुखी आग नियर रहे आ जब मन कइल त आदमी के रूप में लउकत रहे।
2. आ ऊ लोग हमरा के अन्हार के जगह पर ले गइल आ एगो पहाड़ पर जवना के चोटी के नोक स्वर्ग तक पहुँचल।
.
4. ऊ लोग हमरा के जिंदा पानी आ पश्चिम के आग में ले गइल जवन हर डूबला पर सूरज के अस्त होखे.
5. आ हम एगो आग के नदी पर पहुँचनी जवना में आग पानी नियर बह के पश्चिम के ओर बड़हन समुंदर में बहत रहेला।
6. हम बड़का नदी के देखनी आ बड़का नदी आ बड़का अन्हार में आके ओह जगह पर चल गइनी जहाँ कवनो मांस ना चले।
7. जाड़ा के अन्हार के पहाड़ आ ऊ जगह देखनी जहाँ से गहिराह के सब पानी बहत रहेला।
8. धरती के सब नदी के मुँह आ गहिराह के मुँह देखनी।

अध्याय 18 के बा

1. हम सब हवा के खजाना देखनी, हम देखनी कि कइसे उ ओकरा से पूरा सृष्टि आ धरती के मजबूत नींव के सुसज्जित कईले बाड़े।
2. हम धरती के कोना के पत्थर देखनी, हम चार हवा देखनी जवन धरती आ आकाश के आकाश के सहन करेला।
3. हम देखनी कि कइसे हवा आकाश के तिजोरी के खिंचाव करेला आ आकाश आ धरती के बीच आपन ठहराव राखेला, ई आकाश के खंभा ह।
4. हम आकाश के हवा देखनी जवन घूम के सूरज आ सब तारा के परिधि के अपना डूबत ले आवेले।
5. हम धरती पर हवा के बादल के लेके देखनी, हम स्वर्गदूतन के रास्ता देखनी। धरती के छोर पर ऊपर के आकाश के आकाश देखनी।
6. हम आगे बढ़नी आ एगो अइसन जगह देखनी जवन दिन रात जरत रहेला, जहाँ सात गो भव्य पत्थर के पहाड़ बा, तीन गो पूरब ओर आ तीन गो दक्खिन ओर।
7. रहल बात पूरब के ओर के लोग के त एगो रंगीन पत्थर के रहे, एगो मोती के रहे, आ एगो जेसिंट के रहे, आ दक्षिण के ओर के लोग लाल पत्थर के रहे।
8. लेकिन बीच वाला भगवान के सिंहासन निहन स्वर्ग तक पहुंचल, जवन कि अलबास्टर के रहे अवुरी सिंहासन के चोटी नीलम के रहे।
9. आ हम एगो ज्वालामुखी आग देखनी। आ एह पहाड़न के परे एगो क्षेत्र बा जवन महान धरती के अंत बा, उहाँ आकाश पूरा हो गइल।
.
.
12. हम ओहिजा सात गो तारा देखनी जवन बड़हन जरत पहाड़ नियर देखनी आ जब हम ओह लोग के बारे में पूछनी त हमरा से।
13. स्वर्गदूत कहले कि इ जगह आकाश अवुरी धरती के अंत ह, इ तारा अवुरी आकाश के सेना के जेल बन गईल बा।
14. आ आग पर लुढ़कत तारा ऊ हवें जे अपना उदय के शुरुआत में प्रभु के आज्ञा के उल्लंघन कइले बाड़न, काहे कि ऊ अपना निर्धारित समय पर ना निकलल रहले.
15. ऊ ओह लोग पर गुस्सा में आ गइलन आ ओह लोग के तबले बान्ह दिहलन जबले ओह लोग के अपराध दस हजार साल ले पूरा ना हो गइल.'

अध्याय 19 के बा

1. आ उरीएल हमरा से कहले: 'इहाँ ऊ स्वर्गदूत खड़ा हो जइहें जे मेहरारू लोग से अपना के जोड़ले बाड़े, आ ओह लोग के आत्मा कई तरह के रूप धारण करत मनुष्य जाति के अशुद्ध कर रहल बा आ ओह लोग के देवता के रूप में राक्षसन के बलिदान करे में भटकावे के काम करीहें, इहाँ ऊ लोग खड़ा रहीहें, जबले कि ऊ लोग ओह महान न्याय के दिन तक ना होखे जवना में ओह लोग के न्याय तब तक ना कइल जाई जबले ओह लोग के अंत ना हो जाई.'
2. आ भटकल स्वर्गदूतन के मेहरारू भी सायरन बन जइहें।'

3. हम हनोक अकेले दर्शन, सब चीज के अंत देखनी, आ हम जइसन देखले बानी, ओइसन केहू ना देख पाई।

अध्याय 20 के बा

1. आ ई पवित्र स्वर्गदूतन के नाम ह जे देखत रहेला।
2. उरीएल, पवित्र स्वर्गदूतन में से एगो, जे दुनिया के ऊपर आ टार्टरस के ऊपर बा।
3. राफेल, पवित्र स्वर्गदूतन में से एगो, जे आदमी के आत्मा पर काम करेला।
4. रगुएल, पवित्र स्वर्गदूतन में से एगो जे प्रकाशमान लोग के दुनिया से बदला लेवेला।
5. माइकल, पवित्र स्वर्गदूतन में से एगो, मतलब कि ऊ जे मानव जाति के सबसे बढ़िया हिस्सा आ अराजकता पर सेट बा।
6. सराकाएल, पवित्र स्वर्गदूतन में से एगो, जे आत्मा के ऊपर बइठल बा, जे आत्मा में पाप करेला।
7. जिब्राईल, पवित्र स्वर्गदूतन में से एगो, जे जन्नत आ साँप आ करूब के ऊपर बा।
8. रेमीएल, पवित्र स्वर्गदूतन में से एगो, जेकरा के भगवान उठल लोग पर रखले बाड़न।

अध्याय 21 के बा

1. आ हम ओहिजा आगे बढ़ गइनी जहाँ हालात अराजक रहे।
2. आ हम ओहिजा कुछ भयानक देखनी: ना त ऊपर आकाश देखनी ना कवनो मजबूत नींव वाला धरती, बलुक एगो अराजक आ भयानक जगह देखनी।
3. आ उहाँ हम देखनी कि आकाश के सात तारा ओकरा में एक दोसरा से बान्हल बा, जइसे कि बड़हन पहाड़ नियर आ आग से जरत बा।
4. तब हम कहनी कि कवन पाप खातिर बान्हल बाड़े आ कवना कारण से इहाँ डालल गइल बाड़े?
5. तब उरीएल, पवित्र स्वर्गदूतन में से एगो, जे हमरा साथे रहले, आ ओह लोग के प्रमुख रहले, कहले, 'हनोक, तू काहे पूछत बाड़ू, आ तू सच्चाई खातिर काहे बेचैन बाड़ू?
.
.
8. तब हम कहनी: 'उ जगह केतना भयावह बा आ देखला में केतना भयानक बा!'
9. तब उरीएल हमरा साथे मौजूद पवित्र स्वर्गदूतन में से एगो हमरा से जवाब दिहलन आ हमरा से कहलन कि हनोक, तोहरा अतना डर आ डर काहे लागल बा? आ हम जवाब देनी: 'एह भयावह जगह के चलते, अवुरी दर्द के तमाशा के चलते।'
10. आ ऊ हमरा से कहले, 'ई जगह स्वर्गदूतन के जेल ह, आ इहाँ ऊ लोग हमेशा खातिर जेल में बंद रही।'

अध्याय 22 के बा

1. आ ओहिजा से हम दोसरा जगहा चल गइनी आ ऊ हमरा के पश्चिम में एगो अउरी बड़हन आ ऊँच पहाड़ आ कठोर चट्टान के देखा दिहलन.
2. आ ओकरा में चार गो खोखला जगह रहे, गहिराह आ चौड़ा आ बहुते चिकना। खोखला जगह केतना चिकना बा आ देखे में गहिराह आ अन्हार बा।
3. तब राफेल हमरा साथे रहल पवित्र स्वर्गदूतन में से एगो जवाब दिहलन आ हमरा से कहलस।
4.'ई खोखला जगह ठीक एही उद्देश्य से बनावल गइल बा कि मुअल लोग के आत्मा के आत्मा ओहमें इकट्ठा होखे, हँ कि मनुष्य के संतान के सभ आत्मा इहाँ इकट्ठा होखे। आ एह जगहन के ओह लोग के न्याय के दिन तक आ निर्धारित समय तक ओह लोग के ग्रहण करे खातिर बनावल गइल बा जबले कि ओह लोग पर बड़हन न्याय ना आ जाव.'
5. हम मरल आदमी के संतान के आत्मा देखनी आ ओह लोग के आवाज स्वर्ग में जाके सूट कइलस।
6. तब हम हमरा साथे रहल स्वर्गदूत राफेल से पूछनी त हम ओकरा से कहनी कि ई आत्मा केकर ह जेकर आवाज निकल के सूट करेला?
.
8. तब हम एकरा बारे में पूछनी, आ सब खोखला जगहन के बारे में पूछनी कि जइसे एक दोसरा से अलगा हो गइल?'
9. ऊ हमरा के जवाब दिहलन आ हमरा से कहलन कि ई तीनों एह खातिर बनावल गइल बा कि मुअल लोग के आत्मा अलग हो सके. आ अइसन बँटवारा धर्मी लोग के आत्मा खातिर कइल गइल बा, जवना में पानी के चमकदार झरना नियर बा।
10. आ अइसन पापी लोग खातिर तब बनावल गइल बा जब ऊ लोग मर जाला आ धरती पर दफना दिहल जाला आ ओह लोग पर ओह लोग के जिनिगी में न्याय ना भइल.
. उहाँ उ ओह लोग के हमेशा खातिर बान्ह दिहे।
12. आ अइसन बंटवारा ओह लोग के आत्मा खातिर कइल गइल बा जे आपन मुकदमा बनावेला, जे अपना विनाश के बारे में खुलासा करेला, जब ऊ लोग पापी लोग के जमाना में मारल गइल रहे।
13. अइसन आदमी के आत्मा खातिर बनावल गइल बा जे धर्मी ना रहले बलुक पापी रहले, जे अपराध में पूरा रहले आ अपराधी लोग के आत्मा खातिर। उ लोग साथी होईहे, लेकिन न्याय के दिन उ लोग के आत्मा ना मारल जाई अवुरी ना उहाँ से जिंदा होईहे।
14. तब हम महिमा के प्रभु के आशीष देनी आ कहनी कि, 'हमार प्रभु, धर्म के प्रभु, जे हमेशा खातिर राज करेले, के धन्य होखे।'

अध्याय 23 के बा

1. उहाँ से हम धरती के छोर के पच्छिम में एगो अउरी जगह पर चल गइनी।
2. आ हम एगो जरत आग देखनी जवन बिना आराम कइले दौड़त रहे आ दिन-रात अपना रास्ता से ना रुकल रहे बलुक नियमित रूप से चलत रहे।
3. आ हम पूछनी कि ई का ह जवन आराम नइखे करत?
4. तब हमरा साथे मौजूद पवित्र स्वर्गदूतन में से एगो रगुएल हमरा से जवाब दिहलन आ कहलन कि तू जवन आग के रास्ता देखले बाड़ ऊ पश्चिम के आग ह जवन स्वर्ग के सभ ज्योतिषियन के सतावेला।

अध्याय 24 के बा

1. आ ओहिजा से हम धरती के दोसरा जगहा पर चल गइनी आ ऊ हमरा के आग के एगो पहाड़ी श्रृंखला देखवले जवन दिन रात जरत रहे।
2. हम ओकरा से आगे बढ़नी त सात गो भव्य पहाड़ देखनी जवन एक दोसरा से अलग रहे आ ओकर पत्थर शानदार आ सुन्दर, समग्र रूप से भव्य, गौरवशाली रूप आ गोरा बाहरी रहे: तीन गो पूरब के ओर, एगो के नींव दोसरा पर, आ तीन गो दक्खिन ओर, एक दोसरा पर, आ गहिराह खुरदुरा खाई, जवना में से कवनो दोसरा से ना जुड़ल रहे.
3. सातवाँ पहाड़ एह लोग के बीच में रहे आ ऊ ओह लोग के ऊँचाई से बढ़िया रहे, जवन सिंहासन के आसन से मिलत जुलत रहे आ सुगंधित पेड़ सिंहासन के घेरले रहे।

.
5. तब हम कहनी कि ई पेड़ केतना सुन्दर बा, आ सुगंधित बा, आ एकर पत्ता गोरा बा, आ एकर फूल देखाई देवे में बहुत रमणीय बा।'
6. तब माइकल, पवित्र आ सम्मानित स्वर्गदूतन में से एगो, जे हमरा साथे रहले आ ओह लोग के नेता रहले, जवाब दिहलन।

अध्याय 25 के बा

1. आ ऊ हमरा से कहले, 'हनोक, तू हमरा से पेड़ के सुगंध के बारे में काहे पूछत बाड़ आ काहे सच्चाई सीखल चाहत बाड़?'
2. तब हम ओकरा के जवाब दिहनी कि, 'हम हर बात के बारे में जानल चाहत बानी, लेकिन खास तौर प ए पेड़ के बारे में।'
3. आ ऊ जवाब दिहलन कि, 'ई ऊँच पहाड़ जवन तू देखले बाड़, जवना के चोटी भगवान के सिंहासन निहन बा, उ उनुकर सिंहासन ह, जहवां पवित्र महान, महिमा के प्रभु, अनन्त राजा, बईठ जईहे, जब उ भलाई के संगे धरती के दौरा करे खाती उतरिहे।'
. तब एकरा के धर्मी आ पवित्र लोग के दिहल जाई।
5. एकर फल चुनल लोग के भोजन खातिर होई, एकरा के पवित्र स्थान में, अनन्त राजा प्रभु के मंदिर में रोपल जाई।
6 तब उ लोग खुशी से खुश होईहे अवुरी खुश होईहे, अवुरी पवित्र स्थान में प्रवेश करीहे। आ ओकर सुगंध ओह लोग के हड्डी में रही, आ ऊ लोग धरती पर लमहर उमिर जियत रही, जइसे तोहार बाप-दादा जियत रहले, आ ओह लोग के जमाना में कवनो दुख भा विपत्ति भा यातना भा विपत्ति ओह लोग के ना छूई.'
7. तब हम महिमा के भगवान, अनन्त राजा के आशीष दिहनी, जे धर्मी लोग खातिर अइसन चीज तइयार कइले बाड़न आ ओह लोग के रचले बाड़न आ ओह लोग के देबे के वादा कइले बाड़न.

अध्याय 26 के बा

1. हम ओहिजा से धरती के बीचोबीच चल गइनी त एगो धन्य जगह देखनी जवना में पेड़ रहे जवना के डाढ़ रहे आ एगो टूटल-फूटल पेड़ के खिलल रहे।
2. आ उहाँ हम एगो पवित्र पहाड़ देखनी आ पूरब के पहाड़ के नीचे एगो धारा रहे आ उ दक्खिन के ओर बहत रहे।
3. हम पूरब के ओर एकरा से ऊँच एगो अउरी पहाड़ देखनी आ ओह लोग के बीच में एगो गहिराह आ संकरी खाई देखनी, जवना में पहाड़ के नीचे एगो धारा भी बहत रहे।
4. ओकरा पच्छिम में एगो अउरी पहाड़ रहे जवन पहिले से नीचे आ छोट ऊँचाई के रहे आ ओह लोग के बीच गहिराह आ सूखल खाई रहे आ तीनों पहाड़ के छोर पर एगो अउरी गहिराह आ सूखल खाई रहे।
5. आ सब खाई गहिराह आ संकरी रहे, जवन कड़ा चट्टान से बनल रहे आ ओह पर पेड़ ना लगावल गइल रहे।
6. हम चट्टान पर अचरज में पड़ गइनी आ खाई पर अचरज में पड़ गइनी, हँ, हम बहुते अचरज में पड़ गइनी।

अध्याय 27 के बा

1. तब हम कहनी: 'ई धन्य भूमि, जवन पूरा तरह से पेड़ से भरल बा, आ बीच में ई अभिशप्त घाटी कवना उद्देश्य खातिर बा?'
2. तब हमरा साथे मौजूद पवित्र स्वर्गदूतन में से एगो उरीएल जवाब दिहलन आ कहलन कि ई अभिशप्त घाटी ओह लोग खातिर बा जे हमेशा खातिर अभिशप्त बाड़े: इहाँ ऊ सब अभिशप्त लोग एकट्ठा हो जइहें जे अपना होठ से प्रभु के खिलाफ अयोग्य बात कहत बाड़े आ उनकर महिमा के बारे में कड़ा बात कहत बाड़े। इहाँ उ लोग एकट्ठा हो जईहे अवुरी इहाँ उनुकर न्याय के जगह होई।
3. अंतिम समय में ओह लोग पर हमेशा खातिर धर्मी लोग के सामने धर्मी न्याय के तमाशा होई, इहाँ दयालु लोग महिमा के प्रभु, अनन्त राजा के आशीर्वाद करी।
4. पहिला के न्याय के दिन में उ लोग उनुका के ओह दया खातिर आशीर्वाद दिहे, जवना के मुताबिक उ उनुका के आपन भाग्य देले बाड़े।'
5. तब हम महिमा के प्रभु के आशीष दिहनी आ उनकर महिमा के सामने रखनी आ उनकर महिमा से प्रशंसा कइनी।

अध्याय 28 के बा

1. आ उहाँ से हम पूरब के ओर, रेगिस्तान के पहाड़ श्रृंखला के बीच में गईनी, त एगो जंगल देखनी आ उ एकांत रहे, जवन पेड़-पौधा से भरल रहे।
2. आ ऊपर से पानी निकलल।
3. प्रचुर मात्रा में जलप्रवाह नियर भागत जवन उत्तर-पश्चिम के ओर बहत रहे ओकरा चलते हर तरफ बादल आ ओस चढ़त रहे।

अध्याय 29 के बा

1. आ उहाँ से हम रेगिस्तान के एगो अउरी जगह पर चल गइनी आ एह पहाड़ी श्रृंखला के पूरब के ओर नजदीक आ गइनी।
2. आ उहाँ हम देखनी कि सुगंधित पेड़ लोबान आ गंधक के सुगंध के साँस छोड़त रहे आ पेड़ भी बादाम के पेड़ से मिलत जुलत रहे।

अध्याय 30 के बा

1. आ एह सब से आगे हम पूरब के ओर दूर चल गइनी त एगो अउरी जगह देखनी, पानी से भरल घाटी।
2. आ ओहमें एगो पेड़ रहे, जवन मस्तक जइसन सुगंधित पेड़न के रंग के रहे।
3. आ ओह घाटी के किनारे सुगंधित दालचीनी देखनी। आ एह सब से परे हम पूरब के ओर बढ़नी।

अध्याय 31 के बा

1. हम अउरी पहाड़ देखनी आ ओहमें से पेड़न के बगइचा रहे आ ओहमें से अमृत बहत रहे जवना के नाम सारारा आ गलबनम ह.
2. आ एह पहाड़न के आगे हम धरती के छोर के पूरब में एगो अउरी पहाड़ देखनी, जवना पर मुसब्बर के पेड़ रहे आ सब पेड़ बादाम के पेड़ निहन स्टेक्ट से भरल रहे।
3. आ जब केहू एकरा के जरा दिहलस त कवनो सुगंध से भी मीठ गंध आवत रहे।

अध्याय 32 के बा

1. आ एह सुगंधित गंध के बाद जब हम पहाड़न के ऊपर उत्तर के ओर देखनी त सात गो पहाड़ देखनी जवन चुनिंदा नार्ड आ सुगंधित पेड़ आ दालचीनी आ काली मिर्च से भरल रहे।
2. आ उहाँ से हम एह सब पहाड़न के चोटी के पार से, धरती के पूरब के ओर बहुत दूर, इरिथ्रिया समुंदर के ऊपर से गुजरनी आ ओकरा से दूर चल गइनी आ ज़ोटिएल स्वर्गदूत के पार से गुजरनी।

.

4. ऊ पेड़ देवदार नियर ऊँच बा आ ओकर पत्ता कैरोब के पेड़ नियर बा आ ओकर फल बेल के गुच्छा नियर बा, बहुत सुन्दर बा आ पेड़ के सुगंध दूर तक घुस जाला।
5. तब हम कहनी: 'पेड़ केतना सुन्दर बा, आ ओकर रूप केतना आकर्षक बा!'

.

अध्याय 33 के बा

1. उहाँ से हम धरती के छोर पर जाके उहाँ बड़हन-बड़हन जानवर देखनी आ हर एक दोसरा से अलग-अलग रहे। आ हम देखनी कि चिरई-चुरुंग के भी रूप-रंग आ सुंदरता आ आवाज में अंतर रहे, एगो दोसरा से अलग रहे।
2. आ ओह जानवरन के पूरब में हम धरती के छोर देखनी जवना पर आकाश टिकल बा आ आकाश के दरवाजा खुलल बा।
3. आ हम देखनी कि कइसे स्वर्ग के तारा निकलेला, आ हम ओह द्वार के गिनती कइनी जवना से ऊ निकलेला, आ हर अलग-अलग तारा के आपन सब आउटलेट लिखनी, ओह लोग के संख्या आ नाम, ओह लोग के रास्ता आ ओह लोग के स्थिति, आ ओह लोग के समय आ महीना के हिसाब से, जइसे कि हमरा साथे मौजूद पवित्र स्वर्गदूत उरीएल हमरा के देखवले रहले.
4. उ हमरा के सब कुछ देखवले अवुरी हमरा खाती लिखले, उ हमरा खाती उनुकर नाम अवुरी नियम अवुरी दल लिखले।

अध्याय 34 के बा

1. आ ओहिजा से हम उत्तर के ओर धरती के छोर तक चल गइनी आ उहाँ पूरा धरती के छोर पर एगो बड़हन आ गौरवशाली यंत्र देखनी।

.

3. आ एक दरवाजा से उ लोग भलाई खातिर उड़ावेले, लेकिन जब उ लोग बाकी दुगो द्वार से उड़ावेले त उ धरती प हिंसा अवुरी दुख के संगे उड़ावेले अवुरी उ लोग जोर से उड़ावेले।

अध्याय 35 के बा

1. आ ओहिजा से हम पश्चिम के ओर धरती के छोर तक गईनी आ देखनी कि उहाँ आकाश के तीन गो दरवाजा खुलल बा जईसे हम पूरब में देखले रहनी, ओतने संख्या में द्वार अवुरी ओतने संख्या में निकास।

अध्याय 36 के बा

1. उहाँ से हम दक्खिन ओर धरती के छोर तक गईनी त उहाँ से आकाश के तीन खुलल द्वार देखनी, आ उहाँ से ओस, बरखा आ हवा आवेला।
2. आ ओहिजा से हम पूरब के ओर स्वर्ग के छोर तक गईनी आ इहाँ स्वर्ग के तीनों पूरब के द्वार खुलल अवुरी ओकरा ऊपर छोट-छोट द्वार देखनी।
3. एह छोट-छोट पोर्टल में से हर एक से स्वर्ग के तारा गुजरत बाड़े आ ओह रास्ता पर पश्चिम के ओर आपन रास्ता चलावत बाड़े जवन ओह लोग के देखावल गइल बा.

.

अध्याय 37 के बा

1. दूसरा दर्शन जवन उ देखले रहले, बुद्धि के दर्शन--जवन महलालेल के बेटा यारेद के बेटा हनोक, कैनान के बेटा, एनोस के बेटा, आदम के बेटा सेत के बेटा, देखले रहले।
2. आ ई बुद्धि के शब्दन के शुरुआत ह जवन हम धरती पर रहे वाला लोग से बोले आ कहे खातिर आपन आवाज उठवले बानी: हे पुरान समय के लोग सुनीं आ देखऽ, हे बाद में आवे वाला लोग, पवित्र के बात जवन हम आत्मा के प्रभु के सामने बोलब।
3. बेहतर रहे कि खाली पुरान समय के आदमी के ही एकर घोषणा कईल जाए, लेकिन ओकरा बाद आवे वाला लोग से भी हमनी के बुद्धि के शुरुआत के ना रोकब जा।
4. आज तक अइसन बुद्धि आत्मा के प्रभु के ओर से कबो ना दिहल गईल जवन हमरा अपना अंतर्दृष्टि के अनुसार, आत्मा के प्रभु के सद्भावना के अनुसार मिलल बा, जेकरा द्वारा हमरा के अनन्त जीवन के भाग्य मिलल बा।
5. हमरा के तीन गो दृष्टांत दिहल गइल आ हम आपन आवाज उठा के धरती पर रहे वाला लोग के सुनवनी।

अध्याय 38 के बा

1. पहिला दृष्टांत के बारे में बतावल गइल बा। जब धर्मी लोग के मंडली प्रकट होई, आ पापी लोग के पाप के न्याय होई, आ धरती से भगा दिहल जाई।
2. आ जब धर्मात्मा धर्मी लोग के आँख के सामने प्रकट होई, जेकर चुनल काम आत्मा के प्रभु पर लटकल होई, आ धरती पर रहे वाला धर्मी आ चुनल लोग के प्रकाश प्रकट होई, त पापी लोग के निवास कहाँ होई, आ आत्मा के प्रभु के नकारल लोग के विश्राम स्थल कहाँ होई? अगर पैदा ना भइल रहित त ओह लोग खातिर बढ़िया रहित.
3. जब धर्मी लोग के रहस्य खुल जाई आ पापी लोग के न्याय होई, आ अभक्त लोग के धर्मी आ चुनल लोग के सामने से भगा दिहल जाई।
4. ओह घरी से धरती के मालिक अब ताकतवर आ ऊँच ना होखीहें आ ऊ पवित्र के चेहरा ना देख पइहें काहे कि आत्मा के प्रभु पवित्र, धर्मी आ चुनल लोग के चेहरा पर आपन रोशनी देखा दिहले बाड़न.
5. तब राजा आ पराक्रमी लोग नाश हो जाई आ धर्मी आ पवित्र लोग के हाथ में दिहल जाई।
6. आ तब से केहू अपना खातिर आत्मा के प्रभु से दया ना खोजी काहे कि ओकर जीवन खतम हो गइल बा.

अध्याय 39 के बा

1. आ ओह दिन में अइसन होई कि चुनल आ पवित्र लइका ऊँच आकाश से उतरिहें आ उनकर संतान आदमी के संतान के साथे एक हो जइहें।
2. ओह घरी हनोक के जोश आ क्रोध के किताब आ बेचैनी आ निष्कासन के किताब मिलल। आ ओह लोग पर दया ना कइल जाई, आत्मा के प्रभु कहत बाड़न।
3. आ ओह दिनन में एगो बवंडर हमरा के धरती से लेके चल गइल आ हमरा के आकाश के छोर पर बइठा दिहलस।
4. आ उहाँ हम एगो अउरी दर्शन देखनी, पवित्र लोग के निवास स्थान आ धर्मी लोग के विश्राम स्थल।
5. इहाँ हमार आँख उनकर धर्मी स्वर्गदूतन के साथे उनकर निवास देखलस, आ पवित्र लोग के साथे उनकर विश्राम स्थल देखलस। आ ऊ लोग मनुष्य के संतान खातिर निहोरा कइल आ बिनती कइल आ प्रार्थना कइल आ ओह लोग का सोझा धर्म पानी नियर बहल आ धरती पर ओस नियर दया, एह तरह से ओह लोग का बीच हमेशा से हमेशा खातिर बा.
6क के बा। उहे जगह पर हमार आँख धर्म आ विश्वास के चुनल आदमी के देखलस।
7क के बा। आ आत्मा के प्रभु के पाँख के नीचे उनकर निवास स्थल देखनी।
6ख के बा। आ ओकरा जमाना में धार्मिकता हावी होई, आ धर्मी आ चुनल लोग ओकरा सोझा हमेशा से अनगिनत रही.
7ख के बा। आ उनकरा सामने सभे धर्मी आ चुनल लोग आग के रोशनी नियर मजबूत होई, आ उनकर मुँह आशीष से भरल होई, आ उनकर होठ आत्मा के प्रभु के नाम के बड़ाई करी, आ उनकर सामने धार्मिकता कबो ना खतम ना होई, आ उनकर सोझा सीधापन कबो ना खतम होई।
8. हम उहाँ रहे के चाहत रहनी, आ हमार आत्मा ओह निवास स्थल खातिर तरसत रहे, आ अब तक उहाँ हमार हिस्सा रहल बा, काहे कि आत्मा के प्रभु के सामने हमरा बारे में अईसन स्थापित भईल बा।
9. ओह घरी हम आशीष आ स्तुति के साथे आत्मा के प्रभु के नाम के स्तुति आ बड़ाई करत रहनी, काहे कि उ हमरा के आत्मा के प्रभु के सद्भावना के अनुसार आशीर्वाद आ महिमा के किस्मत में रखले बाड़े।
१०.
11. आ ओकरा सामने कवनो रुकावट नइखे। ऊ दुनिया के रचना होखे से पहिले जानत बाड़न कि हमेशा खातिर का बा आ पीढ़ी दर पीढ़ी का रही.
12. सुतल लोग तोहरा के आशीर्वाद ना देला, तोहार महिमा के सामने खड़ा होके आशीष देला, स्तुति करेला आ बड़ाई करेला कि "पवित्र, पवित्र, पवित्र, आत्मा के प्रभु हउवें: उ धरती के आत्मा से भर देले।"'
13. आ इहाँ हमार आँख ओह सब लोग के देखलस जे नींद ना आवेला, ऊ लोग ओकरा सोझा खड़ा होके आशीर्वाद देत बा आ कहत बा कि तू धन्य होखऽ आ प्रभु के नाम हमेशा खातिर धन्य होखे।'
14. आ हमार चेहरा बदल गइल। काहे कि अब हम देख ना पवनी।

अध्याय 40 के बा

1. आ ओकरा बाद हम हजारन हजार आ दस हजार गुना दस हजार देखनी, हम एगो संख्या आ हिसाब से बेसी भीड़ देखनी जवन आत्मा के प्रभु के सामने खड़ा रहे।
2. आ आत्मा के प्रभु के चारो ओर हम चार गो उपस्थिति देखनी जवन ना सुतल लोग से अलग रहे आ हम ओकर नाम सीखनी काहे कि हमरा साथे गइल स्वर्गदूत हमरा के ओह लोग के नाम बतावत रहे आ हमरा के सब छिपल चीज देखवले रहे।
3. आ हम ओह चार गो उपस्थिति के आवाज सुननी जब ऊ लोग महिमा के प्रभु के सामने स्तुति करत रहे।
4. पहिला आवाज आत्मा के प्रभु के हमेशा खातिर आशीर्वाद देला।
5. आ दूसरा आवाज हम चुनल आदमी आ आत्मा के प्रभु पर लटकल चुनल लोग के आशीर्वाद देत सुननी।
6. आ तीसरा आवाज हम सुननी कि धरती पर रहे वाला लोग खातिर प्रार्थना आ बिनती करत बानी आ आत्मा के प्रभु के नाम से विनती करत बा।
7. चउथा आवाज सुननी जवन शैतान के भगावत रहे आ धरती पर रहे वाला लोग पर आरोप लगावे खातिर आत्मा के प्रभु के सामने आवे से मना करत रहे।
8. एकरा बाद हम ओह शांति के दूत से पूछनी जे हमरा साथे गइल रहे, जे हमरा के ऊ सब कुछ देखवले रहे जवन हम छिपल बा, ऊ के ह जवन हम देखले बानी आ जेकर बात सुनले बानी आ लिखले बानी?
9. ऊ हमरा से कहले, 'ई पहिला माइकल हउवें, दयालु आ धैर्यवान, आ दूसरा, जे मनुष्य के संतान के सब बेमारी आ घाव पर बइठल बाड़न, ऊ राफेल हउवें, आ तीसरा, जे सब शक्तियन पर बइठल बाड़न, जिब्राईल हउवें आ चउथा, जे अनन्त जीवन के

विरासत पावे वाला लोग के आशा खातिर पश्चाताप पर बइठल बाड़न, उनकर नाम फनुएल बा।' आ ई आत्मा के प्रभु के चार गो स्वर्गदूत हवें आ चार गो आवाज हम ओह दिनन में सुनले रहनी।

अध्याय 41 के बा

1. आ ओकरा बाद हम आकाश के सब रहस्य देखनी आ कइसे राज्य के बँटवारा बा आ कइसे आदमी के काम के तराजू में तौलल जाला।
2. हम उहाँ चुनल लोग के हवेली आ पवित्र लोग के हवेली देखनी आ हमार आँख देखनी कि उहाँ से ओह सब पापी लोग के भगा दिहल जात बा जे आत्मा के प्रभु के नाम से इनकार करत बा आ घसीटल गइल बा, आ आत्मा के प्रभु से निकले वाला सजा के चलते ऊ लोग ना रह पवलस।

.

4. आ उहाँ हम बंद कमरा देखनी जवना से हवा बंटल बा, ओला आ हवा के कोठरी, धुंध आ बादल के कोठरी आ ओकर बादल दुनिया के शुरुआत से धरती पर मंडरा रहल बा।

.

6. आ पहिले सूरज निकल के आत्मा के प्रभु के आज्ञा के अनुसार आपन रास्ता पार करेला आ उनकर नाम हमेशा खातिर पराक्रमी बा।
7. आ ओकरा बाद हम चंद्रमा के छिपल आ लउके वाला रास्ता देखनी आ ऊ दिन आ रात में ओह जगह पर आपन रास्ता पूरा कर लेत बाड़ी--जे आत्मा के प्रभु के सामने दोसरा के विपरीत स्थिति में बा। आ ऊ लोग धन्यवाद आ तारीफ करेला आ आराम ना करेला; काहे कि उनकर धन्यवाद के विश्राम उनकरा खातिर बा।

.

9. काहे कि कवनो स्वर्गदूत बाधा ना करेला आ कवनो शक्ति बाधा ना डाल पावेला; काहे कि ऊ ओह सब खातिर एगो न्यायाधीश नियुक्त करेला आ ऊ अपना सामने ओह सब के न्याय करेला.

अध्याय 42 के बा

1. बुद्धि के कवनो जगह ना मिलल जहाँ ऊ रह सके; तब स्वर्ग में उनुका के एगो निवास-स्थान सौंपल गइल।
2. बुद्धि आदमी के संतान के बीच में रहे खातिर निकलल, आ कवनो आवास ना मिलल, बुद्धि अपना जगह पर वापस आ गईल, आ स्वर्गदूतन के बीच आपन बईठ गईल।
3. आ ओकरा कोठरी से अधर्म निकलल, जेकरा के ऊ ना खोजली, ओकरा के मिलल, आ ओह लोग के साथे रह गइल, जइसे रेगिस्तान में बरखा आ प्यासल देश पर ओस।

अध्याय 43 के बा

1. हम अउरी बिजली आ आकाश के तारा देखनी आ देखनी कि कइसे उ सबके नाम से बोलवले आ उ लोग उनकर बात सुनले।

.

3. आ हम ओह परी से पूछनी जे हमरा साथे गइल रहे जे हमरा के जवन छिपल रहे ओकरा के देखावत रहे: 'ई का हवें?'

.अध्याय 44 के बा

साथ ही एगो अउरी घटना जवन हम बिजली के संबंध में देखनी: कइसे कुछ तारा उठ के बिजली बन जालें आ अपना नया रूप से अलग ना हो सके लें।

अध्याय 45 के बा

1. आ ई दूसरा दृष्टांत ह जवन ओह लोग के बारे में बा जे पवित्र लोग के निवास आ आत्मा के प्रभु के नाम से इनकार करेला।

.

3. ओह दिन हमार चुनल लोग महिमा के सिंहासन पर बइठ जाई आ ओह लोग के काम के परीक्षण करी आ ओह लोग के विश्राम के जगह असंख्य होखी. आ ओह लोग के आत्मा जब हमार चुनल लोग के देख के, आ जे लोग हमार गौरवशाली नाम के पुकारले बा, त ओह लोग के भीतर मजबूत हो जाई।
4. तब हम अपना चुनल आदमी के ओह लोग के बीच में बसावे के काम करब। आ हम स्वर्ग के रूपांतरित क के ओकरा के शाश्वत आशीर्वाद आ प्रकाश बना देब।
5. आ हम धरती के बदल देब आ ओकरा के आशीर्वाद बना देब, आ हम अपना चुनल लोग के ओकरा पर बसावे के काम करब, बाकिर पापी आ दुष्ट लोग ओकरा पर गोड़ ना राखी.

.

अध्याय 46 के बा

1. आ उहाँ हम एगो अइसन आदमी के देखनी जेकर माथा दिन के रहे, आ ओकर माथा ऊन नियर सफेद रहे, आ ओकरा साथे एगो अउरी जीव रहे जेकर चेहरा आदमी के रूप रहे, आ ओकर चेहरा कृपा से भरल रहे, जइसे कि पवित्र स्वर्गदूतन में से कवनो एक रहे।
2. हम ओह स्वर्गदूत से पूछनी जे हमरा साथे गइल रहले आ हमरा के ओह आदमी के बेटा के बारे में सब छिपल बात देखवले रहले, ऊ के ह आ कहाँ से आइल रहले आ ऊ दिन के सिर के साथे काहे गइल रहले? ऊ जवाब दिहलन आ हमरा से कहलन कि ई आदमी के बेटा ह जेकरा लगे धर्म बा, जेकरा साथे धर्म निवास करेला, आ जवन छिपल बा ओकर सब खजाना प्रकट करेला।
3. काहे कि आत्मा के प्रभु ओकरा के चुनले बाड़े, आ जेकर भाग्य आत्मा के प्रभु के सामने हमेशा खातिर सीधापन में प्रमुख बा।

.

5. आ ऊ राजा लोग के ओह लोग के सिंहासन आ राज्य से उतार दीहें काहे कि ऊ लोग उनकर बड़ाई आ प्रशंसा ना करेला आ ना ही विनम्रता से स्वीकार करेला कि राज्य ओह लोग के कहाँ से दिहल गइल बा.
6. ऊ बलवान के चेहरा नीचे कर दी आ ओह लोग के लाज से भर दी. आ अन्हार उनकर निवास होई, आ कीड़ा उनकर बिछौना होई, आ ओह लोग के बिछौना से उठला के कवनो उम्मीद ना होई, काहे कि ऊ लोग आत्मा के प्रभु के नाम के बड़ाई ना करेला।
7. आ ई ऊ लोग हवे जे आकाश के तारा के न्याय करेला आ परमात्मा के खिलाफ हाथ उठावेला आ धरती पर रौंद के ओकरा

पर रहेला। आ उनकर सब कर्म अधर्म के प्रकट करेला, आ उनकर शक्ति उनकर धन पर टिकल बा, आ उनकर विश्वास ओह देवता लोग पर बा जवन ऊ लोग अपना हाथ से बनवले बा, आ ऊ लोग आत्मा के प्रभु के नाम से इनकार करेला।
8. आ ऊ लोग उनकर मंडली के घरन के सतावेला, आ आत्मा के प्रभु के नाम पर लटकल विश्वासियन के सतावेला।

अध्याय 47 के बा

1. आ ओह दिनन में धर्मी लोग के प्रार्थना आ आत्मा के प्रभु के सामने धरती से धर्मी लोग के खून चढ़ गइल होई।
2. In those days the holy ones who dwell above in the heavens shall unite with one voice and supplicate and pray and praise, And give thanks and bless the name of the Lord of Spirits, On behalf of the blood of the righteous which has been shed, And that the prayer of the righteous may not be in vain before the Lord of Spirits, That judgement may be done unto them, And that they may not have हमेशा खातिर दुख उठावे के।
3. ओह दिन में हम दिन के सिर के देखनी जब ऊ अपना महिमा के सिंहासन पर बइठल रहले, आ जिंदा लोग के किताब उनका सामने खुलल, आ उनकर सब सेना जवन ऊपर स्वर्ग में बा आ उनकर सलाहकार उनकरा सामने खड़ा रहले।
4. पवित्र लोग के दिल खुशी से भरल रहे। काहे कि धर्मी लोग के संख्या चढ़ावल गइल रहे, आ धर्मी लोग के प्रार्थना सुनल गइल रहे, आ आत्मा के प्रभु के सामने धर्मी लोग के खून मांगल गइल रहे।

अध्याय 48 के बा

1. आ ओहिजा हम धार्मिकता के फव्वारा देखनी जवन अक्षय रहे, आ ओकरा चारो ओर बुद्धि के कई गो फव्वारा रहे। आ सब प्यासल लोग ओह लोग के पी के बुद्धि से भरल रहे आ उनकर निवास धर्मी आ पवित्र आ चुनल लोग के साथे रहे।
2. आ ओही घड़ी आदमी के बेटा के नाम आत्मा के प्रभु के सामने रखल गईल, आ ओकर नाम दिन के सिर के सामने रखल गईल।
3. हँ, सूरज आ चिन्हन के रचना होखे से पहिले, आकाश के तारा बने से पहिले, आत्मा के प्रभु के सामने उनकर नाम राखल गइल रहे।
4. ऊ धर्मी लोग खातिर एगो लाठी होखी जवना पर ऊ खुदे रह सकेलें आ ना गिर सकेलें आ ऊ गैर-यहूदी लोग के रोशनी होखीहें आ दिल से परेशान लोग के आशा होखीहें.
5. धरती पर रहे वाला सब लोग गिर के ओकरा सामने आराधना करी, आ आत्मा के प्रभु के स्तुति आ आशीर्वाद आ गीत से उत्सव मनाई।
6. आ एही कारण से ऊ चुनल गइल बा आ ओकरा सामने लुकाइल बा, दुनिया के रचना से पहिले आ हमेशा खातिर।
7. आ आत्मा के प्रभु के बुद्धि पवित्र आ धर्मी लोग के सामने ओकरा के प्रगट कर दिहले बा। काहे कि ऊ धर्मी लोग के भाग्य के रक्षा कइले बा, काहे कि ऊ लोग एह अधर्म के दुनिया से नफरत आ तिरस्कार कइले बा, आ आत्मा के प्रभु के नाम पर एकर सब काम आ रास्ता से नफरत कइले बा, काहे कि उनुका नाम से ऊ लोग उद्धार मिलल बा, आ ओकरा सद्भाव के अनुसार ई ओह लोग के जीवन के संबंध में भइल बा।
8. एह दिनन में धरती के राजा उदास हो जइहें आ बलवान जे अपना हाथ के काम के चलते देश के मालिक हो जइहें। काहे कि अपना दुख आ कष्ट के दिन उ लोग अपना के बचावे में सक्षम ना होईहे।
9. हम ओह लोग के अपना चुनल लोग के हाथ में सौंप देब, जइसे आग में भूसा ओइसहीं पवित्र लोग के सामने जरे जईहें, जइसे पानी में सीसा डूब जाई, आ ओह लोग के कवनो निशान अब ना मिली।
10. आ ओह लोग के दुख के दिन धरती पर आराम होई आ ओह लोग के सामने गिर जाई आ ना उठी आ केहू ना होई जे ओह लोग के हाथ से पकड़ के उठावे काहे कि ऊ लोग आत्मा के प्रभु आ उनकर अभिषिक्त के नकार दिहले बा. आत्माओं के प्रभु के नाम आशीर्वादित होखे।

अध्याय 49 के बा

एल के बा। काहेकि बुद्धि पानी निहन बहावल जाला अवुरी ओकरा सोझा महिमा हमेशा खाती ना खतम होखेला।
2. काहे कि ऊ धर्म के सब रहस्य में पराक्रमी बा, आ अधर्म परछाई नियर गायब हो जाई आ ओकर कवनो निरंतरता ना होखी; काहे कि चुनल आदमी आत्मा के प्रभु के सामने खड़ा बा, आ ओकर महिमा हमेशा खातिर बा, आ ओकर ताकत हर पीढ़ी तक बा।
3. आ ओकरा में बुद्धि के आत्मा, आ अंतर्दृष्टि देवे वाला आत्मा, आ समझ आ पराक्रम के आत्मा, आ धार्मिकता में सुतल लोग के आत्मा निवास करेला।
4. ऊ गुप्त बातन के न्याय करी आ ओकरा सोझा केहू झूठ के बात ना बोल पाई. काहे कि उ आत्मा के प्रभु के सामने चुनल आदमी हवे, जवन कि उनुका पसंद के मुताबिक बा।

अध्याय 50 के बा

1. आ ओह दिनन में पवित्र आ चुनल लोग खातिर बदलाव होखी आ दिनन के रोशनी ओह लोग पर बनल रही आ महिमा आ सम्मान पवित्र लोग के ओर मुड़ जाई.
2. जवना कष्ट के दिन पापी लोग के खिलाफ बुराई के खजाना राखल जाई। आ धर्मी लोग आत्मा के प्रभु के नाम पर विजयी होई: आ ऊ बाकी लोग के एकर गवाह बना दीहें ताकि ऊ लोग पश्चाताप कर सके आ अपना हाथ के काम के त्याग कर सके।
3. आत्मा के प्रभु के नाम से उनकर कवनो इज्जत ना होई, फिर भी उनकरा नाम से उ लोग के उद्धार होई, आ आत्मा के प्रभु उनकरा पर दया करीहे, काहे कि उनकर करुणा बहुत बा।
4. आ ऊ अपना न्याय में भी धर्मी हवें, आ उनकर महिमा के सान्निध्य में अधर्म भी अपना के ना कायम राखी, उनकर न्याय पर अपश्चाताप करे वाला लोग उनकरा सामने नाश हो जाई।
5. आ अब से हम ओह लोग पर कवनो दया ना करब, आत्मा के प्रभु कहत बाड़न।

अध्याय 51 के बा

1. आ ओह दिनन में धरती भी ऊ वापस कर दी जवन ओकरा के सौंपल गइल बा, आ सीओल भी जवन मिलल बा ओकरा के वापस कर दी आ नरक ऊ वापस कर दी जवन ओकरा पर बा।
2. ऊ ओह लोग में से धर्मी आ पवित्र लोग के चुनी काहे कि ओह लोग के उद्धार होखे के दिन नजदीक आ गइल बा.
3. आ चुनल आदमी ओह दिन में हमरा सिंहासन पर बइठ जाई आ ओकर मुँह से बुद्धि आ सलाह के सब रहस्य उझल जाई काहे कि आत्मा के प्रभु ओकरा के देले बाड़न आ ओकर महिमा कइले बाड़न.
4. आ ओह दिनन में पहाड़ मेढ़क नियर उछलत रहीहें आ पहाड़ी दूध से तृप्त मेमना नियर कूदत रहीहें आ स्वर्ग में सब स्वर्गदूतन के चेहरा खुशी से रोशन हो जाई.
5. काहे कि ओह दिनन में चुनल आदमी उठी, आ धरती आनन्दित होई, आ धर्मी लोग ओकरा पर रह जाई आ चुनल लोग ओकरा पर चली।

अध्याय 52 के बा

एल के बा। आ ओह दिनन के बाद ओह जगह पर जहाँ हम छिपल चीज के सब दर्शन देखले रहनी--काहे कि हम एगो बवंडर में ले जाइल गइल रहनी आ ऊ लोग हमरा के पश्चिम के ओर ले गइल रहे।
2. उहाँ हमार आँख आकाश के सब गुप्त चीज देखलस जवन होखे वाला बा, लोहा के पहाड़, तांबा के पहाड़, चांदी के पहाड़, सोना के पहाड़, नरम धातु के पहाड़ आ सीसा के पहाड़।
3. हम अपना साथे गइल स्वर्गदूत से पूछनी कि ई कवन चीज ह जवन हम गुप्त रूप से देखले बानी?
4. आ ऊ हमरा से कहले, 'ई सब जवन तू देखले बाड़ऽ, ऊ उनकर अभिषिक्त के प्रभुत्व के सेवा करी ताकि ऊ धरती पर शक्तिशाली आ पराक्रमी हो सके।'
5. आ ऊ शांति के दूत हमरा से कहलन कि तनी रुकऽ त तोहरा सामने ऊ सब गुप्त बात प्रकट हो जाई जवन आत्मा के प्रभु के घेरले बा.
.
7. आ ओह दिन में केहू के उद्धार ना होई, ना त सोना से, ना चांदी से, आ केहू ना बच पाई।
8. युद्ध खातिर लोहा ना होई, ना ही छाती के कपड़ा पहिरे के होई। कांसा कवनो काम के ना होई, आ टीन कवनो सेवा के ना होई आ ना मानल जाई, आ सीसा के इच्छा ना होई।
9. आ ई सब बात के नकार दिहल जाई आ धरती के सतह से नष्ट कर दिहल जाई, जब चुनल आदमी आत्मा के प्रभु के चेहरा के सामने प्रकट होई।'

अध्याय 53 के बा

1. उहाँ हमार आँख एगो गहिराह घाटी देखलस जवना के मुँह खुलल रहे आ धरती आ समुंदर आ द्वीप पर रहे वाला सभे ओकरा लगे उपहार आ उपहार आ श्रद्धांजलि के निशान ले आई बाकिर ऊ गहिराह घाटी भरल ना होखी.
2. आ उनकर हाथ अराजक काम करेला, आ पापी ओह सब के खा जाला जेकरा के ऊ लोग अराजक तरीका से अत्याचार करेला, तबो पापी लोग आत्मा के प्रभु के सामने नाश हो जाई, आ उनकर धरती से भगा दिहल जाई, आ ऊ लोग हमेशा खातिर नाश हो जाई।
3. काहे कि हम देखनी कि सजा के सब दूत उहाँ रह के शैतान के सब साधन तैयार करत रहले।
4. आ हम अपना साथे गइल शांति के दूत से पूछनी कि ऊ लोग केकरा खातिर ई साज-सज्जा तइयार करत बा?
5. ऊ हमरा से कहले, 'उ लोग एह धरती के राजा आ पराक्रमी लोग खातिर ई सब तइयार करेला, ताकि ऊ लोग एह से नाश हो सके।'
6. आ एकरा बाद धर्मी आ चुनल आदमी अपना मंडली के घर के प्रकट कर दीहें, अब से ओह लोग के आत्मा के प्रभु के नाम पर अब कवनो बाधा ना होखी.
7. आ ई पहाड़ ओकरा धार्मिकता के सामने धरती निहन ना खड़ा होई, लेकिन पहाड़ी पानी के फव्वारा निहन होई, अवुरी धर्मी के पापी के अत्याचार से आराम मिली।'

अध्याय 54 के बा

1. हम देखनी आ धरती के दोसरा हिस्सा के ओर मुड़नी त देखनी कि उहाँ एगो गहिराह घाटी बा जवना में आग जरत रहे।
2. राजा आ पराक्रमी लोग के लेके एह गहिराह घाटी में फेंके लगले।
3. आ उहाँ हमार आँख देखलस कि कइसे ई लोग आपन वाद्ययंत्र बनवले बा, अथाह वजन के लोहा के जंजीर।
4. आ हम अपना साथे गइल शांति के दूत से पूछनी कि ई जंजीर केकरा खातिर तइयार कइल जा रहल बा?
.
6. माइकल, जिब्राईल, राफेल आ फनुएल ओह महान दिन ओह लोग के पकड़ के ओह दिन ओह लोग के जरत भट्ठी में फेंक दीहें, ताकि आत्मा के प्रभु ओह लोग से शैतान के अधीन होखे के अधर्म के बदला ले सके आ धरती पर रहे वाला लोग के भटकावे।'
7. 'आ ओह दिनन में आत्मा के प्रभु के ओर से सजा आई, आ उ पानी के सब कोठरी खोल दिहे जवन आकाश से ऊपर बा, आ धरती के नीचे के फव्वारा के।'
8. आ सब पानी पानी से जुड़ जाई, जवन आकाश के ऊपर बा उ पुल्लिंग ह अवुरी जवन पानी धरती के नीचे बा उ स्त्रीलिंग ह।
9. आ ऊ लोग धरती पर रहे वाला आ आकाश के छोर के नीचे रहे वाला सब के नाश कर दीहें.
10. आ जब ऊ लोग अपना अधर्म के पहचान ली जवन ऊ लोग धरती पर कइले बा, त एही से ऊ लोग नाश हो जाई.

अध्याय 55 के बा

1. आ ओकरा बाद दिन के मुखिया पश्चाताप कइलन आ कहलन कि हम बेकार में धरती पर रहे वाला सब लोग के नाश कर दिहनी.
2. आ ऊ अपना बड़हन नाम के कसम खइले कि, 'अब से हम धरती पर रहे वाला सब लोग के अइसन ना करब, आ हम स्वर्ग में एगो निशानी बनाइब, आ ई हमरा आ ओह लोग के बीच हमेशा

खातिर सद्भावना के प्रतिज्ञा होखी, जबले स्वर्ग धरती से ऊपर रही।' आ ई हमरा आज्ञा के मुताबिक बा।'
3. जब हम एकरा चलते कष्ट आ पीड़ा के दिन स्वर्गदूतन के हाथ से पकड़े के इच्छा रखब त हम आपन सजा आ आपन क्रोध ओह लोग पर बनल रहब, भगवान, आत्मा के प्रभु कहत बाड़न।

.

अध्याय 56 के बा

1. हम ओहिजा सजा के स्वर्गदूतन के सेना के जात देखनी आ ओह लोग के कोड़ा आ लोहा आ कांसा के जंजीर पकड़ले रहे।
2. आ हम अपना साथे गइल शांति के दूत से पूछनी कि ई लोग केकरा लगे जात बा जे कोड़ा पकड़ले बा?
3. आ ऊ हमरा से कहले, 'अपना चुनल आ प्रियजन के, ताकि ऊ लोग घाटी के खाई के खाई में फेंकल जा सके।'
4. आ तब ऊ घाटी ओह लोग के चुनल आ प्रियजन से भरल हो जाई आ ओह लोग के जिनिगी के दिन खतम हो जाई आ ओह लोग के भटकावे के दिन तब से ना गिनल जाई.

.

6. ऊ लोग चढ़ के उनकर चुनल लोग के देश के पैर से चल के चल जइहें आ उनकर चुनल लोग के देश ओह लोग के सामने कुटनी आ राजमार्ग होखी।
7. बाकिर हमरा धर्मी लोग के नगर ओह लोग के घोड़ा खातिर बाधा बन जाई। आ ऊ लोग आपस में लड़ाई करे लागी, आ ओह लोग के दाहिना हाथ अपना से मजबूत हो जाई आ आदमी अपना भाई के ना चिन्ह पाई, ना बेटा के अपना बाप भा महतारी के, जबले कि ओह लोग के वध से लाश के संख्या ना हो जाई आ ओह लोग के सजा बेकार ना हो जाई.
8. ओह दिनन में शेओल आपन जबड़ा खोल दी, आ ओकरा में निगल जाई, आ ओह लोग के विनाश के अंत हो जाई। चुनल लोग के सामने पापी लोग के सीन खा जाई।'

अध्याय 57 के बा

1. एकरा बाद हम देखनी कि गाड़ियन के एगो अउरी सेना आ ओह पर सवार आदमी लोग पूरब आ पश्चिम से दक्खिन ओर हवा में आवत रहे।
2. आ ओह लोग के गाड़ी के आवाज सुनाई पड़ल आ जब ई उथल-पुथल भइल त स्वर्ग से आइल पवित्र लोग एकर टिप्पणी कइल आ धरती के खंभा अपना जगह से हट गइल आ आकाश के एक छोर से दोसरा छोर पर ओकर आवाज एके दिन में सुनाई पड़ल.
3. आ ऊ सब गिर के आत्मा के प्रभु के पूजा करीहें। आ इहे दूसरा दृष्टान्त के अंत ह।

अध्याय 58 के बा

1. हम तीसरा दृष्टान्त धर्मी आ चुनल लोग के बारे में कहे लगनी।
2. धन्य बानी, हे धर्मी आ चुनल लोग, काहे कि राउर भाग्य महिमामंडित होई।
3. आ धर्मी लोग सूरज के रोशनी में होई। आ चुनल लोग अनन्त जीवन के रोशनी में: उनकर जीवन के दिन अंतहीन होई, आ पवित्र लोग के दिन अनगिनत होई।
4. आ ऊ लोग प्रकाश के खोज करी आ आत्मा के प्रभु के साथे धार्मिकता पाई, अनन्त प्रभु के नाम से धर्मी लोग के शांति होई।
5. आ एकरा बाद स्वर्ग में पवित्र लोग से कहल जाई कि ऊ लोग धार्मिकता के रहस्य, विश्वास के विरासत के खोजे, काहे कि ई धरती पर सूरज नियर चमकदार हो गइल बा आ अन्हार बीत गइल बा।

.

अध्याय 59 के बा

.

2. आ उहाँ हम गरज के रहस्य देखनी आ कइसे जब ऊ आकाश में ऊपर गूँजत बा त ओकर आवाज सुनाई देला आ ऊ हमरा के धरती पर निष्पादित न्याय के देखवा दिहले, चाहे ऊ भलाई आ आशीर्वाद खातिर होखे भा आत्मा के प्रभु के वचन के अनुसार अभिशाप खातिर।
3. आ ओकरा बाद हमरा के रोशनी आ बिजली के सब रहस्य देखावल गइल आ ऊ आशीर्वाद खातिर आ संतुष्टि खातिर हल्का हो जाला.

अध्याय 60 के बा

1. पांच सौ साल में, सातवाँ महीना में, हनोक के जीवन में महीना के चौदहवाँ दिन। ओह दृष्टांत में हम देखनी कि कइसे एगो पराक्रमी भूकंप से आकाश के आकाश हिल गइल आ परमात्मा के सेना आ स्वर्गदूत, हजार दस हजार गुना दस हजार, बहुते बेचैनी से बेचैन हो गइलन.
2. आ दिन के सिर अपना महिमा के सिंहासन पर बइठल रहले आ स्वर्गदूत आ धर्मी लोग उनका चारो ओर खड़ा रहले।
3. आ एगो बड़हन काँप हमरा के पकड़ लिहलस, आ डर हमरा के पकड़ लिहलस, आ हमार कमर रास्ता छोड़ दिहलस, आ हमार लगाम घुल गइल, आ हम अपना चेहरा पर गिर गइनी।
4. माइकल पवित्र लोग के बीच से एगो अउरी स्वर्गदूत भेजलन आ ऊ हमरा के जिंदा कर दिहलन आ जब ऊ हमरा के जिंदा कइलन त हमार आत्मा वापस आ गइल. काहे कि हम एह सेना के नजर आ आकाश के हंगामा आ काँप ना सह पवले रहनी। माइकल हमरा से कहले, 'तू अइसन दर्शन से काहे परेशान बाड़? जब तक आज तक उनकर दया के दिन चलल; आ ऊ धरती पर रहे वाला लोग के प्रति दयालु आ दीर्घधीर रहल बाड़न।
5. आ जब ऊ दिन, आ शक्ति, आ सजा आ न्याय आ जाई, जवन आत्मा के प्रभु ओह लोग खातिर तइयार कइले बाड़न जे धर्मी व्यवस्था के पूजा ना करेला, आ जे लोग धर्मी न्याय के नकारत बा, आ जे लोग उनकर नाम बेकार में लेत बा--उ दिन तइयार हो गइल बा, चुनल लोग खातिर एगो वाचा, बाकिर पापी लोग खातिर एगो पूछताछ।
6. जब आत्मा के प्रभु के सजा ओह लोग पर पड़ी त ऊ एह खातिर टिकी कि आत्मा के प्रभु के सजा ना आवे, बेकार में, आ ऊ लइकन के माई के साथे आ लइकन के बाप के साथे मार दी।

एकरा बाद उनुका दया अवुरी उनुका धैर्य के मुताबिक न्याय होई।'
7. आ ओह दिन दू गो राक्षस अलग हो गइलन, लेवियथन नाम के एगो मादा राक्षस, पानी के फव्वारा के ऊपर समुंदर के खाई में रहे खातिर।

.

9. हम दोसरा स्वर्गदूत से निहोरा कइनी कि ऊ हमरा के ओह राक्षसन के ताकत देखावे कि कइसे ऊ लोग एक दिन अलगा हो गइल आ एगो के समुद्र के खाई में डाल दिहल गइल आ दोसरका जंगल के सूखल भूमि में.
10. आ ऊ हमरा से कहले, 'तू आदमी के बेटा, एही में तू ई जाने के कोशिश करत बाड़ू कि का छिपल बा।'

.

12. आ हवा के कोठरी, आ हवा के बँटवारा, कइसे तौलल जाला, आ हवा के द्वार के गणना हवा के शक्ति आ चाँद के रोशनी के शक्ति आ उचित शक्ति के हिसाब से कइल जाला, आ तारा के बँटवारा ओह लोग के नाम के हिसाब से आ सभ बंटवारा के हिसाब से कइसे बाँटल जाला।

.

14. काहे कि गरज के आराम के जगह होला जवन ओकरा के तब दिहल जाला जब ऊ ओकरा झटका के इंतजार करत रहेला. आ गरज आ बिजली अविभाज्य होला आ भले एक आ अविभाजित ना होखे बाकिर दुनु आत्मा के माध्यम से एक साथ जाला आ अलग ना होखे.
15. काहे कि जब बिजली हल्का हो जाला त गरज आपन आवाज निकालेला आ आत्मा पील के दौरान विराम के मजबूर कर देला आ ओह लोग के बीच बराबर बंटत रहेला; काहे कि ओह लोग के खजाना बालू जइसन होला आ ओकरा में से हर एक के खजाना लगाम से पकड़ल जाला आ आत्मा के शक्ति से पीछे मुड़ल जाला आ धरती के कई हिस्सा के हिसाब से आगे बढ़ावल जाला.
16. आ समुंदर के आत्मा पुरुष आ मजबूत होला आ अपना ताकत के ताकत के हिसाब से ओकरा के लगाम से पीछे खींच लेला आ ओही तरह से ओकरा के आगे बढ़ावल जाला आ धरती के सगरी पहाड़न का बीच बिखरा जाला.
17. आ कर्कश-ठंढ के आत्मा ओकर आपन परी ह, आ ओला के आत्मा एगो बढ़िया परी ह।
18. आ बर्फ के आत्मा ओकरा ताकत के चलते ओकर कोठरी छोड़ देले बा--ओह में एगो खास आत्मा बा, आ ओकरा से चढ़े वाला धुँआ निहन बा, अवुरी ओकर नाम ठंढा ह।
19. आ धुंध के आत्मा ओह लोग का साथे ओह लोग के कोठरी में एकजुट ना होला बाकिर ओकरा में एगो खास कोठरी होला. काहे कि एकर रास्ता रोशनी आ अन्हार में, जाड़ा आ गर्मी में भी महिमामंडित होला आ ओकरा कोठरी में एगो स्वर्गदूत होला।
20. आ ओस के आत्मा स्वर्ग के छोर पर आपन निवास करेला आ बरखा के कोठरी से जुड़ल होला आ ओकर रास्ता जाड़ा आ गर्मी में होला आ ओकर बादल आ धुंध के बादल जुड़ल होला आ एगो दोसरा के देला.
21. आ जब बरखा के आत्मा ओकरा कोठरी से निकलेला त स्वर्गदूत आके कोठरी खोल के ओकरा के बाहर ले जाला आ जब ऊ पूरा धरती पर फइल जाला त ऊ धरती पर पानी से मिल जाला. आ जब भी धरती पर पानी से एक हो जाला . . .
22. काहे कि पानी धरती पर रहे वाला लोग खातिर बा। काहे कि ऊ स्वर्ग में परम परमेश्वर के ओर से धरती के पोषण हवें, एही से बरखा के नाप होला आ स्वर्गदूत ओकरा के संभाल लेलें।
23. आ ई सब हम धर्मी लोग के बगीचा के ओर देखनी।
24. आ हमरा साथे शांति के दूत हमरा से कहलस कि भगवान के महानता के अनुरूप तइयार ई दुनु राक्षस भोजन करीहें . . .

अध्याय 61 के बा

1. हम ओह दिनन में देखनी कि ओह स्वर्गदूतन के केतना लंबा डोरी दिहल गइल रहे आ ऊ लोग अपना पाँख लेके उड़ गइल आ ऊ लोग उत्तर के ओर चल गइल.
2. हम स्वर्गदूत से पूछनी कि ऊ स्वर्गदूत ई डोरी लेके काहे चल गइल बाड़े? उ हमरा से कहले, 'उ लोग नाप के चल गईल बाड़े।'
3. आ हमरा साथे गइल स्वर्गदूत हमरा से कहलस कि ई लोग धर्मी लोग के नाप, आ धर्मी लोग के रस्सी धर्मी लोग के लगे ले आई, ताकि उ लोग हमेशा खातिर आत्मा के प्रभु के नाम पर खुद के रह सके।
4. चुनल लोग चुनल लोग के साथे रहे लागी, आ उहे माप बा जवन विश्वास के दिहल जाई, आ जवन धर्म के मजबूत करी।
. काहे कि आत्मा के प्रभु के सामने केहू के नाश ना होई, आ केहू के नाश ना हो सकेला।
6. आकाश में ऊपर रहे वाला सब लोग के एगो आज्ञा आ शक्ति आ एके आवाज आ एगो रोशनी मिलल जवन आग जइसन रहे।
7. आ ओह एक के अपना पहिला शब्दन से आशीर्वाद दिहल, आ बुद्धि से प्रशंसा आ तारीफ कइल, आ ऊ लोग बोलला में आ जीवन के भावना में बुद्धिमान रहे.
8. आ आत्मा के प्रभु चुनल आदमी के महिमा के सिंहासन पर बइठा दिहलन। ऊ आकाश में पवित्र लोग के सब काम के न्याय करी आ तराजू में ओह लोग के काम के तौल जाई।

.

10. ऊ आकाश के सगरी सेना आ ऊपर के सगरी पवित्र लोग आ भगवान के सेना, करुब, सेराफीन आ ओफानीन, आ सब ताकतवर स्वर्गदूतन, आ रियासत के सगरी स्वर्गदूतन आ चुनल आदमी आ धरती आ पानी पर मौजूद बाकी शक्तियन के बोलावे के काम करीहें.
11. On that day shall raise one voice, and bless and glorify and exalt in the spirit of faith, and in the spirit of wisdom, and in the spirit of patience, and in the spirit of mercy, and in the spirit of judgement and of peace, and in the spirit of goodness, and shall all say with one voice: "Blessed is He, and may the name of the Lord of Spirits be blessed for ever and हमेशा।"
12. जे भी स्वर्ग में ऊपर ना सुतल बा, उ सब उनकर आशीर्वाद दिहे, स्वर्ग में मौजूद सब पवित्र लोग उनकर आशीर्वाद दिहे, आ जीवन के बगीचा में रहे वाला सब चुनल लोग के आशीर्वाद दिहे, आ प्रकाश के हर आत्मा जे तोहार धन्य नाम के आशीर्वाद देवे, महिमा करे, आ स्तुति करे, आ पवित्र करे में सक्षम बा, आ सब शरीर तोहरा नाम के नापजोख से महिमा आ आशीर्वाद दिही, हमेशा खातिर।

.

अध्याय 62 के बा

1. आ एह तरह से प्रभु राजा लोग आ पराक्रमी आ ऊंच लोग आ धरती पर रहे वाला लोग के आज्ञा दिहलन आ कहले कि अगर चुनल आदमी के पहचाने में सक्षम बानी त आँख खोलीं आ सींग उठाईं.
2. आ आत्मा के प्रभु ओकरा के अपना महिमा के सिंहासन पर बइठा दिहलन, आ ओकरा पर धार्मिकता के आत्मा बहल गइल, आ ओकर मुँह के वचन सब पापी लोग के मार देला, आ सब अधर्मी लोग ओकरा चेहरा से नाश हो जाला।
3. आ ओह दिन सब राजा आ पराक्रमी, आ ऊँच लोग आ धरती के पकड़े वाला लोग खड़ा हो जइहें आ ऊ लोग देख के पहचान ली कि ऊ कइसे अपना महिमा के सिंहासन पर बइठल बा, आ ओकरा सोझा धर्म के न्याय कइल जाई, आ ओकरा सोझा कवनो झूठा शब्द ना कहल जाई.
4. तब ओह लोग पर ओइसहीं पीड़ा आ जाई जइसे प्रसव करे वाली मेहरारू पर, आ ओकरा बच्चा पैदा करे में पीड़ा होखी, जब ओकर लइका गर्भ के मुँह में घुस जाई, आ ओकरा पैदा करे में पीड़ा होखी.

.

6. राजा आ पराक्रमी आ धरती के मालिक सब केहू के आशीर्वाद आ महिमा आ बड़ाई करी जे सब पर राज करेला, जे छिपल रहे।
7. काहे कि शुरू से आदमी के बेटा छिपल रहले, आ परमात्मा ओकरा के अपना ताकत के सामने रखले रहले, आ चुनल लोग के सामने ओकरा के प्रगट कईले रहले।
8. चुनल आ पवित्र लोग के मंडली बोवल जाई आ ओह दिन सब चुनल लोग ओकरा सोझा खड़ा हो जाई.

.

10. तबो ऊ आत्मा के मालिक ओह लोग के अतना दबाव दीहें कि ऊ लोग जल्दबाजी में उनुका सोझा से निकल जइहें आ ओह लोग के चेहरा शर्म से भरल हो जाई आ ओह लोग के चेहरा पर अन्हार अउरी गहिराह हो जाई.
11. आ ऊ ओह लोग के सजा खातिर स्वर्गदूतन के हवाले कर दीहें, ओह लोग से बदला लेबे खातिर काहे कि ऊ लोग उनकर लइकन आ उनकर चुनल लोग पर अत्याचार कइले बा.

.

13. आ ओह दिन धर्मी आ चुनल लोग के उद्धार हो जाई आ तब से ऊ लोग पापी आ अधर्मी लोग के चेहरा कबो ना देख पाई.
14. आ आत्मा के प्रभु ओह लोग पर रहत रहीहें आ ओह आदमी के बेटा का साथे ऊ लोग खा जाई आ लेट के उठ के हमेशा खातिर उठ जाई.
15. आ धर्मी आ चुनल लोग धरती से उठल होई, आ उदास चेहरा ना रह गइल होई। आ उ लोग महिमा के कपड़ा पहिनले होईहे।
16. आ ई आत्मा के प्रभु से जीवन के वस्त्र होई, आ तोहार कपड़ा ना पुरान होई, ना तोहार महिमा आत्मा के प्रभु के सामने खतम होई।

अध्याय 63 के बा

1. ओह दिनन में पराक्रमी आ धरती पर कब्जा करे वाला राजा लोग उनकरा से निहोरा करी कि ऊ लोग के सजा के स्वर्गदूतन से तनी राहत दीं जेकरा के ऊ लोग सौंपल गइल रहे, ताकि ऊ लोग गिर के आत्मा के प्रभु के सामने आराधना कर सके आ उनकरा सामने आपन पाप कबूल कर सके।
2. आ ऊ लोग आत्मा के प्रभु के आशीष आ महिमा करीहें आ कहसु कि आत्मा के प्रभु आ राजा लोग के प्रभु, आ पराक्रमी आ धनी के मालिक, आ महिमा के मालिक आ बुद्धि के मालिक, धन्य बाड़न.
3. आ हर गुप्त चीज में तोहार शक्ति पीढ़ी दर पीढ़ी शानदार बा, आ तोहार महिमा हमेशा खातिर: गहिराह बा तोहार सब रहस्य आ असंख्य बा, आ तोहार धर्म के हिसाब से परे बा।
4. हमनी के अब सीख गईल बानी जा कि हमनी के महिमा करे के चाही, अवुरी राजा के प्रभु अवुरी उनुका के आशीर्वाद देवे के चाही, जवन कि सभ राजा प राजा हवे।'
5. आ ऊ लोग कहसु कि काश हमनी के महिमामंडन आ धन्यवाद देबे खातिर आराम मिलित, आ उनकर महिमा के सामने आपन विश्वास कबूल कर लेत!
6. अब हमनी के तनी आराम खातिर तरसतानी जा लेकिन ओकरा के ना पावेनी जा।

.

.

9. आ हमनी के अपना काम के चलते उनुका चेहरा से दूर हो जानी जा, अवुरी हमनी के सभ पाप के हिसाब धर्म में हो जाला।'
10. अब ऊ लोग अपना मन में कहसु कि हमनी के आत्मा अधर्म के लाभ से भरल बा, बाकिर ई हमनी के ओकरा बीच से सीओल के बोझ में उतरे से नइखे रोकत.'
11. आ ओकरा बाद ओह लोग के चेहरा अन्हार से भर जाई आ ओह आदमी के बेटा का सोझा लाज लाग जाई आ ओकरा सोझा से भगा दिहल जाई आ तलवार ओकरा चेहरा का सोझा ओह लोग का बीच में रह जाई.
12. आत्मा के प्रभु अईसन कहले कि, 'आत्मा के प्रभु के सोझा शक्तिशाली अवुरी राजा अवुरी उदात्त लोग अवुरी धरती के मालिक के संबंध में इहे नियम अवुरी न्याय ह।'

अध्याय 64 के बा

1. आ अउरी रूप हम ओह जगह पर छिपल देखनी।
2. हम स्वर्गदूत के आवाज सुननी कि, 'ई उ स्वर्गदूत हवें जे धरती पर उतरले, आ आदमी के संतान के सामने जवन छिपल रहे ओकरा के प्रकट कइले आ आदमी के संतान के पाप करे खातिर बहका दिहले।'

अध्याय 65 के बा

1. ओह दिनन में नूह धरती के देखले कि ऊ डूब गइल बा आ ओकर विनाश करीब बा।
2. ऊ ओहिजा से उठ के धरती के छोर पर चल गइलन आ अपना दादा हनोक से जोर से चिल्ला के कहलन आ नूह तीन बेर कड़ुआ आवाज में कहलन कि हमार बात सुनऽ, हमार बात सुनऽ, हमार बात सुनऽ.'
3. हम ओकरा से कहनी कि बताईं कि धरती पर का गिर रहल बा कि धरती अतना बुरा हालत में बा आ हिलत बिया, कहीं शायद हम ओकरा साथे नाश हो जाईं?'

4. तब धरती पर बहुत हंगामा भइल आ स्वर्ग से आवाज सुनाई पड़ल आ हम मुँह पर गिर गइनी।
5. हमार दादा हनोक आके हमरा लगे खड़ा होके हमरा से कहले, 'तू हमरा से कड़वा रोवत काहे पुकारल बाड़ू?
.
7. आ कइसे धरती के धूल से चांदी के उत्पादन होला आ कइसे कोमल धातु के उत्पत्ति धरती से होला।
8. काहे कि सीसा आ टीन पहिला जइसन धरती से ना पैदा होला, ई एगो फव्वारा ह जवन एकरा के पैदा करेला आ ओकरा में एगो स्वर्गदूत खड़ा होला आ ऊ स्वर्गदूत प्रमुख होला.'
9. आ ओकरा बाद हमार दादा हनोक हमरा हाथ से पकड़ के उठवले आ हमरा से कहले कि जा, काहे कि हम धरती पर एह हंगामा के छूवे के बारे में आत्मा के प्रभु से पूछले बानी।
.
.
.

अध्याय 66 के बा

1. आ ओकरा बाद ऊ हमरा के सजा के दूत देखवले जे आके धरती पर नीचे के पानी के सब शक्ति के छोड़े के तइयार बाड़े ताकि धरती पर रहे वाला आ रहे वाला सब लोग पर न्याय आ विनाश हो सके।
2. आ आत्मा के प्रभु निकले वाला स्वर्गदूतन के आज्ञा दिहलन कि ऊ लोग पानी के ना बढ़ा दीं बलुक ओकरा के रोक के राखसु. काहे कि ऊ स्वर्गदूत पानी के अधिकारन पर काम करत रहले.
3. आ हम हनोक के सामने से दूर हो गईनी।

अध्याय 67 के बा

1. आ ओह दिनन में भगवान के वचन हमरा लगे आइल आ ऊ हमरा से कहले, 'नूह, तोहार भाग्य हमरा सामने आ गइल बा, बहुत कुछ निर्दोष, बहुत प्रेम आ सीधापन।'
2. आ अब स्वर्गदूत लोग लकड़ी के भवन बना रहल बा आ जब ऊ काम पूरा कर ली त हम ओकरा पर आपन हाथ राख के ओकरा के बचा लेब आ ओकरा से जीवन के बीज निकली आ एगो बदलाव आ जाई जेहसे कि धरती बिना निवासी के ना रह सके.
.
4. आ ऊ ओह स्वर्गदूतन के जेल में डाल दीहें, जे अधर्म के प्रदर्शन कइले बाड़न, ओह जरत घाटी में जवन हमार दादा हनोक हमरा के पहिले पश्चिम में सोना चांदी आ लोहा आ मुलायम धातु आ टीन के पहाड़न के बीच में देखवले रहले.
5. आ हम ऊ घाटी देखनी जवना में पानी के बहुते झटका आ झटका लागल रहे।
.
7. आ ओकरा घाटी से आग के धार निकलेला, जहाँ एह स्वर्गदूतन के सजा दिहल जाला जे धरती पर रहे वाला लोग के भटकवले रहले.
8. बाकिर ऊ पानी ओह दिनन में राजा आ पराक्रमी आ ऊंच लोग आ धरती पर रहे वाला लोग खातिर शरीर के चंगाई खातिर काम करी बाकिर आत्मा के सजा देबे के काम करी. अब उनकर आत्मा कामवासना से भरल बा, ताकि उ लोग के शरीर में सजा मिल सके, काहे कि उ लोग आत्मा के प्रभु के नकार देले बाड़े अवुरी रोज आपन सजा देखत बाड़े, लेकिन फिर भी उनुका नाम प विश्वास नईखन करत।
9. आ जइसे-जइसे ओह लोग के देह के जरावल गंभीर होखत जाई, ओही अनुपात में ओह लोग के भावना में हमेशा खातिर एकरा अनुरूप बदलाव होखी; काहे कि आत्मा के प्रभु के सामने केहू बेकार शब्द ना बोली।
10. काहे कि न्याय ओह लोग पर आ जाई काहे कि ऊ लोग अपना शरीर के कामना में विश्वास करेला आ प्रभु के आत्मा के नकारत बा.
11. आ ओही पानी में ओह दिनन में बदलाव होखी; काहे कि जब ओह स्वर्गदूतन के एह पानी में सजा दिहल जाई त ई पानी के झरना आपन तापमान बदल दीहें आ जब स्वर्गदूत चढ़ जइहें त झरना के ई पानी बदल के ठंडा हो जाई.
12. हम माइकल के जवाब देत सुननी कि, 'ई न्याय जवना से स्वर्गदूतन के न्याय कईल जाला, उ राजा अवुरी ताकतवर लोग खाती गवाही ह, जवन कि धरती के मालिक बाड़े।'
13. काहे कि ई न्याय के पानी राजा लोग के शरीर आ ओह लोग के शरीर के कामना के चंगाई के काम करेला। एह से ऊ लोग ना देख पाई आ ना मानी कि ऊ पानी बदल के एगो आग बन जाई जवन हमेशा खातिर जरत रहेला.

अध्याय 68 के बा

1. आ ओकरा बाद हमार दादा हनोक हमरा के ओह दृष्टान्त में किताब में दिहल सब रहस्य के शिक्षा दिहलन जवन उनका के दिहल गइल रहे आ ऊ हमरा खातिर दृष्टान्त के किताब के शब्दन में एकट्ठा कर दिहलन।
2. आ ओह दिन माइकल राफेल के जवाब दिहलन आ कहलन कि, 'गुप्त के न्याय, स्वर्गदूतन के न्याय के कठोरता के कारण आत्मा के शक्ति हमरा के ढोवेला आ काँप देला: के कड़ा न्याय के सहन कर सकेला जवन निष्पादित भइल बा आ जवना के सामने ऊ लोग पिघल जाला?'
3. माइकल फेर से जवाब दिहलन आ राफेल से कहलन कि ऊ के ह जेकर दिल एकरा बारे में नरम नइखे भइल आ जेकर बागडोर एह तरह से बाहर निकाले वाला लोग का चलते ओह लोग पर निकलल एह न्याय के वचन से परेशान नइखे?'
4. आ जब ऊ आत्मा के प्रभु के सामने खड़ा भइलन त माइकल राफेल से कहलन कि हम ओह लोग के हिस्सा प्रभु के नजर में ना लेब; काहे कि आत्मा के प्रभु ओह लोग पर नाराज हो गइल बाड़न काहे कि ऊ लोग अइसन काम करेला जइसे ऊ लोग प्रभु होखे. एह से जवन कुछ छिपल बा ऊ सब ओह लोग पर हमेशा खातिर आ जाई। काहे कि ना त स्वर्गदूत ना आदमी के आपन हिस्सा होई, लेकिन अकेले उ लोग के युगों-युगों तक आपन न्याय मिलल बा।'

अध्याय 69 के बा

1. आ एह न्याय के बाद उ लोग डेरा के काँप दिहे काहे कि उ लोग धरती पर रहे वाला लोग के इ बात देखवले बाड़े।
2. And behold the names of those angels and these are their names: the first of them is Samjâzâ, the

second Artâqîfâ, and the third Armên, the fourth Kôkabêl, the fifth Tûrâêl, the sixth Rûmjâl, the seventh Dânjâl, the eighth Nêqâêl, the ninth Barâqêl, the tenth Azâzêl, the eleventh अरमारोस, बारहवाँ बतरजल, तेरहवाँ बुसासेजल, चौदहवाँ हनानेल, पन्द्रहवाँ टूरेल आ सोलहवाँ सिमापेसील, सतरहवाँ जेट्रेल, अठारहवाँ टूमाल, उन्नीसवाँ टूरेल, बीसवाँ रूमाल, एकइसवाँ अज़ेज़ेल.
3. आ ई लोग ओह लोग के स्वर्गदूतन के मुखिया आ ओह लोग के नाम ह आ सैकड़न से अधिका पचास आ दस लोग पर ओह लोग के मुखिया हउवें.
4. पहिला जेकोन के नाम: यानी उ जे भगवान के सभ बेटा के भटकवले अवुरी धरती प उतारले अवुरी आदमी के बेटी के माध्यम से भटकवले।
5. दूसरा के नाम असबेल रखल गईल, उ परमेश्वर के पवित्र बेटा लोग के बुरा सलाह देले अवुरी उ लोग के भटकवले कि उ लोग आदमी के बेटी से अपना शरीर के अशुद्ध क देले।

.

7. आ ओकरा हाथ से ऊ लोग ओह दिन से आ हमेशा खातिर धरती पर रहे वाला लोग के खिलाफ निकलल बा।
8. चउथा के नाम पेनेमुए रहे, ऊ आदमी के लइकन के कड़वा आ मीठ सिखावत रहले आ ओह लोग के बुद्धि के सब रहस्य सिखावत रहले.
9. आ ऊ मानव जाति के स्याही आ कागज से लिखे के निर्देश दिहलन आ एह से बहुते लोग अनंत काल से अनंत काल ले आ आजु ले पाप कइल.
10. काहे कि आदमी के अइसन मकसद से ना बनावल गइल रहे कि ऊ लोग अपना सद्भावना के कलम आ स्याही से पुष्टि कर सके.

.

12. And the fifth was named Kâsdejâ: this is he who showed the children of men all the wicked smitings of spirits and demons, and the smitings of the embryo in the womb, that it may pass away, and the smitings of the soul the bites of the serpent, and the smitings which befall through the noontide heat, the son of the serpent named तबâ'एत के बा।

.

.

15. आ ई किरिया के ताकत ह, काहे कि ई ताकतवर आ मजबूत बा आ ऊ एह किरिया के अकाए माइकल के हाथ में रख दिहलन.
16. आ ईहे एह किरिया के रहस्य बा . . . आ ऊ लोग उनकर कसम से मजबूत बा: आ दुनिया के रचना होखे से पहिले स्वर्ग लटकल रहे, आ हमेशा खातिर।
17. आ ओकरा माध्यम से धरती के नींव पानी पर भइल, आ पहाड़न के गुप्त रिसेस से सुन्दर पानी आवेला, दुनिया के सृष्टि से लेके अनंत काल तक।

.

.

20. आ ओह किरिया के माध्यम से सूरज आ चंद्रमा आपन रास्ता पूरा करेला, आ अनन्त काल से अनंत काल तक अपना नियम से ना हटेला।
21. आ ओह किरिया के माध्यम से तारा आपन रास्ता पूरा करेला, आ ऊ ओह लोग के नाम से बोलावेला, आ ऊ लोग अनन्त काल से अनन्त काल तक उनकर जवाब देला।
22. आ ओही तरह पानी के, हवा के, आ सब ज़ेफिर के आत्मा आ हवा के चारो ओर से ओकर रास्ता।
23. गरज के आवाज आ बिजली के रोशनी सुरक्षित बा आ ओला के कोठरी आ ठंढा के कोठरी, धुंध के कोठरी आ बरखा आ ओस के कोठरी सुरक्षित बा।
24. ई सब लोग आत्मा के प्रभु के सामने विश्वास करेला आ धन्यवाद देला आ अपना पूरा शक्ति से उनकर महिमा करेला आ उनकर भोजन धन्यवाद के हर काम में होला, ऊ लोग आत्मा के प्रभु के नाम के हमेशा खातिर धन्यवाद आ महिमा आ बड़ाई करेला।
25. आ ई किरिया ओह लोग पर ताकतवर बा, आ एकरा माध्यम से ऊ लोग सुरक्षित बा आ ओह लोग के राह सुरक्षित बा आ ओह लोग के रास्ता नाश नइखे होखत.
26. आ ओह लोग के बीच बहुते खुशी भइल आ ऊ लोग आशीष दिहल आ महिमा आ बड़ाई कइल काहे कि ओह आदमी के बेटा के नाम ओह लोग पर प्रगट हो गइल रहे.
27. ऊ अपना महिमा के सिंहासन पर बइठल, आ न्याय के रकम आदमी के बेटा के दिहल गइल आ ऊ पापी लोग के दूर कर दिहलन आ धरती से नाश कर दिहलन आ दुनिया के भटकावे वाला लोग के.
28. जंजीर से बान्हल जाई आ अपना विनाश के सभा स्थल में जेल में डाल दिहल जाई आ ओह लोग के सगरी काम धरती से गायब हो जाई.
29. आ अब से कवनो नाश होखे वाला कवनो चीज ना होई। काहे कि ऊ आदमी के बेटा प्रकट हो गइल बा आ अपना महिमा के सिंहासन पर बइठ गइल बा आ ओकरा सामने सब बुराई खतम हो जाई आ ओह आदमी के वचन निकल के आत्मा के प्रभु के सामने मजबूत हो जाई.

अध्याय 70 के बा

1. आ एकरा बाद भइल कि उनकर नाम धरती पर रहे वाला लोग के बीच से ओह आदमी के बेटा आ आत्मा के प्रभु के नाम से ऊपर उठ गइल।
2. ऊ आत्मा के रथन पर ऊपर उठ गइलन आ उनकर नाम ओह लोग के बीच से गायब हो गइल।
3. आ ओह दिन से हम अब ओह लोग में गिनल ना गइलीं आ ऊ हमरा के उत्तर आ पश्चिम के बीच में दुनु हवा के बीच में रख दिहलन जहाँ स्वर्गदूत लोग हमरा खातिर चुनल आ धर्मी लोग के जगह नापे खातिर डोरी लेके चल गइल।
4. आ उहाँ हम पहिला बाप आ धर्मी लोग के देखनी जे शुरू से ही ओह जगह पर रहेला।

अध्याय 71 के बा

1. एकरा बाद हमार आत्मा बदल गइल, आ ऊ आकाश में चढ़ गइल, आ हम भगवान के पवित्र बेटा लोग के देखनी। ऊ लोग आग के लपट पर कदम रखत रहे: उनकर कपड़ा उज्जर रहे आ कपड़ा उज्जर रहे, आ चेहरा बर्फ नियर चमकत रहे।

2. आ हम आग के दू गो धारा देखनी, आ ओह आग के रोशनी हयासिन्थ नियर चमकल, आ हम आत्मा के प्रभु के सामने मुँह पर गिर गइनी।
3. आऊ एगो महान स्वर्गदूत माइकल हमरा के दाहिना हाथ से पकड़ के हमरा के उठा के सब रहस्य में ले गईले, आ उ हमरा के धर्म के सब रहस्य देखवले।
4. आ ऊ हमरा के आकाश के छोर के सगरी रहस्य देखा दिहलन आ सगरी तारा आ सगरी ज्योतिषन के सगरी कोठरी देखा दिहलन जहाँ से ऊ पवित्र लोग का सोझा निकलेलें.
5. आ ऊ हमार आत्मा के आकाश के आकाश में बदल दिहलन आ हम ओहिजा अइसन देखनी जइसे कि ऊ स्फटिक से बनल संरचना ह, आ ओह स्फटिकन के बीच में जिंदा आग के जीभ।

.

7. चारो ओर सेराफीन, करुब आ ओफानीन रहले, आ इहे उ लोग हवे जे नींद ना आवेला, आ उनकर महिमा के सिंहासन के रखवाली करेला।
8. हम ओह घर के घेरले स्वर्गदूतन के देखनी जेकर गिनती ना हो पावल, हजार हजार आ दस हजार गुना दस हजार। माइकल, राफेल, जिब्राईल, फनुएल, आ आकाश से ऊपर के पवित्र स्वर्गदूत लोग ओह घर में घुस के बाहर निकल जा।
9. ऊ लोग ओह घर से निकलल, माइकल आ जिब्राईल, राफेल आ फनुएल आ कई गो पवित्र स्वर्गदूत अनगिनत।
10. आ ओह लोग के साथे दिन के सिर, ओकर माथा ऊन नियर सफेद आ शुद्ध, आ ओकर कपड़ा अवर्णनीय।
11. आ हम अपना चेहरा पर गिर गइनी, आ हमार पूरा देह ढील हो गइल, आ हमार आत्मा बदल गइल; आ हम जोर से रोवत रहनी, . . .शक्ति के भावना से, आ धन्य आ महिमा आ प्रशंसा कइल गइल।
12. आ ई आशीर्वाद जवन हमरा मुँह से निकलल रहे ऊ ओह दिन के मुखिया के सामने बहुते नीक लागल।
13. आ ऊ दिन के मुखिया माइकल आ जिब्राईल, राफेल आ फनुएल, हजारन दस हजार स्वर्गदूत के साथे अइले।
14. ऊ हमरा लगे आके अपना आवाज से हमरा के अभिवादन कइलन आ हमरा से कहलन कि ई आदमी के बेटा ह जे धर्म खातिर पैदा भइल बा; आ ओकरा पर धार्मिकता बनल रहेला, आ दिन के सिर के धर्म ओकरा के ना छोड़ेला।'
15. आ ऊ हमरा से कहलन कि ऊ तोहरा के आवे वाला दुनिया के नाम पर शांति के घोषणा करत बा. काहे कि दुनिया के रचना के बाद से एही से शांति निकलल बा, आ तोहरा खातिर हमेशा आ हमेशा खातिर अईसने रही।
16. आ सभे ओकरा राह पर चलत रही काहे कि धर्म ओकरा के कबो ना छोड़ी, ओकरा साथे ओकर निवास होखी आ ओकरा साथे ओकर विरासत होखी आ ऊ लोग ओकरा से हमेशा खातिर अलग ना होखी.
17. आ एही तरे ओह आदमी के बेटा के साथे दिन लमहर होई, आ धर्मी लोग के शांति आ सीधा रास्ता मिली, आत्मा के प्रभु के नाम से हमेशा खातिर।'

अध्याय 72 के बा

1. स्वर्ग के प्रकाशमान लोग के क्रम के किताब, हर एक के संबंध, अपना वर्ग, ओकर प्रभुत्व आ मौसम के अनुसार, ओकर नाम आ उत्पत्ति के स्थान के अनुसार, आ ओकर महीना के अनुसार, जवन उरीएल, पवित्र स्वर्गदूत, जे हमरा साथे रहले, जे ओह लोग के मार्गदर्शक हवें, हमरा के देखवले रहले; आ ऊ हमरा के ओह लोग के सगरी नियम ठीक ओइसहीं देखा दिहलन जइसे ऊ लोग बा, आ दुनिया के सब सालन के संबंध में आ अनंत काल तक कइसे बा, जबले कि नया सृष्टि पूरा ना हो जाव जवन अनन्त काल तक चलेला.
2. आ ई प्रकाशमानन के पहिला नियम ह: प्रकाशमान सूर्य के उदय स्वर्ग के पूरबी द्वार में होला आ स्वर्ग के पच्छिमी द्वार में अस्त होला।
3. आ हम छह गो पोर्टल देखनी जवना में सूरज निकलेला, आ छह गो पोर्टल जवना में सूरज डूबेला आ चंद्रमा एह पोर्टल में उगला आ अस्त होला, आ तारा के नेता आ जेकरा के ऊ नेतृत्व करेला, छह गो पूरब में आ छह गो पश्चिम में, आ सभे एक दोसरा के पीछे-पीछे सटीक क्रम में: एह पोर्टल के दाहिना आ बाईं ओर भी कई गो खिड़की।
4. आ पहिले ऊ महान प्रकाशक निकलेला, जेकर नाम सूर्य होला आ ओकर परिधि आकाश के परिधि जइसन होला आ ऊ रोशन आ गरम करे वाला आग से काफी भरल होला।

.

6. एह तरह से ऊ पहिला महीना में महान पोर्टल में उठत बाड़न जवन कलाकारन में ऊ छह गो पोर्टल चउथा ह.
7. आ ओह चउथा पोर्टल में जवना से पहिला महीना में सूरज निकलेला, ओहमें बारह गो खिड़की खुलेला, जवना से जब ऊ अपना मौसम में खुलेला त एगो लौ निकलेला.
8. जब सूरज स्वर्ग में उगेला त ऊ ओह चउथा द्वार से लगातार तीस सबेरे निकलेला आ स्वर्ग के पच्छिम में चउथा पोर्टल में सही डूब जाला.
9. आ एह दौरान दिन रोज लमहर हो जाला आ रात के रात तीसवीं सबेरे ले छोट हो जाला.
10. ओह दिन दिन रात से नौवाँ भाग लमहर होला आ दिन ठीक दस भाग आ रात आठ भाग के होला.

.

12. आ फेर दिन दू भाग लमहर होके एगारह भाग हो जाला आ रात छोट होके सात भाग हो जाला.
13. आ ऊ पूरब के ओर लवट के छठवाँ द्वार में प्रवेश करेला आ अपना निशान के चलते एक-तीस सबेरे छठवाँ द्वार में उठ के अस्त हो जाला।
14. ओह दिन दिन रात से लमहर हो जाला आ दिन रात से दुगुना हो जाला आ दिन बारह भाग हो जाला आ रात छोट हो के छह भाग हो जाला.
15. आ सूरज दिन छोट आ रात के लमहर बनावे खातिर चढ़ जाला आ सूरज पूरब के ओर लवट के छठवाँ द्वार में घुस जाला आ ओकरा से उठ के तीस सबेरे डूब जाला.
16. आ जब तीस भोर पूरा हो जाला त दिन ठीक एक भाग कम हो जाला आ एगारह भाग हो जाला आ रात सात भाग हो जाला.

.

18. ओह दिन दिन दू भाग घट जाला, आ दस भाग आ रात आठ भाग हो जाला।

.

20. ओह दिन दिन रात के बराबर हो जाला आ बराबर लंबाई के हो जाला आ रात नौ भाग आ दिन के नौ भाग हो जाला.

.

22. आ ओह दिन रात दिन से लमहर हो जाला आ रात रात से लमहर हो जाला आ दिन से छोट हो जाला तीसवाँ सबेरे ले आ रात के बराबर दस भाग आ दिन आठ भाग हो जाला.

.

24. आ ओह दिन रात के मात्रा एगारह भाग आ दिन के सात भाग होला.

.

26. आ ओह दिन रात लमहर हो जाले आ दिन के दुगुना हो जाले आ रात ठीक बारह भाग आ दिन छह भाग हो जाले.

.

28. आ ओह रात रात के लंबाई नौवाँ हिस्सा घट गइल बा आ रात एगारह भाग हो गइल बा आ दिन सात भाग हो गइल बा.
29. आ सूरज लवट के पूरब के दुसरका द्वार में घुस गइल बा आ तीस सबेरे अपना कक्षा के ओह लोग पर उगत आ डूबत लवटत बा.
30. आ ओह दिन रात के लंबाई कम हो जाले आ रात दस भाग आ दिन के आठ भाग हो जाले.

.

32. ओह दिन रात घट के नौ भाग हो जाला आ दिन नौ भाग हो जाला आ रात दिन के बराबर हो जाला आ साल ठीक ओइसने होला जइसे ओकर दिन तीन सौ चौंसठ हो जाला.
33. आ दिन आ रात के लंबाई आ दिन आ रात के छोटपन पैदा होला--सूरज के क्रम से ई भेद कइल जाला।
34. त ई आवेला कि ओकर कोर्स रोज लमहर हो जाला, आ ओकर कोर्स रात में छोट हो जाला.

.

36. आ जवन एह तरह से उठत बा ऊ महान प्रकाश ह आ ओकरा रूप का हिसाब से एकर नाम दिहल गइल बा जइसन कि भगवान के आज्ञा दिहल गइल बा.
. बाकिर रहल बात आकार के त दुनु बराबर बा.

अध्याय 73 के बा

1. आ एह नियम के बाद हम एगो अउरी नियम देखनी जवन छोटका प्रकाशक से संबंधित रहे, जवना के नाम चंद्रमा बा।
2. ओकर परिधि आकाश के परिधि जइसन बा आ जवना रथ में ऊ सवार होले ऊ हवा से चलेला आ ओकरा के निश्चित रूप से रोशनी दिहल जाला.
3. आ ओकर उदय आ अस्त हर महीना बदलत रहेला आ ओकर दिन सूरज के दिन जइसन होला आ जब ओकर रोशनी एकरूप होला त ऊ सूरज के रोशनी के सातवाँ हिस्सा के बराबर होला.
4. आ एह तरह से ऊ उठ जाले। आ पूरब में ओकर पहिला चरण तीसवीं सबेरे निकलेला आ ओह दिन ऊ लउकेले आ तीसवाँ दिन रउरा खातिर चंद्रमा के पहिला चरण के गठन करेले जवना में सूरज के साथे ओह पोर्टल में सूरज के निर्माण होला जहाँ सूरज निकलेला.
5. आ ओकर एक आधा हिस्सा सातवाँ हिस्सा आगे बढ़ जाला आ ओकर पूरा परिधि खाली होला, बिना रोशनी के, ओकरा सातवाँ हिस्सा आ रोशनी के चौदहवाँ हिस्सा के छोड़ के.
6. आ जब ओकरा आधा रोशनी के सातवाँ हिस्सा मिलेला त ओकर रोशनी ओकर सातवाँ हिस्सा आ आधा के बराबर हो जाला.

.

8. आ ओह दिन ठीक सातवाँ हिस्सा से उठ के निकल के सूरज के उगला से पीछे हट जाले आ बाकी दिन में बाकी तेरह भाग में उज्ज्वल हो जाले।

अध्याय 74 के बा

1. आ हम एगो अउरी कोर्स देखनी, ओकरा खातिर एगो कानून, आ ओह नियम के अनुसार ऊ कइसे आपन मासिक क्रांति निभावेली।
2. आ ई सब उरीएल, पवित्र स्वर्गदूत जे ओह सब के नेता हवे, हमरा के आ ओह लोग के पद देखवले, आ हम ओह लोग के पद के ओइसहीं लिखनी जइसे ऊ हमरा के देखावत रहले, आ हम ओह लोग के महीना जइसन रहे ओइसने लिखनी आ पन्द्रह दिन तक ओह लोग के रोशनी के रूप पूरा ना हो गइल.
3. एकल सातवाँ भाग में ऊ पूरब में आपन सगरी रोशनी पूरा कर लेत बाड़ी आ एकल सातवाँ भाग में पश्चिम में आपन सगरी अन्हार पूरा कर लेत बाड़ी.
4. आ कुछ महीना में ऊ अपना सेटिंग में बदलाव करेली आ कुछ महीना में ऊ आपन अजीबोगरीब रास्ता अपनावेली.
5. दू महीना में चंद्रमा सूरज के साथे डूब जाला: ओह दुनो बीच के पोर्टल में तीसरा आ चउथा।

.

.

8. आ सात दिन में फेरु से चउथा द्वार में लवट जाले जहाँ से सूरज निकलेला।
9. एह तरह से हम ओह लोग के स्थिति देखनी--कइसे ओह दिनन में चाँद उगले आ सूरज डूबत रहे।

.

11. आ सूरज आ तारा के ओवरप्लस छह दिन के होला: 5 साल में हर साल 6 दिन 30 दिन हो जाला, आ चंद्रमा सूरज आ तारा से पीछे गिर के 30 दिन के संख्या में आ जाला।
. बाकिर सालन के पूरा न्याय से 364 दिन में पूरा कर लीं.
13. 3 साल में 1092 दिन होला, आ 5 साल में 1820 दिन, जेहसे कि 8 साल में 2912 दिन होला.
14. अकेले चंद्रमा खातिर दिन 3 साल में 1062 दिन हो जाला, आ 5 साल में ऊ 50 दिन पीछे पड़ जाले: [यानी (1770 के) योग में (1000 आ) 62 दिन जोड़ल जाला।]
15. आ 5 साल में 1770 दिन होला, जेहसे कि चंद्रमा खातिर 8 साल में दिन 2832 दिन होला.
16. [काहे कि 8 साल में उ 80 दिन के राशि तक पीछे पड़ जाले], 8 साल में जवन दिन पीछे पड़ जाले उ सभ दिन 80 होखेला।
17. आ साल ओह लोग के वर्ल्ड-स्टेशन आ सूरज के स्टेशनन का हिसाब से सही तरीका से पूरा होला, जवन ओह पोर्टल से निकलेला जवना से ऊ (सूरज) 30 दिन के उदय आ अस्त होला.

अध्याय 75 के बा

1. आ हजारन के मुखिया के सरदारन के, जे पूरा सृष्टि पर आ सब तारा पर राखल गइल बा, ओह चार गो अंतराल के दिन से भी संबंध बा, साल के हिसाब से अपना पद से अविभाज्य होखे के, आ ई लोग ओह चार दिन पर सेवा करेला जवन साल के हिसाब में ना गिनल जाला।

.

3. उरिएल स्वर्गदूत हमरा के जवन चिन्ह आ समय आ साल आ दिन देखवले बाड़न, जेकरा के महिमा के प्रभु आकाश के सब प्रकाशमान पर, आकाश आ दुनिया में हमेशा खातिर रखले बाड़न, ताकि ऊ लोग आकाश के मुँह पर राज करस आ धरती पर देखल जा सके, आ दिन आ रात खातिर, यानी सूरज, चाँद, आ तारा आ सभ सेवा करे वाला प्राणी खातिर नेता बनस स्वर्ग के सब रथ में आपन क्रान्ति करऽ।

.

5. आ हवा आ ओस के आत्मा खातिर जब ऊ खुल जाला, छोर पर आकाश में खुलल खड़ा होला।
6. रहल बात आकाश में, धरती के छोर पर, बारह गो द्वार के, जवना से सूरज, चंद्रमा आ तारा आ पूरब आ पश्चिम में आकाश के सब काम निकलेला।
7. ओह लोग के बाईं आ दाईं ओर कई गो खिड़की खुलल बाड़ी सऽ आ एगो खिड़की अपना निर्धारित मौसम में गर्मी पैदा करेले, जइसे कि ई ओह दरवाजा से मेल खात बाड़ी सऽ, जवना से तारा उहाँ के आज्ञा के अनुसार निकलेला, आ जवना में ऊ लोग अपना संख्या के अनुरूप सेट होला।
8. आ हम आकाश में रथ देखनी, जवन दुनिया में दौड़त रहे, ओह द्वारन के ऊपर जवना में तारा घूमेला जवन कबो डूब ना जाला।
9. आ एगो बाकी सब से बड़ होला आ ऊहे होला जवन पूरा दुनिया में आपन राह बनावेला.

अध्याय 76 के बा

1. आ धरती के छोर पर हम बारह गो द्वार देखनी जवन आकाश के चारो ओर खुलल बा, जवना से हवा निकल के धरती पर बहत रहेला।
2. तीन गो आकाश के मुँह पर खुलल बा आ तीन गो पश्चिम में आ तीन गो आकाश के दाहिना ओर आ तीन गो बाईं ओर।
3. आ तीन गो पहिला पूरब के आ तीन गो उत्तर के आ तीन गो दक्खिन के बाईं ओर के आ तीन गो पश्चिम के.

.

5. आ ओह द्वार से पहिला हवा, जवना के पूरब के हवा कहल जाला, पहिला दरवाजा से निकलेला जवन पूरब में बा, जवन दक्षिण के ओर झुकल बा, ओकरा से उजाड़, सूखा, गर्मी आ विनाश निकलेला।
6. आ बीच में दूसरा द्वार से जवन उचित बा उ आवेला आ ओकरा से बरखा आ फल आ समृद्धि आ ओस आवेला। आ तीसरा पोर्टल से जवन उत्तर के ओर पड़ेला, ठंडा आ सूखा आवेला।
7. आ एह सब के बाद दक्खिन के हवा तीन गो द्वार से निकलेले, पूरब के ओर झुकल पहिला द्वार से एगो गरम हवा निकलेले।
8. आ ओकरा बगल के बीच के पोर्टल से सुगंधित गंध, ओस आ बरखा, आ समृद्धि आ स्वास्थ्य निकलेला.
9. आ पश्चिम में पड़े वाला तीसरा द्वार से ओस आ बरखा, टिड्डी आ उजाड़पन निकलेला।
10. एकरा बाद उत्तर के हवा चलेला, पूरब के सातवाँ द्वार से ओस आ बरखा, टिड्डी आ उजाड़पन आवेला।
11. आ बीच के पोर्टल से सीधा दिशा में स्वास्थ्य आ बरखा आ ओस आ समृद्धि आवेला; आ पच्छिम के तीसरा पोर्टल से बादल आ कर्कश-ठंढा, बर्फ आ बरखा, ओस आ टिड्डी आवेला।
12. आ एह [चार गो] के बाद पच्छिम के हवा आवेले, उत्तर से सटल पहिला द्वार से ओस आ कर्कश-ठंढा, आ ठंडा आ बर्फ आ ठंढा निकलेला।
13. आ बीच के द्वार से ओस आ बरखा आ समृद्धि आ आशीर्वाद निकलेला। आ दक्खिन से सटल अंतिम द्वार से सूखा आ उजाड़ आ जरल आ विनाश सामने आवेला।

.

अध्याय 77 के बा

1. आ पहिला चौथाई के पूरब कहल जाला, काहे कि ऊ पहिला ह, आ दूसरा, दक्खिन, काहे कि परमात्मा ओहिजा उतरिहें, हँ, उहाँ एकदम खास अर्थ में ऊ उतर जइहें जे हमेशा खातिर धन्य बा।
2. आ पच्छिम के क्वार्टर के नाम कम भइल बा, काहे कि ओहिजा स्वर्ग के सभ प्रकाश क्षीण हो जाला आ नीचे चल जाला।
3. चउथा चौथाई, जेकर नाम उत्तर रखल गइल बा, तीन भाग में बाँटल गइल बा, पहिला भाग में आदमी के रहे खातिर बा, आ दूसरा में पानी के समुंदर, खाई आ जंगल आ नदी आ अन्हार आ बादल बा। आ तीसरा भाग में धर्म के बगइचा बा।
4. हम सात गो ऊँच पहाड़ देखनी जवन धरती पर मौजूद सब पहाड़न से ऊँच पहाड़ से ऊँच बा आ ओहिजा से ठंढा ठंढा निकलेला आ दिन, मौसम आ साल बीत जाला।
5. हम धरती पर सात गो नदी देखनी जवन सब नदी से बड़ बाड़ी स, ओहमें से एगो नदी पश्चिम से आवत आपन पानी महान सागर में डाल देले।
6. आ ई दुनु उत्तर से समुंदर में आके आपन पानी पूरब में इरिथ्रिया सागर में डाल देले।

.

8. सात गो बड़हन द्वीप हम समुद्र में आ मुख्य भूमि में देखनी: दू गो मुख्य भूमि में आ पांच गो महान सागर में.

अध्याय 78 के बा

1. आ सूरज के नाम निम्नलिखित बा: पहिला ओरजारेस, आ दूसरा टॉमस।
2. आ चंद्रमा के चार गो नाम बा: पहिला नाम असोनजा, दूसरा एबला, तीसरा बेनासे आ चउथा एराए।
3. ई दू गो महान प्रकाशक हवें: इनहन के परिधि आकाश के परिधि नियर होला आ दुनों के परिधि के आकार एकही नियर होला।
4. सूरज के परिधि में सात गो प्रकाश के हिस्सा होला जवन चंद्रमा से अधिका ओकरा में जोड़ल जाला आ निश्चित माप में एकर

स्थानांतरण तबले होला जबले कि सूरज के सातवाँ हिस्सा खतम ना हो जाला।
5. आ ऊ लोग पश्चिम के द्वार पर उतर के घुस जाला आ उत्तर के ओर आपन क्रान्ति करेला आ आकाश के मुँह पर पूरब के द्वार से निकलेला।
6. आ जब चंद्रमा उगेला त एक चौदहवाँ हिस्सा स्वर्ग में लउकेला, ओकरा में रोशनी भरल हो जाला, चौदहवाँ दिन ऊ आपन रोशनी पूरा कर लेले।

.

8. And in her waning the moon decreases on the first day to fourteen parts of her light, on the second to thirteen parts of light, on the third to twelve, on the fourth to eleven, on the fifth to ten, on the sixth to nine, on the seventh to eight, on the eighth to seven, on the ninth to six, on the tenth to five, on the eleventh to four, on the बारहवाँ से तीन, तेरहवाँ से दू, चौदहवाँ से सातवाँ के आधा आ पन्द्रहवाँ के ओकर सगरी बचे वाला रोशनी पूरा तरह से गायब हो जाला.
9. आ कुछ खास महीना में महीना के उन्नीस दिन आ एक बेर अट्ठाईस दिन होला.
10. आ उरिएल हमरा के एगो अउरी नियम देखवले कि जब प्रकाश चंद्रमा में स्थानांतरित होला आ कवना ओर सूरज ओकरा में स्थानांतरित होला।

.

12. आ पहिला दिन ओकरा के अमावस्या कहल जाला, काहे कि ओह दिन ओकरा पर रोशनी उठेला।

.

14. जवना तरफ से चाँद के रोशनी निकलेला, ओहिजा फेरु से ऊ तबले कम हो जाले जबले कि सगरी रोशनी ना खतम हो जाव आ महीना के सगरी दिन खतम ना हो जाव आ ओकर परिधि खाली ना हो जाव, रोशनी से शून्य हो जाव.

.

16. आ बाहर निकले के समय ऊ तीस-तीस दिन के तीन महीना खातिर आ तीन महीना ले ऊ उनइस दिन के प्रकट होखेली।
17. रात में हर बेर बीस दिन तक आदमी निहन लउकेली अवुरी दिन में स्वर्ग निहन प्रकट होखेली अवुरी उनुका रोशनी के अलावे अवुरी कुछूओ नईखे।

अध्याय 79 के बा

1. अब हे बेटा, हम तोहरा के सब कुछ देखा देले बानी, आ आकाश के सब तारा के नियम पूरा हो गईल बा।
2. ऊ हमरा के हर दिन, शासन के हर मौसम, आ हर साल, ओकरा आगे बढ़े खातिर आ हर महीना आ हर हफ्ता एकरा खातिर निर्धारित क्रम खातिर एह सब के नियम देखा दिहलन।
3. आ चंद्रमा के क्षीण जवन छठवाँ द्वार में होला, काहे कि एह छठवाँ द्वार में ओकर प्रकाश पूरा हो जाला आ ओकरा बाद क्षीण होखे के शुरुआत होला।
4. आ जवन घटाव अपना मौसम में पहिला पोर्टल में होला, जबले कि एक सौ सत्तर दिन पूरा ना हो जाला, ओकरा के हफ्ता, पच्चीस हफ्ता आ दू दिन के हिसाब से गिनल जाला।
5. ऊ एक अवधि के दौरान ठीक पांच दिन सूरज आ तारा के क्रम से पीछे गिर जाले, आ जब ई जगह जवन तू देखत बाड़ऽ ओकरा के पार हो गइल होखे।
6. हर प्रकाशमान के चित्र आ स्केच अइसने बा जवन उरिएल महादूत, जे ओह लोग के नेता हउवें, हमरा के देखवले रहले.

अध्याय 80 के बा

1. आ ओह दिनन में उरीएल स्वर्गदूत जवाब दिहलन आ हमरा से कहलन कि देखऽ, हम तोहरा के सब कुछ देखा देले बानी, हनोक, आ हम तोहरा के सब कुछ बता देले बानी कि तू एह सूरज आ ई चंद्रमा के, आ आकाश के तारा के नेता लोग आ ओकरा के घुमावे वाला सब लोग के, ओह लोग के काम आ समय आ जाए वाला लोग के देखब।
2. आ पापी लोग के दिन में साल छोट हो जाई, आ ओह लोग के संतान ओह लोग के जमीन आ खेत में देरी हो जाई, आ धरती के सब चीज बदल जाई, आ अपना समय में ना लउकी, आ बरखा के रोकल जाई, आ आकाश ओकरा के रोकल जाई।
3. आ ओह समय में धरती के फल पिछड़ल रही, आ अपना समय में ना बढ़ी, आ पेड़न के फल अपना समय में रोकल जाई।
4. आ चाँद अपना क्रम में बदलाव करी, आ अपना समय ना लउकी।
5. आ ओह दिनन में सूरज देखल जाई आ ऊ साँझ के पश्चिम में बड़हन रथ के छोर पर यात्रा करी आ प्रकाश के क्रम से अधिका चमकी.
6. आ तारा के कई गो मुखिया निर्धारित क्रम के उल्लंघन करीहें। आ ई लोग अपना कक्षा आ काम में बदलाव करी आ ओह लोग के निर्धारित मौसम में ना लउकी.

.

8. आ ओह लोग पर बुराई बढ़ जाई आ ओह लोग पर सजा अइसन आई कि सबके नाश हो जाई.'

अध्याय 81 के बा

1. आ ऊ हमरा से कहले, 'हनोक, एह स्वर्गीय पाटी के पालन करीं आ ओह पर जवन लिखल बा ओकरा के पढ़ीं आ हर व्यक्तिगत तथ्य के निशान लगाईं.'
2. हम स्वर्ग के पाटी के पालन कइनी, आ ओह पर लिखल सब कुछ पढ़नी आ सब कुछ समझनी, आ मनुष्य के सब काम के किताब पढ़नी आ धरती पर होखे वाला सब शरीर के संतान के किताब पढ़नी जवन दूर-दूर तक के पीढ़ी तक होई।

.

4. आ ओकरा बाद हम कहनी कि धन्य बा ऊ आदमी जे धार्मिकता आ भलाई में मर जाला, जेकरा बारे में अधर्म के कवनो किताब नइखे लिखल गइल आ ओकरा खिलाफ कवनो न्याय के दिन ना मिल पाई.'
5. आ ऊ सात गो पवित्र लोग हमरा के लेके हमरा घर के दुआर के सामने धरती पर रख दिहल आ हमरा से कहल कि, 'अपना बेटा मथुसेल के सब कुछ बताईं आ अपना सभ लइकन के देखाईं कि प्रभु के नजर में कवनो मांस धर्मी नइखे, काहे कि ऊ ओह लोग के रचयिता हवें।'
. दूसरा साल में तोहरा के अपना बीच से ले जईहे।

7. तोहार मन मजबूत होखे, काहे कि नीमन लोग नीमन के धार्मिकता के घोषणा करी। धर्मी लोग के साथे धर्मात्मा लोग आनन्दित होई, आ एक दूसरा के बधाई देत होई।
8. बाकिर पापी पापी लोग के साथे मर जइहें आ धर्मत्यागी धर्मत्यागी के साथे उतर जइहें।
9. आ धर्म के पालन करे वाला लोग आदमी के काम के चलते मर जाई, अवुरी अभक्त के काम के चलते ले जाइल जाई।'
10. आ ओह दिनन में ऊ लोग हमरा से बात कइल छोड़ दिहल आ हम अपना लोग का लगे दुनिया के प्रभु के आशीष देत आ गइनी.

अध्याय 82 के बा

1. अब हे हमार बेटा मथुसेला, हम ई सब बात तोहरा के बतावत बानी आ तोहरा खातिर लिखत बानी आ हम तोहरा के सब कुछ बता देले बानी आ एह सब के बारे में तोहरा के किताब देले बानी।

.

3. आ जे एकरा के समझत बा ऊ ना सुतत बा, बलुक कान से सुनत होई कि ऊ लोग ई बुद्धि सीख सके, आ एकरा के खाए वाला लोग के ई बढ़िया भोजन से बढ़िया नीक लागी.
4. Blessed are all the righteous, blessed are all those who walk in the way of righteousness and sin not as the sinners, in the reckoning of all their days in which the sun traverses the heaven, entering into and departing from the portals for thirty days with the heads of thousands of the order of the stars, together with the four which are intercalated which divide the four portions of the year, which lead them and enter चार दिन के साथे ओह लोग के साथे।

.

.

7. आ ओकर लेखा-जोखा सही बा आ ओकर दर्ज हिसाब सटीक बा; काहे कि उरिएल हमरा के प्रकाशमान, महीना, परब, आ साल आ दिन के देखा दिहले बाड़न आ प्रगट कइले बाड़न, जेकरा अधीन दुनिया के पूरा सृष्टि के प्रभु स्वर्ग के सेना के अधीन कइले बाड़न।
8. आ ओकरा आकाश में रात-दिन पर शक्ति बा कि ऊ आदमी के रोशनी दे सके--सूरज, चंद्रमा आ तारा आ आकाश के सगरी शक्ति जवन अपना गोलाकार रथ में घूमेला.
9. आ ई तारा के क्रम ह जवन अपना जगह पर आ अपना मौसम आ परब आ महीना में डूबत बा.
10. आ ई ओह लोग के नाम ह जे ओह लोग के अगुवाई करेला, जे देखत रहेला कि ऊ लोग अपना समय में, अपना क्रम में, अपना मौसम में, अपना महीना में, अपना शासन काल में आ अपना पद पर प्रवेश करेला.
11. साल के चार भाग के बाँटे वाला ओह लोग के चार गो नेता पहिले प्रवेश करेलें; आ ओह लोग के बाद महीना के बँटवारा करे वाला आर्डर के बारह गो नेता; आ तीन सौ साठ दिन ले हजारन लोग के सिर बा जे दिन के बँटवारा करेला। आ चार गो इंटरकैलेरी दिन खातिर ऊ नेता लोग होला जे साल के चार गो हिस्सा के अलगा करे ला।
12. आ हजारन से अधिका के ई सिर नेता आ नेता का बीच में घुसल बाड़े, हर केहू एगो स्टेशन का पीछे, बाकिर ओह लोग के नेता बंटवारा बनावेलें. आ ई ओह नेता लोग के नाम ह जे साल के चार गो हिस्सा के बाँटेला जवन नियुक्ति होला: मिल्की'एल, हेल'एम्मेलेक, आ मेलेजल, आ नारेल।

.

14. आ एगो अइसन बा जवन ओह आदेशन के तीन गो नेता लोग के पालन करेला जवन ओह स्टेशनन के नेता लोग के पालन करेला जवन साल के चार गो हिस्सा के बाँटेला.

.

16. आ उनकर शासन के दिन में धरती पर जवन दिन लउके वाला बा ओकर निशानी इहे ह: पसीना, गर्मी आ शांति; आ सब पेड़ फल देला आ सब पेड़ पर पतई निकलेला, गेहूं आ गुलाब के फूल के कटाई आ खेत में निकले वाला सब फूल, लेकिन जाड़ा के मौसम के पेड़ मुरझा जाला।

.

18. ओकरा बाद अगिला नेता हेलेमेलेक हवें, जेकरा के केहू चमकत सूरज के नाम देला आ ओकर रोशनी के सगरी दिन एकानबे दिन होला.

.

.

अध्याय 83 के बा

1. अब, हमार बेटा मथुसेल, हम तोहरा के आपन सब दर्शन देखा देब जवन हम देखले बानी, ओकरा के तोहरा सामने बतावत बानी।
2. दू गो दर्शन हम मेहरारू लेबे से पहिले देखले रहनी आ एगो दोसरा से बिल्कुल अलग रहे: पहिला जब हम लिखल सीखत रहनी: दूसरा जब हम तोहरा माई के लेबे से पहिले, जब हम एगो भयानक दर्शन देखनी। आ ओह लोग के बारे में हम प्रभु से प्रार्थना कइनी।
3. हम अपना के दादा महलालेल के घर में सुता देले रहनी, तबे हम एगो दर्शन में देखनी कि कइसे आकाश ढह गईल अवुरी बह गईल अवुरी धरती प गिर गईल।

.

5. आ तब हमरा मुँह में एगो शब्द गिरल आ हम जोर से चिल्लाए के आवाज उठवनी आ कहनी कि धरती नष्ट हो गइल बा.
6. आ हमार दादा महलालेल हमरा के अपना लगे लेटत जगवले आ हमरा से कहले, 'हे बेटा, तू अतना काहे रोवत बाड़ू, आ अतना विलाप काहे करत बाड़ू?'

.

8. अब हे बेटा, उठ के महिमा के प्रभु से निहोरा करऽ, काहे कि तू एगो विश्वासी हउअ, कि धरती पर एगो अवशेष रह जाव आ ऊ पूरा धरती के नाश ना कर देव.
9. बेटा, स्वर्ग से ई सब धरती पर आ जाई आ धरती पर बहुते विनाश होई।
10. ओकरा बाद हम उठ के प्रार्थना कइनी आ निहोरा कइनी आ निहोरा कइनी आ दुनिया के पीढ़ियन खातिर आपन प्रार्थना लिखनी आ हम तोहरा के सब कुछ देखा देब, हमार बेटा मथुसेल।

11. जब हम नीचे जाके आकाश, पूरब में सूरज के उगत, पश्चिम में चंद्रमा के डूबत देखनी, कुछ तारा, पूरा धरती आ सब कुछ जइसन कि उ शुरू में जानत रहले, त हम न्याय के प्रभु के आशीर्वाद देनी अवुरी उनुकर बड़ाई कईनी, काहेंकी उ पूरब के खिड़की से सूरज के निकलले रहले अवुरी उ चढ़ के उगले रहले स्वर्ग से निकल गइलन आ ओकरा के देखावल रास्ता के पार करत रहले.

अध्याय 84 के बा

1. हम धार्मिकता में आपन हाथ उठा के पवित्र आ महान के आशीष दिहनी आ अपना मुँह के साँस से आ मांस के जीभ से बोलनी जवन भगवान आदमी के मांस के संतान खातिर बनवले बाड़न कि ऊ लोग ओकरा से बोले आ ऊ ओह लोग के साँस आ जीभ आ मुँह दिहलन जवना से ऊ लोग बोल सके.
2. 'हे प्रभु, राजा, अपना महानता में महान आ पराक्रमी, स्वर्ग के समस्त सृष्टि के मालिक, राजा लोग के राजा आ पूरा दुनिया के भगवान तू धन्य हो।' आ तोहार शक्ति आ राजा आ महानता हमेशा से हमेशा खातिर रहेला, आ हर पीढ़ी में तोहार प्रभुत्व। आ सब आकाश हमेशा खातिर तोहार सिंहासन ह, आ पूरा धरती हमेशा खातिर तोहार गोड़ के अड्डा ह।
3. काहे कि तू सब कुछ बनवले बाड़ू आ तू राज करत बाड़ू, आ तोहरा खातिर कवनो चीज बहुते कठिन नइखे, बुद्धि तोहरा सिंहासन के जगह से ना हटत बा, ना तोहरा सान्निध्य से मुड़त बाड़ू। आ तू सब कुछ जानत बाड़ू आ देखत बाड़ू आ सुनत बाड़ू, आ तोहरा से कुछुओ छिपल नइखे काहे कि तू सब कुछ देखत बाड़ू।
4. आ अब तोहार आकाश के स्वर्गदूत अपराध के दोषी बाड़े, आ तोहार क्रोध आदमी के शरीर पर न्याय के बड़हन दिन तक रहेला।
5. आ अब हे भगवान आ प्रभु आ महान राजा, हम तोहरा से निहोरा करत बानी आ निहोरा करत बानी कि हमार प्रार्थना पूरा करीं, हमरा के धरती पर एगो वंशज छोड़ दीं, आ आदमी के सगरी मांस के नाश मत करीं, आ धरती के बिना निवासी के बनाईं, जेहसे कि अनन्त विनाश होखे.
.

अध्याय 85 के बा

1. आ एकरा बाद हम एगो अउरी सपना देखनी आ पूरा सपना तोहरा के देखा देब, बेटा।
2. हनोक आवाज उठा के अपना बेटा मथुसेला से कहले, 'हे बेटा, हम तोहरा से बात करब, हमार बात सुनऽ--अपना बाप के सपना के दर्शन के ओर आपन कान झुका द।'
3. तोहार माई एडना के ले जाए से पहिले हम एगो दर्शन में अपना बिछौना पर देखनी आ देखनी कि धरती से एगो बैल निकलल रहे आ ऊ बैल उज्जर रहे। आ ओकरा बाद एगो बछिया निकलल आ एह बाद वाला के साथे दू गो बैल भी निकलल, जवना में से एगो करिया आ दोसरका लाल.
4. आ ऊ करिया बैल लाल बैल के गोली मार के धरती पर पीछा कइलस आ ओकरा बाद हम ओह लाल बैल के अब ना देख पवनी।
5. बाकिर ऊ करिया बैल बढ़ल आ ऊ बछिया ओकरा साथे चल गइल आ हम देखनी कि ओकरा से बहुते बैल निकलल जवन ओकरा से मिलत जुलत आ ओकरा पीछे-पीछे चलत रहे.
6. ऊ गाय, ऊ पहिला, ओह पहिला बैल के सामने से ओह लाल बैल के खोजे खातिर चल गइल, बाकिर ओकरा के ना मिलल आ ओकरा पर बहुते विलाप करत ओकरा के खोजत गइल.
7. आ हम तब तक देखनी जब तक कि ऊ पहिला बैल ओकरा लगे आके ओकरा के शांत कर दिहलस, आ तब से ऊ अब ना रोवलस।
8. आ ओकरा बाद ऊ एगो अउरी सफेद बैल पैदा कइली आ ओकरा बाद ऊ बहुते बैल आ करिया गाय पैदा कइली.
9. हम नींद में देखनी कि उज्जर बैल भी ओइसहीं बढ़ के एगो बड़हन सफेद बैल बन जाला आ ओकरा से कई गो सफेद बैल निकलल आ ऊ ओकरा से मिलत जुलत रहे। आ ओह लोग से कई गो सफेद बैल पैदा होखे लागल जवन ओह लोग से मिलत जुलत रहे, एक के पीछे एक दोसरा के, इहाँ तक कि कई गो.

अध्याय 86 के बा

.
2. आ ओकरा बाद हम बड़का आ करिया बैल देखनी आ देखनी कि ऊ सब आपन ठेला आ चारागाह आ मवेशी बदल के एक दोसरा का साथे रहे लागल.
3. हम फेर से दर्शन में देखनी आ आकाश के ओर देखनी आ देखनी कि कई गो तारा स्वर्ग से उतर के ओह पहिला तारा के ओर गिरत रहले आ ऊ लोग ओह मवेशी के बीच बैल बन के ओह लोग के साथे चरागाह करत रहे।
.
5. सब बैल ओ लोग से डेरा गईले अवुरी ओ लोग से डेरा गईले अवुरी दांत से काट के खाए लगले अवुरी सींग से चोट करे लगले।
6. आउर उ लोग ओह बैल के खाए लगले। आ देखऽ, धरती के सब लइका ओह लोग के सामने काँपे लगले आ काँपे लगले आ ओह लोग से भागे लगले।

अध्याय 87 के बा

1. आ फेरु देखनी कि कइसे ऊ लोग एक दोसरा के गोली मारे लागल आ एक दोसरा के खाए लागल आ धरती जोर से रोवे लागल.
.
3. आ ऊ तीनों जे आखिरी बेर निकलल रहले, हमरा हाथ से पकड़ के हमरा के धरती के पीढ़ियन से दूर ले गइल आ हमरा के एगो ऊँच जगह पर ले गइल आ धरती से ऊँच एगो बुर्ज देखवलसि आ सगरी पहाड़ी नीचे रहे.
4. आ एगो हमरा से कहलस कि जबले तू ओह हाथी, ऊंट आ गदहा, तारा आ बैल आ ओह सब पर होखे वाला सब कुछ ना देखब तबले एहिजा रहऽ.'

अध्याय 88 के बा

1. हम ओह चार गो में से एगो के देखनी जे पहिले निकलल रहे आ ऊ ओह पहिला तारा के पकड़ के जवन आकाश से गिरल रहे

आ ओकरा के हाथ-गोड़ बान्ह के एगो खाई में फेंक दिहलस, अब ऊ खाई संकरी आ गहिराह आ भयावह आ अन्हार हो गइल रहे।
2. ओहमें से एगो तलवार निकाल के ओह हाथी आ ऊंट आ गदहा के दे दिहलसि तब ऊ लोग एक दोसरा के मारे लागल आ ओह लोग का चलते पूरा धरती काँप गइल.
3. जब हम दर्शन में देखत रहनी त देखऽ, जे चारो लोग निकलल रहे, ओहमें से एगो ओह लोग के स्वर्ग से पत्थर मार दिहलस आ ओह सब महान तारा के बटोर के ले लिहलस जवना के अंग घोड़ा नियर रहे आ सभका हाथ-गोड़ बान्ह के धरती के एगो खाई में फेंक दिहलस।

अध्याय 89 के बा

1. ओह चारो में से एगो ओह सफेद बैल के लगे जाके ओकरा के गुप्त रूप से शिक्षा दिहलस, बिना ऊ डेरा के, ऊ बैल पैदा होके आदमी बन गइल आ अपना खातिर एगो बड़हन बर्तन बना के ओकरा पर रह गइल। आ ओकरा साथे तीन गो बैल ओह बर्तन में रहत रहले आ ऊ लोग ओकरा में ढंकल रहे.
2. हम फेर से आपन आँख आकाश के ओर उठवनी त देखनी कि एगो ऊँच छत रहे, जवना पर सात गो पानी के धार रहे आ ऊ धार बहुत पानी के साथे एगो बाड़े में बहत रहे।

.

4. पानी, अन्हार आ धुंध ओकरा पर बढ़ल; आ जब हम ओह पानी के ऊँचाई के देखनी त ऊ पानी ओह बाड़े के ऊँचाई से ऊपर उठ गइल रहे आ ओह घेरा पर बहत रहे आ ऊ धरती पर खड़ा हो गइल रहे.
5. आ ओह घेरा के सब मवेशी एकट्ठा हो गइल जबले हम ना देखनी कि ऊ कइसे डूब गइल आ ओह पानी में निगल गइल आ नाश हो गइल.

.

7. आ फेरु हम दर्शन में देखनी जब तक कि ऊ पानी के धार ओह ऊँच छत से ना हट गइल आ धरती के खाई समतल ना हो गइल आ अउरी खाई ना खुल गइल।
8. तब पानी एह सब में नीचे बहे लागल, जब तक कि धरती ना लउकल; बाकिर ऊ बर्तन धरती पर बस गइल आ अन्हार रिटायर हो गइल आ रोशनी लउकल.
9. बाकिर ऊ सफेद बैल जवन आदमी बन गइल रहे ऊ ओह बर्तन से निकलल आ ओकरा साथे तीन गो बैल आ ओह तीनों में से एगो बैल जइसन उज्जर रहे आ ओहमें से एगो खून नियर लाल आ एगो करिया रहे आ ऊ सफेद बैल ओह लोग से चल गइल.

10-27 के बा। नूह के मौत से लेके पलायन तक।

10. ऊ लोग खेत के जानवर आ चिरई पैदा करे लागल जवना से अलग अलग वंश पैदा भइल: शेर, बाघ, भेड़िया, कुकुर, हाइना, जंगली सुअर, लोमड़ी, गिलहरी, सुअर, बाज, गिद्ध, पतंग, चील आ काग; आ ओह लोग में एगो उज्जर बैल पैदा भइल।
11. आ ऊ लोग एक दोसरा के काटे लागल; बाकिर ऊ सफेद बैल जवन ओह लोग का बीच पैदा भइल रहे ओकरा से एगो जंगली गदहा आ एगो सफेद बैल पैदा भइल आ जंगली गदहा बढ़ गइल.
12. बाकिर ओकरा से पैदा भइल बैल के एगो करिया जंगली सुअर आ एगो सफेद भेड़ के जनम भइल. पहिलका से बहुते सूअर भइल बाकिर ओह भेड़ से बारह गो भेड़ भइल.
13. जब ऊ बारह गो भेड़ बढ़ गइल त ओहमें से एगो भेड़ गदहा के दे दिहलसि आ ऊ गदहा फेर से ओह भेड़ के भेड़िया के दे दिहलसि आ ऊ भेड़ भेड़ियन का बीच में बढ़ गइल.

.

.

16. भेड़िया से बचावल एगो भेड़ भाग के जंगली गदहा के लगे भाग गईल। आ हम देखनी कि भेड़न के कइसे विलाप करत रहे आ चिल्लात रहे आ अपना प्रभु से पूरा ताकत से निहोरा करत रहे, जबले कि ऊ भेड़न के मालिक एगो ऊँच निवास से भेड़न के आवाज पर उतर के ओह लोग का लगे आके ओह लोग के चरा ना गइल.
17. ऊ ओह भेड़न के बोलवले जवन भेड़िया से बच गइल रहे आ ओकरा से भेड़िया के बारे में बात कइलन कि ऊ ओह भेड़न के भेड़न के ना छूवे के सलाह देसु.

.

19. तब हम भेड़िया के देखनी कि कइसे ऊ लोग अपना पूरा ताकत से भेड़न पर बहुते अत्याचार करत रहे. आ भेड़ जोर से चिल्ला उठल।
20. प्रभु भेड़न के लगे अइले आ ऊ लोग ओह भेड़ियन के मारे लागल आ भेड़िया विलाप करे लगले। बाकिर भेड़ चुप हो गइल आ तुरते चिल्लाहट छोड़ दिहलसि.
21. हम भेड़न के तब तक देखनी जब तक कि उ भेड़िया के बीच से ना चल गईल। बाकिर भेड़िया के आँख आन्हर हो गइल आ ऊ भेड़िया अपना पूरा ताकत से भेड़न के पीछा करत चल गइले.

.

23. बाकिर भेड़िया ओह भेड़न के पीछा करे लगले जबले ऊ पानी के समुंदर ना चहुँप गइल.

.

.

.

27. हम देखनी जब तक कि ओह भेड़न के पीछा करे वाला सब भेड़िया नाश ना हो गइल आ डूब गइल।

28-40 के बा। रेगिस्तान में इजरायल, कानून दिहल, फिलिस्तीन में प्रवेश।

28. बाकिर भेड़ ओह पानी से बच के एगो जंगल में चल गइली जहाँ पानी ना रहे आ घास ना रहे। आ उ लोग आपन आँख खोल के देखे लगले। हम देखनी कि भेड़न के मालिक ओह लोग के चरावत बाड़े आ पानी आ घास देत बाड़े आ ऊ भेड़न के जाके ओह लोग के अगुवाई करत बाड़े.
29. ऊ भेड़ ओह ऊँच चट्टान के चोटी पर चढ़ गइल आ भेड़न के मालिक ओकरा के ओह लोग का लगे भेज दिहलसि.
30. ओकरा बाद हम ओह भेड़न के मालिक के देखनी जे ओह लोग का सोझा खड़ा रहले आ उनुकर रूप बड़हन आ भयानक आ राजसी रहे आ ऊ सब भेड़ उनुका के देख के उनुका चेहरा का सोझा डेराइल रहली.

.

.

.
34. जब ऊ लोग एकरा के देखले त ओकरा सामने से डेरा गइल आ काँप गइल आ अपना गुच्छा में लवटे के मन कइल.
35. ऊ भेड़ अपना साथे दोसरा भेड़न के लेके गिरल भेड़न का लगे आके ओह भेड़न के मारे लागल. आ भेड़ ओकरा मौजूदगी से डेरा गइल आ एह तरह से ऊ भेड़ ओह भेड़न के वापस ले आइल जवन गिर गइल रहे आ ऊ लोग अपना झुंड में लवट गइल.
36. हम एह दर्शन में तब तक देखनी जब तक कि भेड़ आदमी ना बन गईल अवुरी भेड़ के मालिक खाती घर बनवली अवुरी सभ भेड़ के ओ घर में रख देलस।

.

.

.

. आ ऊ घर ओह लोग के बीच में सुखद भूमि में खड़ा रहे।

41-50 के बा। न्यायाधीश लोग के समय से लेके मंदिर के निर्माण तक।

.
42. कुकुर आ लोमड़ी आ जंगली सुअर ओह भेड़न के तबले खाए लगले जबले कि भेड़न के मालिक ओह लोग का बीच से एगो अउरी भेड़ ना उठवले जवन ओह लोग के ले गइल.
43. आ ऊ मेढ़ा ओह कुकुरन, लोमड़ी आ जंगली सूअरन के दुनु तरफ से तबले मारे लागल जबले ऊ ओह सब के नाश ना कर लिहलसि.

.

.
46. ऊ ओकरा लगे जाके अकेले ओकरा से बात कइलस आ ओकरा के मेढ़ा बना के ओकरा के भेड़न के राजकुमार आ सरदार बना दिहलसि. बाकिर एह सब के दौरान ऊ कुकुर भेड़न पर अत्याचार करत रहले.
47. पहिला मेढ़ा ओह दुसरका मेढ़ के पीछा कइलसि आ ऊ दुसरका मेढ़ा उठ के ओकरा सोझा भाग गइल. आ हम देखनी कि जबले ऊ कुकुरन पहिला मेढ़क के नीचे ना खींच लिहले.
48. ऊ दूसरका मेढ़ा उठ के छोट भेड़न के ले गइल।
49. आ ऊ भेड़ बढ़ल आ बढ़त गइल। बाकिर सब कुकुर, लोमड़ी आ जंगली सुअर डेरा के ओकरा सोझा भाग गइलें आ ऊ मेढ़ा जंगली जानवरन के टक्कर मार के मार दिहलसि आ ओह जंगली जानवरन के अब भेड़न में कवनो ताकत ना रह गइल आ ऊ ओह लोग से अब कवनो ना लूट लिहलसि. ऊ मेढ़ा के ढेर भेड़ पैदा भइल आ ऊ सुत गइल। ओकरा जगहा एगो छोट भेड़ मेढ़क बन गइल आ ओह भेड़न के राजकुमार आ सरदार बन गइल।

.

51-67 के बा। इस्राएल आ यहूदा के दू गो राज्य, यरूशलेम के विनाश तक।

51. आ फेरु हम ओह भेड़न के देखनी कि ऊ लोग फेरु से गलती कर के कई रास्ता से चल गइल आ अपना घर के छोड़ दिहल आ भेड़न के मालिक भेड़न के बीच से कुछ लोग के बोला के भेड़न के लगे भेज दिहलस, बाकिर भेड़ ओह लोग के मारे लगली।
52. ओहमें से एगो के उद्धार हो गइल आ ओकरा के ना मारल गइल आ ऊ भेड़न पर जोर से चिल्ला उठल. ऊ लोग ओकरा के मारे के कोशिश कइल बाकिर भेड़न के मालिक ओकरा के भेड़न से बचा के हमरा लगे ले अइले आ ओकरा के ओहिजा बसावे के काम कर दिहलन.
53. आ अउरी कई गो भेड़न के ऊ ओह भेड़न के लगे भेजलन कि ऊ ओह भेड़न के गवाही देसु आ ओह लोग पर विलाप करसु.
54. आ ओकरा बाद हम देखनी कि जब ऊ लोग प्रभु के घर आ उनकर बुर्ज छोड़ दिहल त ऊ लोग पूरा तरह से गिर गइल आ ओह लोग के आँख आन्हर हो गइल. आ हम भेड़न के मालिक के देखनी कि कइसे ऊ ओह लोग के झुंड में ओह लोग का बीच बहुते कत्ल करत रहले जबले कि ऊ भेड़ ओह वध खातिर ना बोलवले आ अपना जगह के धोखा ना दे दिहले.
55. आ ऊ ओह लोग के शेर आ बाघ, भेड़िया आ हाइना आ लोमड़ी आ सगरी जंगली जानवरन के हाथ में सौंप दिहलन आ ऊ जंगली जानवर ओह भेड़न के टुकड़ा-टुकड़ा करे लगले.

.
57. आ हम अपना पूरा ताकत से जोर से चिल्लाए लगनी आ भेड़न के मालिक से निहोरा करे लगनी आ ओह भेड़न का बारे में उनुका से प्रतिनिधित्व करे लगनी कि ऊ सब जंगली जानवर खा गइल बाड़ी सँ.

.

.

.

.

.

.

.

.
66. शेर आ बाघ ओह भेड़न के अधिकतर हिस्सा के खा के खा गइलन आ जंगली सुअर ओह लोग का साथे खात बाड़े. आ ऊ लोग ओह बुर्ज के जरा के ओह घर के गिरा दिहल.
67. आ हम ओह बुर्ज पर बहुते दुखी हो गइनी काहे कि ऊ भेड़न के घर गिर गइल आ ओकरा बाद हम ई ना देख पवनी कि ऊ भेड़ ओह घर में घुसल बाड़ी सँ कि ना.

68-71 के बा। स्वर्गदूत शासकन के पहिला काल--यरूशलेम के विनाश से लेके कैद से वापसी तक।

68. चरवाहा आ ओह लोग के साथी ओह भेड़न के सब जंगली जानवरन के खाए खातिर सौंप दिहले आ ओहमें से हर एक के अपना समय में एगो निश्चित संख्या मिलल.
69. आ हर केहू निर्धारित से अधिका के मार दिहलसि आ नष्ट कर दिहलसि. आ हम ओह भेड़न के चलते रोवे लगनी आ विलाप करे लगनी।

.
71. भेड़न के मालिक के सामने किताब पढ़ल गइल आ ऊ किताब अपना हाथ से लेके पढ़ के मुहर लगा के बिछा दिहलन.

72-77 के बा। दूसरा काल--साइरस के समय से लेके सिकंदर महान के समय तक।

. बाकिर जंगली सुअर ओह लोग के रोके के कोशिश कइलन बाकिर ऊ लोग ना रोक पवलसि.
73. ऊ लोग फेर से पहिले जइसन बनावे लागल आ ऊ लोग ओह बुर्ज के खड़ा कइल आ ओकर नाम ऊँच बुर्ज राखल गइल. उ लोग फेर से बुर्ज के सोझा एगो मेज रखे लगले, लेकिन ओकरा प लागल सभ रोटी गंदा हो गईल रहे अवुरी शुद्ध ना रहे।
74. एह सब के बारे में ओह भेड़न के आँख आन्हर हो गइल कि ऊ लोग ना देखल आ ओह लोग के चरवाहन के आँख भी ओइसहीं. आ ऊ लोग ओह लोग के ढेर संख्या में अपना चरवाहन के नाश खातिर सौंप दिहल आ ऊ लोग भेड़न के गोड़ से रौंद के खा गइल.

.

.

77. आ ऊ असली किताब लेके अपना बगल में रख के चल गइलन.

अध्याय 90 के बा

1-5 के बा। तीसरा काल--सिकंदर महान से ले के ग्रीक-सीरियाई वर्चस्व तक।

1. हम देखनी कि एह तरह से पैंतीस गो चरवाहा भेड़न के चरावे के काम शुरू कर दिहले आ ऊ लोग कई बेर आपन अवधि पूरा कर लिहल जइसे पहिला लोग कइले रहे. आ कुछ लोग ओह लोग के अपना समय खातिर चरावे खातिर अपना हाथ में ले लिहल, हर चरवाहा अपना समय में.
2. आ ओकरा बाद हम अपना दर्शन में स्वर्ग के सब चिरई आवत देखनी, चील, गिद्ध, पतंग, काग। बाकिर चील सभ चिरई के अगुवाई करत रहले। ऊ लोग ओह भेड़न के खाए लागल आ ओह लोग के आँख उठा के ओह लोग के मांस खाए लागल.
3. आ भेड़ चिल्लात रहे काहे कि ओह लोग के मांस चिरई खात रहे आ हम नींद में ओह चरवाहा के देखत आ विलाप करत रहनी।
4. हम देखनी जब तक कि ऊ भेड़ कुकुर आ चील आ पतंग ना खा गइल आ ना त मांस ना चमड़ी ना चमड़ी ना रह गइल जबले कि ओकर हड्डी खड़ा ना हो गइल आ ओकर हड्डी भी धरती पर गिर गइल आ भेड़ कम हो गइल।
5. आ हम देखनी कि जबले तेइस लोग चारागाह के काम ना कर लिहले रहे आ अपना कई गो अवधि में अड़वन बेर पूरा ना हो गइल रहे.

6-12 के बा। चउथा काल--ग्रीक-सीरियाई वर्चस्व से लेके मक्काबियन विद्रोह तक।

6. बाकिर देखऽ, ऊ सफेद भेड़न के मेमना के उठावल गइल आ ऊ लोग आँख खोल के देखे लागल आ भेड़न से रोवे लागल।
7. हँ, ऊ लोग ओह लोग से चिल्लात रहे बाकिर ऊ लोग ओह लोग से कहल बात ना सुनल बाकिर बहुते बहिर हो गइल आ आँख बहुते आन्हर हो गइल.
8. हम दर्शन में देखनी कि कइसे काग ओह मेमना पर उड़ के ओह मेमना में से एगो के लेके भेड़न के टुकड़ा-टुकड़ा क के खा गइल।
9. हम देखनी कि जब तक ओह मेमना पर सींग ना बढ़ल आ काग आपन सींग गिरा ना दिहलस। हम देखनी कि जबले ओह भेड़न में से एगो भेड़ के एगो बड़हन सींग ना अंकुरित हो गइल आ ओह लोग के आँख खुल गइल.

.

11. आ एह सब के बावजूद ऊ चील आ गिद्ध आ काग आ पतंग अबहियों भेड़न के फाड़त रहले आ ओह लोग पर दौड़त रहले आ खात रहले.
12. ऊ काग ओकरा से लड़त लड़त रहले आ ओकर सींग के नीचे गिरावे के कोशिश करत रहले बाकिर ओकरा पर ओह लोग के कवनो अधिकार ना रहे.

13-19 के बा। यहूदी लोग पर गैर-यहूदी लोग के अंतिम हमला (जहाँ 13-15 आ 16-18 डबलट हवे)।

.

14. हम तब तक देखनी जब तक कि उ आदमी जे चरवाहा के नाम लिख के भेड़ के मालिक के सोझा ले गईल, आके ओकर मदद कईलस अवुरी ओकरा के सब कुछ देखवलस।

.

.

.

.

.

20-27 के बा। पतित स्वर्गदूतन, चरवाहा आ धर्मत्यागी लोग के न्याय।

.

.

.

23. हम देखनी कि ऊ सब बान्हल रहले आ सब उनका सोझा खड़ा हो गइल रहले.
24. पहिले तारा पर न्याय भइल आ ऊ लोग दोषी पावल गइल आ दोषी पावल गइल आ ऊ लोग एगो खाई में डाल दिहल गइल जवन आग आ ज्वालामुखी से भरल आ आग के खंभा से भरल रहे.
25. आ ओह सत्तर गो चरवाहन के न्याय कइल गइल आ दोषी पावल गइल आ ऊ लोग ओह आगि के खाई में डाल दिहल गइल.
. अब ई खाई ओह घर के दाहिना ओर रहे।
27. आ हम ओह भेड़न के जरत आ ओकर हड्डी जरत देखनी।

28-38 के बा। नया यरूशलेम, बचल गैर-यहूदी लोग के धर्मांतरण, धर्मी लोग के पुनरुत्थान, मसीहा।

28. हम खड़ा होके देखनी कि जबले ऊ लोग ओह पुरान घर के तह ना कर देव. आ घर के सब खंभा के लेके चल गईले अवुरी घर के सभ बीम अवुरी आभूषण एक संगे ओकरा संगे तह हो गईले अवुरी ओकरा के लेके देश के दक्खिन में एक जगह प बिछा देले।

.

.

.
32. ऊ भेड़ सब सफेद रहे आ ओकर ऊन भरपूर आ साफ रहे।
.
.
35. ओह सब के आँख खुल गइल आ ऊ लोग बढ़िया के देखल आ ओह लोग में से केहू ना लउकल.
36. हम देखनी कि ऊ घर बड़हन आ चौड़ा आ बहुते भरल रहे.
37. हम देखनी कि एगो सफेद बैल पैदा भइल बा, जवना के सींग बड़हन बा आ मैदान के सगरी जानवर आ हवा के सगरी चिरई ओकरा से डेरात रहले आ हर समय ओकरा से निहोरा करत रहले.
38. हम तब तक देखनी जब तक कि उनकर सब पीढ़ी बदल गईल, आ सब उज्जर बैल ना बन गईल। आ ओह मेमना में से पहिला मेमना बनल आ ऊ मेमना एगो बड़हन जानवर बन गइल आ ओकरा माथा पर बड़हन करिया सींग हो गइल. आ भेड़न के मालिक ओकरा आ सब बैल पर खुश हो गइलन। 39. हम ओह लोग के बीच में सुत गइनी आ जाग गइनी आ सब कुछ देखनी।
40. ई उ दर्शन ह जवन हम सुतल घरी देखनी आ जाग के धर्म के प्रभु के आशीष देनी आ उनकर महिमा दिहनी।
41. तब हम बहुते रोवत रोवत रहनी आ हमार लोर तबले ना रुकल जबले हम ना सह पवनी. काहे कि सब कुछ आ जाई आ पूरा हो जाई आ आदमी के सगरी कर्म अपना क्रम में हमरा के देखावल गइल.
42. ओह रात हमरा पहिला सपना याद आ गइल आ ओकरा चलते हम रोवनी आ परेशान भइनी--काहे कि हम ऊ दर्शन देखले रहीं.'

अध्याय 91 के बा

1. 'आ अब, हमार बेटा मथुसेल, हमरा लगे आपन सब भाई के बोलाव, आ अपना महतारी के सब बेटा के हमरा लगे एकट्ठा कर; काहे कि वचन हमरा के बोलावत बा, आ हमरा पर आत्मा बहावल गइल बा कि हम तोहरा पर ऊ सब कुछ देखा सकीले जवन तोहरा पर हमेशा खातिर होखे वाला बा।'
2. मथुसेला जाके अपना सब भाई लोग के अपना लगे बोलवले अवुरी अपना रिश्तेदारन के जुटा लिहले।
3. ऊ सब धर्म के संतान से कहलन कि, 'हनोक के बेटा लोग, आपन बाप के सब बात सुनीं, आ हमरा मुँह के आवाज के सही सुनीं; काहे कि हम तोहनी के सलाह देत बानी आ तोहनी से कहत बानी, हे प्रियतम, "ईमानदारी से प्रेम करीं आ ओकरा में चलीं।
4. आ दोहरा दिल से सीधापन के नजदीक मत आईं, आ दोहरा दिल वाला लोग से संगत मत करीं, बलुक हे बेटा लोग, धार्मिकता से चलीं। आ ई तोहरा के बढ़िया राह पर ले जाई, आ धर्म तोहार साथी होई।
.
6. आ अधर्म के फेर से धरती पर समाप्त हो जाई, आ अधर्म आ हिंसा के सगरी काम, आ उल्लंघन दू तरह से हावी हो जाई.
7. आ जब पाप आ अधर्म आ निंदा, आ हर तरह के काम में हिंसा बढ़ी, आ धर्मत्याग आ अपराध आ अशुद्धि बढ़ जाई, त एह सब पर स्वर्ग से बड़हन सजा आई, आ पवित्र प्रभु धरती पर न्याय करे खातिर क्रोध आ सजा के साथे सामने अइहें।
8. ओह दिनन में हिंसा के जड़ से काट दिहल जाई, आ अधर्म के जड़ धोखा के साथे, आ स्वर्ग के नीचे से नाश हो जाई।
.
10. आ धर्मी लोग नींद से उठ जाई आ बुद्धि उठ के ओह लोग के दिहल जाई.
11. आ ओकरा बाद अधर्म के जड़ काट दिहल जाई आ पापी लोग के तलवार से नाश कर दिहल जाई. . . हर जगह निन्दा करे वाला लोग से कट जाई आ हिंसा के योजना बनावे वाला आ निंदा करे वाला तलवार से नाश हो जइहें।
12. आ ओकरा बाद एगो अउरी हफ्ता, आठवाँ हफ्ता, धर्म के होई, आ ओकरा के तलवार दिहल जाई ताकि अत्याचारी लोग पर धर्मी न्याय हो सके, आ पापी लोग के धर्मी लोग के हाथ में सौंपल जाई।
13. आ एकरा समापन पर ऊ लोग अपना धार्मिकता से घर हासिल करी आ महान राजा खातिर हमेशा खातिर महिमा में घर बनावल जाई.
14. आ सब मनुष्य सीधापन के राह के ओर देखत होई। आ ओकरा बाद नौवाँ हफ्ता में पूरा दुनिया के सामने धर्मी न्याय के प्रगट हो जाई, आ अभक्तन के सब काम पूरा धरती से गायब हो जाई, आ दुनिया के विनाश खातिर लिखल जाई।
15. एकरा बाद सातवाँ भाग में दसवाँ हफ्ता में ऊ बड़हन अनन्त न्याय होखी जवना में ऊ स्वर्गदूतन के बीच बदला लेबे वाला बाड़न.
16. आ पहिला आकाश चल जाई आ बीत जाई, आ एगो नया आकाश प्रकट होई, आ आकाश के सभ शक्ति सात गुना रोशनी दिही।
17. आ ओकरा बाद हमेशा खातिर अनगिनत कई हफ्ता होखी आ सभे भलाई आ धार्मिकता में रही आ पाप के अब हमेशा खातिर ना कहल जाई.
18. आ अब हम तोहनी के बतावत बानी, हमार बेटा लोग, आ तोहके धर्म के रास्ता आ हिंसा के रास्ता देखावत बानी। हँ, हम ओह लोग के फेर से देखा देब कि रउरा सभे के पता चल जाव कि का होई.
19. आ अब, हमार बेटा लोग, हमार बात सुनीं, आ धर्म के राह पर चलीं, आ हिंसा के राह पर मत चलीं; काहे कि अधर्म के राह पर चले वाला सब लोग हमेशा खातिर नाश हो जाई।'

अध्याय 92 के बा

1. हनोक के लिखल किताब--हनोक वाकई में बुद्धि के ई पूरा सिद्धांत लिखले बाड़न, जवना के प्रशंसा सब लोग करेला आ पूरा धरती के न्यायाधीश हमरा सब लइकन खातिर बा जे धरती पर रहे वाला बा। आ आवे वाली पीढ़ियन खातिर जे सीधापन आ शांति के पालन करी.
2. समय के चलते तोहार आत्मा परेशान मत होखे; काहे कि पवित्र आ महान परमेश् वर सभ चीजन खातिर दिन तय कइले बाड़न।
3. आ धर्मी नींद से उठ जाई, उठ के धर्म के राह पर चली, आ ओकर सब रास्ता आ बातचीत अनन्त भलाई आ कृपा में होई।
4. ऊ धर्मी लोग पर कृपा करीहें आ ओकरा के अनन्त सीधापन दीहें आ ओकरा के शक्ति दीहें जेहसे कि ऊ भलाई आ धार्मिकता से संपन्न हो सके. आ ऊ अनन्त रोशनी में चलत रहीहें.

5. आ पाप अन्हार में हमेशा खातिर नाश हो जाई आ ओह दिन से अब हमेशा खातिर ना लउकी।

अध्याय 93 के बा

1. आ ओकरा बाद हनोक दुनु दिहलन आ किताबन से बखान करे लगलन. आ हनोक कहले, 'धर्म के संतान आ दुनिया के चुनल लोग के बारे में, आ सीधापन के पौधा के बारे में, हम ई बात कहब, हँ, हम हनोक रउआ सभे के ई बात बताइब, हमार बेटा लोग।
2. जवन हमरा के स्वर्गीय दर्शन में प्रकट भइल रहे, आ जवना के हम पवित्र स्वर्गदूतन के वचन से जानत बानी, आ स्वर्गीय पाटी से सीखले बानी।'
3. आ हनोक किताबन से बखान करे लगले आ कहले कि, 'हम पहिला हफ्ता में सातवाँ दिन पैदा भइल रहनी, जबकि न्याय आ धार्मिकता अबहियों टिकल रहे।'
4. हमरा बाद दूसरा हफ्ता में बहुत बुराई पैदा होई, आ धोखा पैदा हो जाई। आ ओकरा में पहिला अंत होई। आ ओकरा में आदमी के उद्धार होई। आ एकरा खतम भइला के बाद अधर्म बढ़ी, आ पापी लोग खातिर एगो व्यवस्था बनावल जाई।
5. आ ओकरा बाद तीसरा हफ्ता के समापन में, आदमी के धर्मी न्याय के पौधा के रूप में चुनल जाई, आ ओकर संतान हमेशा खातिर धर्म के पौधा बन जाई।
6. आ ओकरा बाद चउथा हफ्ता में, एकरा समापन पर, पवित्र आ धर्मी लोग के दर्शन देखल जाई, आ हर पीढ़ी खातिर एगो कानून आ ओह लोग खातिर एगो घेराबंदी बनावल जाई।
7. आ ओकरा बाद पांचवा हफ्ता में, ओकर समापन पर, महिमा आ प्रभुत्व के घर हमेशा खातिर बन जाई।
8. आ ओकरा बाद छठवाँ हफ्ता में जे लोग ओकरा में रहेला ऊ सब आन्हर हो जाई आ सभे के दिल अभक्ति से बुद्धि के छोड़ दी. आ ओकरा में आदमी चढ़ जाई। आ ओकरा समापन पर प्रभु के घर आग से जरा दिहल जाई आ चुनल जड़ के पूरा जाति तितर-बितर हो जाई.
9. ओकरा बाद सातवाँ हफ्ता में एगो धर्मत्यागी पीढ़ी पैदा होई, आ ओकर काम बहुत होई, आ ओकर सब कर्म धर्मत्यागी होई।
10. आ एकरा अंत में चुनल जाई, धर्म के अनन्त पौधा के चुनल धर्मी लोग, अपना सब सृष्टि के बारे में सात गुना शिक्षा पावे खातिर।
11. काहे कि सब आदमी के संतान में से के बा जे बिना कवनो परेशानी के पवित्र के आवाज सुन सकेला? आ उनकर विचार के सोच सकेला? आ के बा जे स्वर्ग के सब काम के देख सकेला?
12. आ अइसन कइसे होखे के चाहीं जे स्वर्ग के देख सके, आ के अइसन होखे जे स्वर्ग के चीजन के समझ सके आ कवनो आत्मा भा आत्मा के देख सके आ ओकरा बारे में बता सके, भा चढ़ के ओह लोग के सगरी अंत देख सके आ ओकरा के सोच सके भा ओह लोग जइसन कर सके?
13. आ सब आदमी में से के बा जे जान सकत रहे कि धरती के चौड़ाई आ लंबाई का बा आ केकरा के ओह सब के नाप देखावल गइल बा?
.

अध्याय 94 के बा

1. अब हम तोहनी से कहत बानी कि हे हमार बेटा लोग, धार्मिकता से प्यार करीं आ ओकरा में चलीं। काहे कि धर्म के रास्ता स्वीकार करे लायक बा, लेकिन अधर्म के रास्ता अचानक नाश हो जाई अवुरी गायब हो जाई।
2. आ एक पीढ़ी के कुछ आदमी के हिंसा आ मौत के रास्ता खुल जाई, आ ऊ लोग अपना के ओह लोग से दूर राखी,आ ओह लोग के पीछे ना चली.
3. आ अब हम तोहनी के धर्मी लोग से कहत बानी कि बुराई के राह पर मत चलीं आ ना मौत के राह पर, आ ओह लोग के नजदीक मत आ जाईं, कहीं तोहनी के नाश ना हो जाईं।
4. बाकिर अपना खातिर धार्मिकता आ चुनल जीवन के खोजीं आ चुनीं, आ शांति के राह पर चलीं, आ तू लोग जिंदा होखब आ समृद्ध होखब।
5. आ हमरा बात के अपना दिल के विचार में मजबूती से पकड़ के राखीं, आ ओकरा के अपना दिल से मत मिटावे दीं; काहे कि हम जानत बानी कि पापी लोग आदमी के बुद्धि के बुराई से प्रलोभन करी, ताकि ओकरा खातिर कवनो जगह ना मिल सके, आ कवनो तरह के परीक्षा कम ना होखे।
6. हाय ओह लोग के जे अधर्म आ अत्याचार के निर्माण करेला, आ धोखा के नींव बनावेला। काहे कि ऊ लोग अचानक उखाड़ फेंकल जाई आ ओह लोग के कवनो शांति ना होखी.
7. पाप से आपन घर बनावे वाला लोग के हाय; काहे कि उनकर सब नींव से उखाड़ फेंकल जाई आ तलवार से गिर जाई। आ जे लोग न्याय में सोना चांदी हासिल करी, ऊ अचानक नाश हो जाई।
.
9. तू लोग निंदा आ अधर्म के काम कइले बाड़ऽ, आ वध के दिन खातिर, आ अन्हार के दिन आ बड़हन न्याय के दिन खातिर तइयार हो गइल बाड़ू।
.
11. आ ओह दिनन में तोहार धर्मी लोग पापी आ अभक्तन खातिर निंदा हो जाई।

अध्याय 95 के बा

1. काश हमार आँख पानी के बादल रहित, ताकि हम तोहरा पर रोईं, आ आपन लोर पानी के बादल नियर बहाईं, ताकि हम अपना दिल के परेशानी से आराम कर सकीले!
2. तोहरा के के निंदा अउर बुराई करे के अनुमति देले बा? आ एही तरे तोहनी पर न्याय हो जाई, पापी लोग।
3. हे धर्मी लोग, पापी लोग से मत डेराईं; काहेकि प्रभु फेर से ओह लोग के तोहनी के हाथ में सौंप दिहे, ताकि तू ओह लोग के आपन इच्छा के हिसाब से न्याय कर सकीले।
.
5. धिक्कार बा तोहनी के जे अपना पड़ोसी के बुराई के बदला देत बाड़ऽ; काहे कि तोहनी के प्रतिकार तोहनी के काम के हिसाब से दिहल जाई।
6. धिक्कार बा, झूठा गवाह, आ अन्याय के तौलत लोग के, काहे कि अचानक तू नाश हो जाईब।

7. हे पापी लोग, तोहनी के हाय, काहे कि तू लोग धर्मी लोग के सतावत बाड़ू। काहे कि अन्याय के चलते तोहनी के सौंप दिहल जाई अवुरी सतावल जाई, अवुरी एकर जुआ तोहनी प भारी होई।

अध्याय 96 के बा

1. हे धर्मी लोग, आशावादी रहीं; काहे कि अचानक पापी लोग रउरा सोझा नाश हो जइहें आ रउरा सभे के ओह लोग पर अपना इच्छा के हिसाब से प्रभुत्व हो जाई.
2. आ पापी लोग के संकट के दिन, तोहार लइका चील नियर चढ़ के उठ जइहें, आ गिद्ध से ऊँच तोहार घोंसला होई, आ तू चढ़ के धरती के दरार में घुस जाईब, आ चट्टान के दरार हमेशा खातिर अधर्मी लोग के सामने कोनी नियर, आ सायरन तोहरा चलते आह भरी-आ रोवे।
3. एह से हे कष्ट उठावे वाला लोग, मत डेराईं। काहे कि चंगाई तोहार हिस्सा होई, आ एगो तेज रोशनी तोहरा के रोशन करी, आ आराम के आवाज तू स्वर्ग से सुनबऽ।
4. धिक्कार बा, हे पापी लोग, काहे कि तोहनी के धन तोहनी के धर्मी लोग निहन देखावेला, लेकिन तोहनी के दिल तोहनी के पापी होखे के दोषी ठहरावेला, आ इ तथ्य तोहनी के खिलाफ गवाही होई, तोहनी के बुरा काम के यादगार खातिर।
.
.
7. धिक्कार बा तोहनी के जे अधर्म के काम करेनी, आ धोखा आ निंदा करेनी, ई तोहनी के खिलाफ बुराई के यादगार होई।
8. धिक्कार बा, हे पराक्रमी लोग, जे ताकत से धर्मी लोग के अत्याचार करेला। काहेकि तोहार विनाश के दिन आवे वाला बा। ओह दिनन में धर्मी लोग के बहुत आ बढ़िया दिन आई--तोहरा न्याय के दिन।

अध्याय 97 के बा

1. हे धर्मी लोग, विश्वास करीं कि पापी शर्म के बात हो जइहें, आ अधर्म के दिन नाश हो जइहें।
2. हे पापी लोग के ई जान लीं कि परमात्मा तोहनी के विनाश के बारे में सोचत बाड़े, आ स्वर्ग के दूत तोहनी के विनाश पर खुश बाड़े।
3. हे पापी लोग, तू लोग का करबऽ, आ ओह दिन में तू लोग कहाँ भागबऽ, जब तू लोग धर्मी लोग के प्रार्थना के आवाज सुनबऽ?
4. हँ, तू लोग ओह लोग जइसन रहब, जेकरा खिलाफ ई वचन गवाही होई कि "तू पापी लोग के साथी रहलू।"
5. आ ओह दिनन में धर्मी लोग के प्रार्थना प्रभु तक पहुँच जाई आ तोहनी खातिर तोहार न्याय के दिन आ जाई।
6. आ तोहार अधर्म के सब बात महान पवित्र के सामने पढ़ल जाई, आ तोहार चेहरा शर्म से ढंकल जाई, आ उ हर काम के नकार दिहे जवन अधर्म पर आधारित बा।
7. धिक्कार बा, हे पापी लोग, जे मध्य समुंदर आ सूखा जमीन पर रहेनी, जेकर याद तोहनी पर बुरा बा।
8. धिक्कार बा तोहनी के जे अधर्म में चाँदी आ सोना हासिल कर के कहत बानी कि "हमनी के धन से धनी हो गइल बानी जा आ सम्पत्ति बा; आ हमनी के मनचाहा सब कुछ हासिल कर लेले बानी जा।"
9. अब हमनी के उहे करीं जा जवन हमनी के इरादा रहे, काहे कि हमनी के चांदी बटोरले बानी जा, आ हमनी के घर में बहुत किसान बाड़े।" आ हमनी के अनाज के भंडार पानी निहन किनारा भरल बा।
10. हँ आ पानी नियर तोहार झूठ बह जाई; काहे कि तोहार धन ना टिकी, बलुक तोहरा से जल्दी से चढ़ जाई। काहे कि तू लोग अधर्म में सब कुछ हासिल कइले बाड़ऽ, आ तोहनी के एगो बड़हन अभिशाप के सौंप दिहल जाई।

अध्याय 98 के बा

1. अब हम तोहनी के, ज्ञानी आ मूर्ख लोग के कसम खात बानी, काहे कि तोहनी के धरती पर कई तरह के अनुभव होई।
2. काहे कि तू लोग मेहरारू से अधिका श्रृंगार पहिनबऽ, आ कुंवारी से अधिका रंगीन कपड़ा पहिनबऽ: राजसी आ भव्यता आ शक्ति में, चाँदी आ सोना आ बैंगनी रंग में, आ तेज आ भोजन में पानी नियर उगलल जाई।
3. एह से ओह लोग के सिद्धांत आ बुद्धि के कमी होखी आ ओकरा से ऊ लोग अपना संपत्ति के साथे नाश हो जाई. आ अपना पूरा महिमा आ तेज के साथे, आ लाज आ वध आ बहुत अभाव में, ओह लोग के आत्मा आग के भट्ठी में फेंकल जाई।
.
5. आ मेहरारू के बंजरपन ना दिहल गइल बा, बाकिर अपना हाथ के काम के चलते ऊ बिना संतान के मर जाले।
.
7. आ अपना आत्मा में मत सोचीं आ ना ही अपना मन में ई कहीं कि तू नइखऽ जानत आ ई ना देखत कि हर पाप के हर दिन परमात्मा के सामने स्वर्ग में दर्ज कइल जाला।
8. अब से रउरा जानत बानी कि रउरा सभे के जवन अत्याचार से अत्याचार करत बानी ऊ हर दिन रउरा सभे के न्याय के दिन तक लिखल बा.
.
10. अब तू लोग जान लीं कि तू लोग विनाश के दिन खातिर तइयार हो गइल बाड़ऽ, एह से हे पापी लोग, जिए के उम्मीद मत करीं, बाकिर तू लोग चल जाईं आ मर जाईं। काहे कि तू लोग फिरौती के कवनो बात नइखऽ जानत। काहे कि तू लोग बड़हन न्याय के दिन खातिर तइयार बाड़ऽ, जवन कि कष्ट आ अपना आत्मा खातिर बहुते लाज के दिन खातिर.
11. हे जिद्दी दिल के धिक्कार, बुराई करे वाला आ खून खाए वाला, तोहनी के खाए, पीये आ पेट भरे खातिर कहाँ से बढ़िया चीज बा? परमात्मा प्रभु धरती पर जवन भी नीमन चीजन के भरमार रखले बाड़न, ओकरा से; एह से तोहनी के कवनो शांति ना होई।
12. धिक्कार बा, तोहनी के जे अधर्म के काम से प्यार करेनी, तू लोग अपना के भलाई के उम्मीद काहे करत बाड़ू? जान लीं कि तोहनी के धर्मी लोग के हाथ में सौंपल जाईं आ ऊ लोग तोहनी के गरदन काट के मार दी आ तोहरा पर कवनो दया ना करी।
13. धिक्कार बा तोहनी के जे धर्मी लोग के कष्ट में आनन्दित बानी। काहे कि तोहनी खातिर कवनो कब्र ना खोदल जाई।
14. धिक्कार बा तोहनी के जे धर्मी लोग के बात के बेकार कर देत बाड़ऽ। काहेकि तोहनी के जीवन के कवनो उम्मीद ना होई।

15. धिक्कार बा तोहनी के जे झूठ आ भक्तिहीन बात लिखत बाड़S। काहे कि ऊ लोग आपन झूठ लिखेला कि आदमी ओकरा के सुन सके आ अपना पड़ोसी का साथे अभक्त व्यवहार कर सके.
16. एहसे ओह लोग के कवनो शांति ना होखी बाकिर अचानक मौत हो जाई.

अध्याय 99 के बा

1. धिक्कार बा तोहनी के जे अभक्ति करेला, आ झूठ बोले में महिमा करेला आ ओह लोग के बड़ाई करेला, तोहनी के नाश हो जाईं आ कवनो सुखद जीवन तोहार ना होई।
2. धिक्कार बा ऊ लोग जे सीधा-सीधा के वचन के विकृत करेला, आ अनन्त नियम के उल्लंघन करेला, आ अपना के ऊ पापी में बदल देला जवन ऊ ना रहे, ऊ लोग धरती पर गोड़ से दबा दिहल जाई।
3. हे धर्मी लोग, ओह दिनन में आपन प्रार्थना के यादगार बनावे खातिर तइयार हो जाईं, आ ओकरा के स्वर्गदूतन के सामने गवाही के रूप में रखीं, ताकि ऊ लोग पापी लोग के पाप के परमात्मा के सामने यादगार के रूप में रख सके।
4. ओह दिनन में राष्ट्रन के भड़कावल जाई, आ राष्ट्रन के परिवार विनाश के दिन उठ जाई।

.
6. आ पापी लोग, हम तोहनी के फेर से कसम खात बानी कि पाप अविराम खून बहावे के दिन खातिर तइयार बा।
7. आ जे लोग पत्थर, आ सोना चाँदी, लकड़ी आ पत्थर आ माटी के कब्र के मूर्ति के पूजा करेला, आ जे अशुद्ध आत्मा आ राक्षस आ हर तरह के मूर्ति के पूजा करेला, जवन ज्ञान के अनुसार ना होखे, ओकरा से कवनो तरह के मदद ना मिली।
8. आ ऊ लोग अपना दिल के मूर्खता से ईश्वरहीन हो जाई, आ ओह लोग के आँख ओह लोग के दिल के डर से आन्हर हो जाई आ सपना में दर्शन से.
9. एह सब के माध्यम से उ लोग अभक्त आ भयभीत हो जइहें। काहे कि ऊ लोग आपन सब काम झूठ में कर के पत्थर के पूजा करी, एहसे ऊ लोग पल भर में नाश हो जाई।
10. बाकिर ओह दिनन में ऊ सब धन्य बा जे बुद्धि के वचन के स्वीकार करेला आ ओकरा के समझेला आ परमात्मा के राह के पालन करेला आ उनकर धार्मिकता के राह पर चलेला आ अभक्तन का साथे अभक्त ना होखे. काहे कि उ लोग के उद्धार हो जाई।
11. धिक्कार बा तोहनी के जे अपना पड़ोसी के बुराई फइलावेला। काहे कि तोहनी के सीओल में मारल जाई।
12. धिक्कार बा तोहनी के जे धोखा आ झूठा नाप बनावेला, आ धरती पर कड़वाहट पैदा करे वाला लोग के। काहे कि एहसे ऊ लोग पूरा तरह से खतम हो जाई.
13. धिक्कार बा तोहनी के जे दोसरा के कड़ा मेहनत से आपन घर बनावेनी, आ ओकर सब निर्माण सामग्री पाप के ईंट आ पत्थर ह। हम तोहरा से कहत बानी कि तोहनी के कवनो शांति ना होई।
14. धिक्कार बा ओह लोग पर जे अपना पुरखन के नाप आ अनन्त विरासत के नकार देला आ जेकर आत्मा मूर्ति के पीछे चलेला। काहे कि ओह लोग के कवनो आराम ना होखी.
15. हाय ओह लोग पर जे अधर्म के काम करेला आ अत्याचार के मदद करेला, आ बड़का न्याय के दिन तक अपना पड़ोसी के मार देला।
. आ सब पवित्र आ धर्मी लोग तोहार पाप के याद करी।

अध्याय 100 के बा

1. आ ओह दिनन में एक जगह बाप लोग के बेटा के साथे मारल जाई, आ भाई लोग एक दूसरा के मौत में गिर जाई, जब तक कि धार के बहाव ना होखे।
2. काहे कि आदमी अपना बेटा आ बेटा के बेटा के मारे से आपन हाथ ना रोकी आ पापी अपना इज्जतदार भाई से हाथ ना रोकी, भोर से सूर्यास्त ले एक दोसरा के हत्या करीहें.
3. आ घोड़ा पापी लोग के खून में छाती तक चल जाई, आ रथ अपना ऊँचाई तक डूब जाई।
4. ओह दिनन में स्वर्गदूत गुप्त जगहन पर उतर जइहें आ पाप के गिरावे वाला सब लोग के एके जगहा बटोर दीहें आ ओह न्याय के दिन परमात्मा उठ जइहें, पापी लोग के बीच बड़हन न्याय करे खातिर।
5. आ सभ धर्मी आ पवित्र लोग पर ऊ पवित्र स्वर्गदूतन के बीच से रक्षक नियुक्त करीहें, जे ओह लोग के आँख के सेब नियर रखसु, जबले ऊ सगरी दुष्टता आ सगरी पाप के अंत ना कर दीहें, आ भले धर्मी लोग लमहर नींद सुतत होखे बाकिर ओह लोग के कवनो डर ना होखे.

.
7. धिक्कार बा, पापी लोग, प्रबल पीड़ा के दिन, तू जे धर्मी लोग के दुखी कर के आग से जरा देनी।

.

.

.
11. आ ऊ हर बादल, धुंध, ओस आ बरखा के रउरा खिलाफ गवाही देबे खातिर बोलावसु. काहे कि ऊ सब तोहरा पर उतरे से रोकल जाई आ ऊ लोग तोहरा पाप के बारे में याद करी.
12. अब बरखा के उपहार दीं कि जब ऊ तोहरा से सोना चाँदी मिल गइल बा त ओकरा के तोहरा पर उतरे से ना रोकल जा सके आ ना ही ओस.

.

अध्याय 101 के बा

1. हे स्वर्ग के संतान, स्वर्ग के पालन करीं आ परमात्मा के हर काम के देखत रहीं आ उनुका से डेराईं आ उनुका सोझा कवनो बुराई मत करीं.
2. अगर ऊ स्वर्ग के खिड़की बंद कर देत बाड़न, आ रउरा चलते बरखा आ ओस के धरती पर उतरे से रोकत बाड़न त रउरा का करब?
3. आ अगर ऊ रउरा करनी का चलते रउरा पर आपन क्रोध भेजत बाड़न त रउरा उनुका से निहोरा ना कर सकीं; काहे कि तू उनकर धार्मिकता के खिलाफ घमंडी आ अपमानजनक बात कहनी, एहसे तोहनी के कवनो शांति ना होई।

4. आ नाव के नाविक लोग के ना लउकत बा कि कइसे ओह लोग के जहाज लहर से इधर-उधर उछलत बा आ हवा से हिलत बा आ बहुते परेशानी में बा?

.

6. का पूरा समुंदर आ ओकर सगरी पानी आ ओकर सगरी गति परमात्मा के काम ना ह आ का ऊ ओकरा काम के सीमा नइखन तय कइले आ ओकरा के पूरा बालू से सीमित कइले बाड़न?
7. आ उनकर डांटला पर ऊ डेरा जाला आ सूख जाला आ ओकर सगरी मछरी आ ओकरा में मौजूद सब कुछ मर जाला. लेकिन धरती पर पापी लोग उनकरा से ना डेराईं।
8. का उ आकाश आ धरती आ ओकरा में मौजूद सब कुछ नइखन बनवले? जे धरती आ समुंदर में चले वाला हर चीज के समझ आ बुद्धि देले बा।
9. का जहाज के नाविक लोग के समुंदर से डर ना लागेला? तबो पापी लोग परमात्मा से ना डेराला।

अध्याय 102 के बा

1. ओह दिनन में जब ऊ तोहनी पर एगो भयंकर आग ले आइल बाड़न, तोहनी कहाँ से भागबऽ आ कहाँ से मुक्ति मिलबऽ? आ जब ऊ रउरा खिलाफ आपन वचन के शुरुआत करीहें त का रउरा डेराब आ डर ना लागब?
2. आ सभे ज्योतिषी लोग बहुत डर से डेरा जाई, आ पूरा धरती डेरा जाई आ काँप जाई आ घबरा जाई।
3. आ सब स्वर्गदूत आपन आज्ञा के पालन करीहें आ महान महिमा के सामने से लुकाए के कोशिश करीहें आ धरती के लइका काँप जइहें आ काँप जइहें। आ तोहनी पापी लोग हमेशा खातिर शापित होखब, आ तोहनी के कवनो शांति ना होई।
4. हे धर्मी लोग के आत्मा, तू लोग डेरा मत, आ धार्मिकता में मरल लोग आशा में रहऽ।
5. आ दुखी मत होखऽ अगर तोहार आत्मा दुख में पाताल में उतर गइल बा, आ तोहार जीवन में तोहार शरीर तोहरा भलाई के हिसाब से ना चलल, बाकिर पापी लोग के न्याय के दिन के इंतजार करीं, आ गारी आ सजा के दिन के इंतजार करीं।

.

7. देखऽ, जइसे हमनी के, ओइसहीं ऊ लोग दुख आ अन्हार में मर जाला, आ हमनी से बेसी ओह लोग के का बा? अब से हमनी के बराबर बानी जा।
8. आ उ लोग के का मिली आ हमेशा खातिर का देखाई दिही? देखऽ, ऊ लोग भी मर गइल बा, आ अब से हमेशा खातिर कवनो रोशनी ना लउकी।"

.

10. का रउवां धर्मी लोग के देखले बानी कि उनकर अंत कइसे हो जाला कि उनकर मौत तक कवनो तरह के हिंसा ना मिलेला?
11. "तबो ऊ लोग नाश हो गइल आ अइसन हो गइल जइसे ऊ लोग ना भइल होखे आ ओह लोग के आत्मा संकट में सीओल में उतर गइल."

अध्याय 103 के बा

1. अब एह से हम तोहनी के, धर्मात्मा लोग के, प्रभु के महान आ सम्मानित आ पराक्रमी के महिमा के कसम खात बानी आ उनकर महानता के कसम से हम तोहनी के कसम खात बानी।
2. हम एगो रहस्य जानत बानी, आ स्वर्ग के पाटी पढ़ले बानी, आ पवित्र किताबन के देखले बानी, आ ओहमें लिखल आ ओकरा बारे में अंकित मिलल बा।
3. कि ओह लोग खातिर सगरी भलाई आ आनन्द आ महिमा तइयार कइल जाव, आ धार्मिकता में मरल लोग के आत्मा खातिर लिखल जाव, आ ऊ कई तरह के भलाई तोहरा के तोहरा मेहनत के बदला में दिहल जाई आ तोहार भाग्य जिए वाला लोग के भाग्य से भरपूर बा.
4. आ तोहनी के जे धार्मिकता में मरल आत्मा जिंदा रही आ आनन्दित होई, आ ओह लोग के आत्मा ना नाश होई, ना ही ओह लोग के याद महान भगवान के सामने से दुनिया के सब पीढ़ी तक, एह से अब ओह लोग के अपमान से मत डेराईं।

.

6. आ कइसे ऊ लोग समृद्धि आ धन में मर गइल बा आ अपना जिनिगी में कष्ट भा हत्या ना देखले बा. आ ऊ लोग इज्जत में मर गइल बा, आ ओह लोग पर ओह लोग के जिनिगी में न्याय नइखे भइल."
7. जान लीं कि ओह लोग के आत्मा के सीओल में उतरावल जाई आ ऊ लोग अपना बड़हन संकट में दयनीय हो जाई.
8. आ अन्हार आ जंजीर आ जरत लौ में जहाँ कड़ा न्याय होखे, तोहार आत्मा घुस जाई। आ महान न्याय दुनिया के सब पीढ़ी खातिर होई। हाय तोहरा पर, काहे कि तोहनी के कवनो शांति ना होई।

.

10. आ हमनी के नाश हो गइल बानी जा आ एक शब्द से भी हमनी के मदद करे वाला केहू ना मिलल बा: हमनी के यातना दिहल गइल बा आ नष्ट हो गइल बानी जा, आ दिन-प्रतिदिन जीवन देखे के उम्मीद ना रहे।
11. हमनी के माथा बने के उम्मीद रहे आ पूंछ बन गइल बानी जा: हमनी के मेहनत से मेहनत कइले बानी जा आ मेहनत में कवनो संतुष्टि ना भइल; आ हमनी के पापी आ अधर्मी लोग के भोजन बन गइल बानी जा, आ ऊ लोग हमनी पर आपन जुआ भारी डाल दिहले बा।
12. हमनी पर उ लोग के प्रभुत्व रहल बा जे हमनी से नफरत करत रहे आ हमनी के मारत रहे। आ जे हमनी से नफरत करत रहे ओकरा से हमनी के गरदन झुका देले बानी जा, लेकिन उ लोग हमनी प दया ना कईले।
13. हमनी के ओह लोग से दूर होखे के इच्छा रहे ताकि हमनी के भाग सकीले आ आराम कर सकीले, लेकिन कवनो जगह ना मिलल जहाँ हमनी के भाग के ओह लोग से सुरक्षित रह सकीले।
14. आ हमनी के संकट में शासकन से शिकायत कइल जाला, आ हमनी के खाए वाला लोग के खिलाफ चिल्लात रहेला, बाकिर ऊ लोग हमनी के पुकार के ध्यान ना दिहल आ हमनी के आवाज ना सुनल.
15. आ ऊ लोग ओह लोग के मदद कइल जे हमनी के लूटत रहे आ हमनी के खात रहे आ जे हमनी के कम बनावत रहे। आ ऊ लोग आपन अत्याचार छिपा लिहल आ हमनी के खा के तितर-

बितर करे वाला आ हत्या करे वाला लोग के जुआ हमनी से ना हटा दिहल आ आपन हत्या छिपा दिहल आ याद ना कइल कि ऊ लोग हमनी का खिलाफ हाथ उठवले बा.

अध्याय 104 के बा

1. हम तोहनी के कसम खात बानी कि स्वर्ग में स्वर्गदूत तोहरा के महान के महिमा के सामने भलाई खातिर याद करेले, आ तोहनी के नाम महान के महिमा के सामने लिखल बा।
2. आशावादी होखे के चाहीं; काहे कि पहिले तोहनी के बेमारी आ कष्ट के चलते शर्मिंदा हो गइल रहे। बाकिर अब तूँ स्वर्ग के रोशनी नियर चमकबऽ, तूँ चमकबऽ आ तोहके देखल जाईबऽ आ स्वर्ग के दरवाजा तोहनी खातिर खुल जाई।
3. आ अपना चिल्लाहट में, न्याय के पुकार करीं, त ऊ तोहरा के प्रकट हो जाई। काहेकि तोहार पूरा कष्ट के सामना शासक आ तोहरा के लूट के मदद करे वाला सब लोग पर होई।
4. आशावादी रहीं, आ आपन आशा मत फेंकीं काहे कि तोहनी के स्वर्ग के दूत निहन बहुत खुशी होई।
5. रउरा का करे के बाध्यता होखब? बड़का न्याय के दिन तोहनी के लुकाए के ना पड़ी आ तोहनी के पापी के रूप में ना मिलबऽ आ अनन्त न्याय दुनिया के सब पीढ़ी तक तोहनी से दूर रही।
6. अब हे धर्मी लोग, जब पापी लोग के अपना रास्ता में मजबूत आ समृद्ध होखत देखब त मत डेराईं, ओह लोग के साथी मत बनीं, बलुक ओह लोग के हिंसा से दूर रहीं। काहे कि तू लोग स्वर्ग के सेना के साथी बनबऽ।
7. आ, भले ही रउआ पापी लोग कहत बानी कि "हमनी के सब पाप के खोजल ना जाई आ लिखल ना जाई," फिर भी उ लोग रोज रउआ सभे के पाप के लिख के रखिहें।
8. अब हम तोहनी के देखावत बानी कि दिन-रात रोशनी आ अन्हार तोहरा सब पाप के देखत बा।
9. अपना मन में अभक्त मत बनीं, झूठ मत बोलीं आ सीधा-सीधा के बात में बदलाव मत करीं, ना ही पवित्र महान के बात झूठ बोले के आरोप मत लगाईं, ना ही आपन मूर्ति के हिसाब मत दीं। काहे कि तोहार सब झूठ आ सब अभक्ति धर्म से ना बलुक बड़हन पाप में निकलत बा।
10. अब हम ई रहस्य जानत बानी कि पापी लोग धर्म के बातन में कई तरह से बदलाव आ विकृत कर दीहें आ बुरा बात कहसु आ झूठ बोलसु आ बड़हन धोखा करीहें आ अपना बातन के बारे में किताब लिखिहें.
11. लेकिन जब उ लोग हमार सब बात के अपना भाषा में सही तरीका से लिख देले अवुरी हमरा बात में कवनो बदलाव चाहे कम ना करेले, बालुक उ सभ बात के सही तरीका से लिख देले--जवन हम पहिले ओ लोग के बारे में गवाही देले रहनी।
12. तब, हम एगो अउरी रहस्य जानत बानी कि धर्मी आ ज्ञानी लोग के किताब दिहल जाई कि ऊ लोग आनन्द आ सीधापन आ बहुते बुद्धि के कारण बन सके.
.

अध्याय 105 के बा

1. ओह दिनन में प्रभु ओह लोग से कहलन कि ऊ लोग धरती के लइकन के बोलावे आ ओह लोग के बुद्धि के बारे में गवाही दे देव. काहे कि तू लोग ओह लोग के मार्गदर्शक हईं आ पूरा धरती पर एगो बदला हउअ।
2. काहे कि हम आ हमार बेटा ओह लोग के जीवन में सीधापन के राह पर हमेशा खातिर एकजुट रहब; आ तोहनी के शांति मिली, हे सीधा-साधा के लइका, आनन्दित होखऽ। आमीन के बा।

अध्याय 106 के बा

1. कुछ दिन बाद हमार बेटा मथुसेला अपना बेटा लामेक खातिर एगो मेहरारू ले लिहलस आ ओकरा से गर्भवती होके एगो बेटा भइल।
2. उनकर देह बर्फ नियर उज्जर आ गुलाब के फूल नियर लाल रहे आ माथा के बाल आ लमहर ताला ऊन नियर उज्जर रहे आ आँख सुन्दर रहे। आ जब ऊ आँख खोललन त सूरज नियर पूरा घर के रोशनी कर दिहलन आ पूरा घर बहुते उज्ज्वल हो गइल.
3. तब ऊ दाई के हाथ में उठ के आपन मुँह खोल के धर्म के प्रभु से बातचीत कइलन।
4. ओकर बाप लामेक ओकरा से डेरा के भाग गइल आ अपना बाप मथुसेला के लगे चल गइल।
5. ऊ ओकरा से कहलन कि हम एगो पराया बेटा पैदा कइले बानी, जवन आदमी से अलग आ आदमी से अलग बा आ स्वर्ग के भगवान के बेटा से मिलत जुलत बा; आ ओकर स्वभाव अलग बा आ ऊ हमनी जइसन नइखे आ ओकर आँख सूरज के किरण नियर बा आ ओकर चेहरा गौरवशाली बा.
6. आ हमरा लागत बा कि ऊ हमरा से ना बलुक स्वर्गदूतन से निकलल बा आ हमरा डर बा कि ओकरा जमाना में धरती पर कवनो चमत्कार ना हो सके.
7. अब हे बाबूजी, हम तोहरा से निहोरा करे आ निहोरा करे आइल बानी कि तू हमनी के बाप हनोक के लगे जाके ओकरा से सच्चाई सीख लीं, काहे कि ओकर निवास स्थान स्वर्गदूतन के बीच में बा.'
8. जब मथुसेल अपना बेटा के बात सुनलस त उ हमरा लगे धरती के छोर तक पहुंच गईले। काहे कि ऊ सुनले रहले कि हम ओहिजा बानी आ ऊ जोर से चिल्लात रहले आ हम उनकर आवाज सुन के हम उनका लगे आ गइनी. आ 1 ओकरा से कहलस, 'देखऽ, हम इहाँ बानी, हमार बेटा, तू हमरा लगे काहे आइल बाड़ू?'
9. आ ऊ जवाब दिहलन आ कहलन कि हम एगो बड़हन चिंता के कारण तोहरा लगे आइल बानी आ एगो परेशान करे वाला दर्शन के चलते हम नजदीक आ गइल बानी.
10. And now, my father, hear me: unto Lamech my son there hath been born a son, the like of whom there is none, and his nature is not like man's nature, and the colour of his body is whiter than snow and redder than the bloom of a rose, and the hair of his head is whiter than white wool, and his eyes are like the rays of the sun, and he opened his eyes and thereupon पूरा घर के रोशनी दे दिहलस।
11. ऊ दाई के हाथ में उठ के आपन मुँह खोल के स्वर्ग के प्रभु के आशीष दिहलन।
. आ देखऽ हम तोहरा लगे आइल बानी कि तू हमरा के सच्चाई बता सकीले।'

13. आ हम हनोक जवाब देनी आ ओकरा से कहनी कि प्रभु धरती पर एगो नया काम करीहें आ ई हम एगो दर्शन में देख चुकल बानी आ तोहरा के बता दीं कि हमरा पिता यारेद के पीढ़ी में स्वर्ग के कुछ स्वर्गदूत प्रभु के वचन के उल्लंघन कइले रहले.
14. आ देखऽ ऊ लोग पाप करेला आ कानून के उल्लंघन करेला आ मेहरारूवन से मिल के पाप करेला आ ओहमें से कुछ लोग के बियाह क के ओह लोग से संतान पैदा कइले बा.
15. आ ऊ लोग धरती पर आत्मा के हिसाब से ना, बलुक मांस के हिसाब से दिग्गज पैदा करीहें आ धरती पर बड़हन सजा होखी आ धरती सगरी अशुद्धि से शुद्ध हो जाई.
16. हँ, पूरा धरती पर बड़हन विनाश होखी आ एक साल ले बाढ़ आ बड़हन विनाश होखी.

.

18. अब अपना बेटा लामेक के बता दीं कि जे पैदा भइल बा ऊ साँचहू ओकर बेटा ह आ ओकर नाम नूह राखऽ. काहे कि ऊ तोहनी पर छोड़ दिहल जाई आ ओकरा आ ओकर बेटा ओह विनाश से बचावल जाई जवन ओकरा जमाना में धरती पर खतम होखे वाला सगरी पाप आ अधर्म का चलते धरती पर आवे वाला विनाश से बचावल जाई.
19. ओकरा बाद धरती पर पहिले जवन अधर्म के समाप्त भइल रहे ओकरा से भी अधिका अधर्म होई। काहे कि हम पवित्र लोग के रहस्य जानत बानी। काहे कि ऊ, प्रभु, हमरा के देखा दिहले बाड़न आ हमरा के सूचित कइले बाड़न आ हम ओह लोग के स्वर्गीय पाटी में पढ़ले बानी.

अध्याय 107 के बा

1. हम ओह लोग पर लिखल देखनी कि पीढ़ी दर पीढ़ी अपराध करी, जबले धर्म के पीढ़ी ना पैदा हो जाई आ अपराध नाश ना हो जाई आ पाप धरती से ना खतम हो जाई आ ओकरा पर हर तरह के भलाई ना हो जाई.
2. आ अब हे बेटा, जाके अपना बेटा लमेक के बता दीं कि ई बेटा जवन पैदा भइल बा ऊ साँचहू ओकर बेटा ह आ ई कवनो झूठ ना ह.'
3. जब मथुसेला अपना बाप हनोक के बात सुनले--काहेकि ऊ ओकरा के सब कुछ गुप्त रूप से देखा दिहले रहले--त ऊ वापस आके ओकरा के देखा के ओह बेटा के नाम नूह रखले। काहे कि ऊ पूरा विनाश के बाद धरती के दिलासा दिही।

अध्याय 108 के बा

1. एगो अउरी किताब जवन हनोक अपना बेटा मथुसेला खातिर आ उनकर बाद आवे वाला लोग खातिर लिखले बाड़न आ अंतिम समय में व्यवस्था के पालन करे वाला लोग खातिर।
2. तू जे भलाई कइले बाड़ऽ, तबले ओह दिनन के इंतजार करब जबले बुराई करे वाला लोग के अंत ना हो जाव. आ अपराधी लोग के पराक्रम के अंत हो जाला।
. काहे कि उहाँ कवनो धरती नइखे।
4. आ हम उहाँ कुछ अदृश्य बादल जइसन देखनी। काहे कि एकर गहराई के कारण हम ओने ना देख पवनी आ आग के लौ चमकत-दमकत देखनी आ चमकत पहाड़ जइसन चीज इधर-उधर चक्कर लगावत आ झाड़ू लगावत देखनी।
5. हम अपना साथे मौजूद एगो पवित्र स्वर्गदूत से पूछनी कि ई चमकत चीज का ह? काहे कि ई स्वर्ग ना ह बलुक खाली धधकत आग के लौ ह, आ रोवे-रोवे आ रोअल आ विलाप आ प्रबल पीड़ा के आवाज ह।'
6. आ ऊ हमरा से कहले, 'ई जगह जवन तू देखत बाड़ू--इहाँ पापी आ निंदा करे वाला लोग के, आ बुराई करे वाला लोग के आ जे प्रभु भविष्यवक्ता लोग के मुँह से कहल हर बात के विकृत करे वाला लोग के आत्मा फेंकल गइल बा।
. आ दुष्ट लोग के शर्मिंदा करे वाला लोग के बारे में।
8. उ लोग भगवान से प्रेम करेले अवुरी ना सोना चांदी अवुरी दुनिया में मौजूद कवनो नीमन चीज़ से प्रेम कईले, बालुक अपना शरीर के यातना देवे खाती सौंप देले।

.

10. आ ओह लोग के किस्मत में लिखल सगरी आशीर्वाद हम किताबन में बतवले बानी. आ ऊ ओह लोग के आपन इनाम देले बाड़न काहे कि ऊ लोग अइसन पावल गइल बा जे दुनिया में अपना जिनिगी से अधिका स्वर्ग से प्यार करत बा आ भले ऊ लोग दुष्ट आदमी के गोड़ से दबा गइल होखे आ ओह लोग से गारी आ गारी-गलौज के अनुभव कइल आ शर्मिंदा हो गइल बाकिर तबहियों ऊ लोग हमरा के आशीष दिहल.
11. आ अब हम ओह भलाई के आत्मा के बोलावब जे प्रकाश के पीढ़ी के हवें आ हम ओह लोग के बदल देब जे अन्हार में पैदा भइल रहले, जेकरा शरीर में अइसन सम्मान ना दिहल गइल रहे जइसन कि ओह लोग के वफादारी के हकदार रहे.
12. आ हम ओह लोग के चमकत रोशनी में ले अइब जे हमरा पवित्र नाम से प्रेम कइले बा आ हम हर केहू के अपना सम्मान के सिंहासन पर बइठा देब।
13. आ ऊ लोग अनगिनत समय खातिर चमकत रही। काहेकि धार्मिकता परमेश्वर के न्याय ह। काहे कि विश्वासी लोग के उ सीधा रास्ता के निवास में विश्वास दिहे।
14. ऊ लोग अन्हार में पैदा भइल लोग के अन्हार में ले जाइल देखसु जबकि धर्मी लोग चमकत रही.
15. आ पापी लोग जोर से चिल्ला के ओह लोग के चमकत देखसु आ ऊ लोग साँचहू ओहिजा जइहें जहाँ ओह लोग खातिर दिन आ मौसम तय कइल गइल बा.'